50 सफलतम व्यक्तियों के सक्सेस सीक्रेट्स

महेश दत्त शर्मा

सफलतम 50 व्यक्तियों

के

Success सीक्रेट्स

महेश दत्त शर्मा

प्रभात प्रकाशन
ISO 9001:2015 प्रकाशक

अनुक्रम

अपनी बात
ग्रांट कार्डोन
स्टीफन कोवे
ओपरा विन्फ्रे
नेपोलियन हिल
बिल गेट्स
दलाई लामा
कैलाश सत्यार्थी
रतन टाटा
टोनी रॉबिंस
वारेन बफेट
महात्मा गांधी
जैक मा
एलन मस्क
नरेंद्र मोदी
सुंदर पिचाई
स्वामी विवेकानंद
जोसेफ मर्फी
जे.आर.डी. टाटा
जेफ बेजोस
स्टीफन हॉकिंग
बेंजामिन फ्रेंकलिन
अब्राहम लिंकन
अल्फ्रेड नोबेल
ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
बराक ओबामा
बॉब प्रॉक्टर
डोनाल्ड ट्रंप
एरिक थॉमस
हेनरी फोर्ड
जॉर्डन बेलफोर्ट
लेस ब्राउन
मार्क जुकरबर्ग

मार्टिन लूथर किंग जूनियर
नेल्सन मंडेला
जिग जिगलर
मलाला यूसुफजई
मार्क क्यूबन
निक वुजिसिक
रॉबर्ट कियोसाकी
साइमन सिनक
रिचर्ड ब्रैनसन
वेन डायर
रे क्रोक
मिशेल ओबामा
अर्ल नाइटिंगेल
जिम रॉन
गैरी वायनेरचुक
क्रिस गार्डनर
स्टीव जॉब्स
माइकल फेल्प्स

अपनी बात

मानव अपनी उत्पत्ति से लेकर आज तक जिस एक चीज की खोज में है, वह है—सफलता। बहुत सारे लोग सफलता की खोज पूरी कर भी लेते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं, जो अपनी खोज के बीच रास्ते में ही हताश होकर शांत बैठ जाते हैं। दरअसल, सफलता की खोज एक अनवरत अभ्यास है। इसकी खोज-यात्रा अनंत है। इसमें कोई भी विराम नहीं है, क्योंकि कोई भी सफलता अंतिम नहीं होती। जो व्यक्ति कहते हैं कि उन्होंने सफलता पा ली, असल में वह एक पड़ाव भर होता है; फिर कोई दूसरा आदमी आता है और उनकी यात्रा को आगे बढ़ाता है। सफलता की खोज के रास्ते भी अनेक हैं। कोई जोखिम लेकर सफलता पाता है तो कोई हँसी-खुशी; कोई कष्ट पाकर सफलता पाता है तो कोई पुरस्कार पाकर।

सफलता के सच्चे खोजियों में एक बात अवश्य समान होती है कि वे सफलता की अपनी मंजिल तक पहुँचने का मार्ग स्वयं निर्मित करते हैं और जब तक मंजिल तक पहुँच नहीं जाते, दुनिया की परवाह किए बगैर निरंतर, अनवरत उस ओर बढ़ते रहते हैं; क्योंकि उन्हें अपने इरादों पर यकीन होता है। उनका शुरुआती मार्ग अकसर काँटों भरा होता है। अकसर उन्हें परिवार से, दुनिया से विरोध का सामना करना पड़ता है। सचमुच सफलता का मार्ग अनेक अवरोधकों से भरा और जोखिमपूर्ण होता है और सफलता के मार्ग में जोखिम न उठाना ही सबसे बड़ा जोखिम होता है।

लोग तब तक आपके सपनों का मजाक उड़ाते हैं, जब तक कि आप सपने को हकीकत में नहीं बदल देते हैं और जब आप सफल हो जाते हैं तो आपका मजाक उड़ानेवाले लोग भी आपकी प्रशंसा में कसीदे पढ़ने लगते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में चार दर्जन से अधिक दुनिया भर की महान् हस्तियों के निजी जीवन के अनुभूत सफलता के दस-दस नियम दिए गए हैं। ये लगभग सभी वे लोग हैं, जिन्होंने अपना जीवन शून्य से शुरू किया और सफलता के शिखर पर पहुँचे। कहने व सुनने में यह बात जितनी सरल लगती है, आचरण में उतारनी उतनी ही मुश्किल। सफलता के आज के ये जीवंत चरित्र निश्चित ही हमारे प्रेरणा-स्रोत हैं। इनके जीवन-संघर्ष से प्रेरणा पाकर हम निश्चित ही अपनी सफलता का निजी मार्ग रेखांकित और सुनिश्चित कर सकते हैं।

एक भावपूर्ण चरम प्रेरक पुस्तक!

—संपादक

ग्रांट कार्डोन

ग्रांट कार्डोन एक प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक, विक्रय प्रशिक्षक एवं विशेषज्ञ, उद्यमी, रियल एस्टेट निवेशक और अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रेरक वक्ता हैं तथा इनमें से प्रत्येक मामले में वे काफी सफल हैं। कार्डोन का जन्म 21 मार्च, 1958 को लुसियाना के लेक चार्ल्स में हुआ। कार्डोन 'न्यूयॉर्क टाइम्स' के सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखक हैं और 'द कार्डोन जोन' के रेडियो शो होस्ट हैं। ग्रांट को टेलीविजन शृंखला 'टर्नअराउंड किंग' (2011) के लिए भी जाना जाता है। ग्रांट एक लेखक भी हैं। उन्होंने सात पुस्तकें लिखी हैं—'सेल टू सर्वाइव', 'द क्लोजर सर्वाइवल गाइड', 'इफ यू आर नॉट फर्स्ट यू आर लास्ट', 'द 10 एक्स रूल', 'सेल ऑर बी सोल्ड', 'द मिलियनेयर बुकलेट' और 'बी ओब्सेड ऑर बी एवरेज'। वे कार्डोन एंटरप्राइजेज, द कार्डोन ग्रुप एवं कार्डोन एक्यूजिशन जैसे कई व्यवसायों के मालिक हैं।

ग्रांट कार्डोन के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सफलता पाना आपका कर्तव्य

इस धरती पर आप सफलता पाने के लिए आए हैं। जो भी काम करें, उसमें सफलता पाना आपका कर्तव्य है। अपने उपहारों और प्रतिभाओं को दरकिनार करना एकदम अनैतिक और गलत है। उन्हें बरबाद न करें। यह आपका कर्तव्य है कि आप अपने जीवन को उन चीजों के लिए समर्पित करें, जिनसे आप प्यार करते हैं और जो आपको खुश करती हैं। सफलता पाने का यही सबसे अच्छा तरीका है। क्या आपको अभी तक पता नहीं चला है कि आप किस काम से खुश होते हैं?

नियम 2. सौदों को प्राथमिकता दें

यदि आप व्यवसाय में हैं तो सौदे करना और धन का आदान-प्रदान करना आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए। ज्यादातर मामलों में, इसका मतलब नकदी के लिए अपने उत्पाद या सेवा को बेचना है। इन सौदों को अपने जीवन और कॅरियर में प्राथमिकता दें। इसका मतलब यह नहीं है कि यह सबसे महत्त्वपूर्ण बात है; लेकिन बहुत से लोग व्यवसाय के इस क्षेत्र में सामान बेचने और प्राप्त करने के विचार को महत्त्व नहीं देते हैं। यह महत्त्वपूर्ण है, इसलिए इसे आदत बनाएँ।

नियम 3. आप कोई पेड़ नहीं हैं

अपने शरीर का खयाल रखें। आपके रहने की यही एकमात्र जगह है। काम शुरू करने से पहले पूरी दृढ़ता से अपने आप को तैयार करें। अनुशासन लक्ष्यों व सिद्धि के बीच का सेतु है। आप रातोरात अपना भाग्य नहीं बदल सकते, लेकिन आप रातोरात अपनी नीति बदल सकते हैं। चीजें अगर आपके पक्ष की न हो रही हों तो बदल डालें। आप कोई पेड़ नहीं हैं।

नियम 4. भटकानेवालों की उपेक्षा करें

वे सभी लोग, जो आपको कहते हैं कि 'आप ऐसा नहीं कर सकते हैं' को अपने जीवन से दूर करने की आवश्यकता है। आपको स्वयं को उन लोगों से घेरने की जरूरत है, जो आपको बताते हैं कि आप अपने सपने का पीछा कर सकते हैं और आप उन कामों को कर सकते हैं, जिन्हें आप करना चाहते हैं।

नियम 5. नकारात्मक न हों

हर चीज को लेकर सकारात्मक रहें। सकारात्मकता फैलाएँ और फिर इसका अधिक प्रसार करें। यदि आप एक सकारात्मक व्यक्ति हैं तो आप न केवल खुश रहेंगे, बल्कि आपको बेहतर परिणाम भी मिलेंगे! आप अधिक बाधाओं को दूर करने में सक्षम होंगे, क्योंकि आप इस तरह की नकारात्मक मानसिकता से सबकुछ नहीं देखते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि आप अपने आसपास के लोगों के लिए प्रेरणा होंगे और जीवन में अधिक जीवंत व सकारात्मक लोगों को आकर्षित करेंगे।

नियम 6. लक्ष्य बना लें

क्या आपका लक्ष्य तय है, जिसे आप प्राप्त करना चाहते हैं? यदि नहीं तो क्यों? यदि आपका कोई लक्ष्य ही नहीं है, जिसे आप पूरा करना चाहते हैं तो आप उसे पाने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? आप जो करना चाहते हैं और जहाँ से प्राप्त करना चाहते हैं, उसके लिए लक्ष्य निर्धारित करें। यह आपके व्यक्तिगत जीवन और आपके कॅरियर पर लागू होता है। अगले महीने, वर्ष और पाँच वर्षों के दौरान आप कितना पैसा बनाना चाहते हैं, इसके बारे में सोचें। अपने लक्ष्य निर्धारित करें और वहाँ पहुँचने के लिए कड़ी मेहनत करें।

नियम 7. किसी एक उत्पाद पर निर्भर न हों

व्यवसाय में अपने सभी अंडों को एक टोकरी में रखना अच्छा नहीं है। आदर्श रूप से, आपके पास कई उत्पाद एवं सेवाएँ होनी चाहिए। आप उन्हें लगातार विकसित करते रहें, ताकि आप ग्राहकों के लिए लगातार नए सामान प्रस्तुत कर सकें। इस तरह, यदि आपके किसी उत्पाद की बिक्री घटने लगती है तो आप व्यवसाय से पूरी तरह से बाहर नहीं हो जाते। शुरुआत में, अपने सभी अंडों को एक टोकरी में रखना ठीक है और कभी-कभी समय, ऊर्जा एवं संसाधनों को देखते हुए ऐसा करना आवश्यक हो सकता है कि व्यवसाय को जमीन पर उतार दिया जाए। लेकिन एक बार जब आप जमीन पर अपना व्यवसाय ले आते हैं तो संसाधनों को विभिन्न क्षेत्रों में फैलाना शुरू करें और अंडों को विविधता प्रदान करें।

नियम 8. खुद पर विश्वास रखें

आपको खुद पर और अपने दृष्टिकोण पर विश्वास करना होगा। यदि ऐसा नहीं कर सकते तो कोशिश करने का कोई मतलब नहीं है। अपनी पहली बाधा में दौड़ने के बाद आप उसे शायद छोड़ देंगे। इसके बजाय कुछ ऐसा चुनें, जिसे आप दिल की गहराई से पसंद करते हैं और आपको दृढ़ विश्वास हो कि आप उसे प्राप्त कर सकते हैं। यह वह चीज हो सकती है, जिसमें अंत में आप सफल होंगे और यह संभवत: वह चीज हो, जो आपको सबसे अधिक खुशी प्रदान करे, जो अंत में सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होगा।

नियम 9. अपनी पूरी क्षमता से काम करें

अपनी पूरी क्षमता से काम करें और हमेशा अपनी क्षमता का विस्तार करें। आपको अपनी पूरी क्षमता से कम कभी नहीं देना चाहिए। जीवन में आप जो भी चाहते हैं, यह आपका कर्तव्य है कि आप उसे पाने की दिशा में अपना सबकुछ दें और फिर, जब आपको अपनी संभावित सीमाएँ मिल जाएँगी तो शायद आप उस क्षमता को बढ़ा पाएँगे। इसके लिए भौतिक या वित्तीय होना जरूरी नहीं है और यह वह नहीं होना चाहिए, जो हर कोई चाहता है।

नियम 10. कभी छोड़ना नहीं

यदि आप अपने किसी सपने से प्यार करते हैं तो उसे छोड़ने की सपने में भी न सोचें। इसके बाद आप जो भी करते हैं, वह आपको खुश करनेवाला नहीं होता। तो अपनी बात पर अड़े रहें, क्योंकि आपकी खुशी इसी में निहित है और यही वह जगह है, जहाँ आपके सपनों के सच होने की सबसे अधिक संभावना है।

स्टीफन कोवे

स्टीफन रिचड्‌र्स कोवे एक महान् व्यक्तित्व, विकास कोच और प्रेरक वक्ता थे, जो अपनी विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक 'द 7 हैबिट्स ऑफ हाइली इफेक्टिव पीपल्स' के लिए जाने जाते हैं और दुनिया भर के लोगों को सार्वभौमिक सिद्धांतों की शक्ति से प्रेरित करते रहे। स्टीफन रिचड्‌र्स कोवे का जन्म 24 अक्तूबर, 1932 को लेक सिटी, यूटा में हुआ। स्टीफन कोवे ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में एम.बी.ए. और ब्रिघम यंग यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट (पी-एच.डी.) की। स्टीफन कोवे ने विभिन्न प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठनों को प्रशिक्षण सेवाएँ प्रदान कीं। उन्हें अपने शोध और मॉडल के लिए भी जाना जाता है। लीडरशिप में सुधार करने और बिक्री प्रशिक्षण प्रदान करने में वे माहिर थे। 17 जुलाई, 2012 को 79 वर्ष की आयु में एक दुर्घटना में कोवे की मृत्यु हो गई।

स्टीफन कोवे के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. हमेशा नियंत्रण में रहने के लिए

90/10 सिद्धांत का उपयोग करें

जब चीजें अनुकूलता से काम नहीं करतीं तो लोग अकसर निराश हो जाते हैं। लेकिन स्टीफन कोवे के अनुसार, जीवन 10 प्रतिशत है, जो आपके साथ होता है और 90 प्रतिशत आप इस पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। इसलिए आपकी परिस्थितियाँ आपकी अपनी निजी पसंद के कारण हैं। केवल जब आप अपने जीवन की पूरी जिम्मेदारी लेते हैं, तभी आप समझेंगे कि एक व्यक्ति के रूप में कैसे विकसित हुआ जाए।

नियम 2. फसल कानून का उपयोग करें

फसल कानून का कहना है कि आप जो बोते हैं, उसे काटते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, स्टीफन कोवे आपसे कहते हैं कि कल जीवन का आनंद लेने के लिए आज आपको बीज बोने चाहिए। जिस तरह किसानों को यह पता नहीं होता है कि आनेवाले मौसम में फसल अच्छी होगी या नहीं, आपको प्रत्येक कारवाई के प्रभाव को तौलना चाहिए। इसलिए सबसे खराब स्थिति के लिए बचत करें और अपने महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए योजना बनाएँ।

नियम 3. अद्वितीय योगदान देने के लिए सराहना

ऐसे लोगों के साथ काम करना तय करें, जो अद्वितीय योगदान देने के लिए आपकी सराहना करते हैं और आपकी रचनात्मक क्षमता के लिए आपको पुरस्कृत करते हैं। एक सिद्धांत कहता है कि यदि आप उत्पादन करते हैं तो आपको गाजर मिलती है, यदि आप नहीं करते तो आपको छड़ी से पीटा जाता है। लेकिन मानवीय योगदान

इस तरह के उपचार के लायक नहीं है। उन लोगों के लिए काम न करें, जो आपको मशीन की तरह या काम पाने का साधन मात्र मानते हैं।

नियम 4. सक्रिय बनिए

किसी भी वातावरण को नियंत्रित करने की यह क्षमता है। परिस्थिति के नियंत्रण में रहने की बजाय हमें परिस्थिति को नियंत्रित करना चाहिए। स्व-निर्धारण, चुनाव और निर्णय लेने की क्षमता ही आपकी परिस्थिति को सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकती है।

नियम 5. अंत को ध्यान में रखकर शुरुआत करें

कोवे इस आदत को व्यक्तिगत लीडरशिप की आदत कहते हैं, जिनमें हमारा खुद का खुद पर नियंत्रण होना चाहिए। हमें हमेशा अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए। ध्यान लगाने की इस आदत को विकसित कर हम व्याकुलता से बच सकते हैं और ज्यादा सक्रिय बन सफलता हासिल कर सकते हैं।

नियम 6. प्राथमिक चीजों को महत्त्व दें

हमें लीडरशिप और मैनेजमेंट के बीच के अंतर को समझना चाहिए। बाहरी दुनिया में लीडरशिप व्यक्तिगत दृष्टिकोण और व्यक्तिगत लीडरशिप के साथ ही शुरू होती है। हमें क्या महत्त्वपूर्ण है और क्या अति आवश्यक है, इस बारे में भी बात करनी चाहिए। नीचे दिए गए निर्देशों के अनुसार हमें कार्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए—

• जरूरी और बहुत जरूरी, • जरूरी और बहुत जरूरी नहीं, • जरूरी नहीं और • जरूरी नहीं और बहुत जरूरी भी नहीं।

कोवे का कहना है कि लोग अपना आधा समय बहुत जरूरी, लेकिन महत्त्वपूर्ण कार्यों में नहीं बिताते हैं। एक सफल और पूरा जीवन जीने के लिए आपको अपने उद्देश्य और उच्चतम प्राथमिकताओं को जानना चाहिए। जब आप अपनी दृष्टि, उद्देश्य और उच्चतम प्राथमिकताओं को समझते हैं तो आप उन चीजों को जाने देने में सक्षम होंगे, जो आपके लिए मायने नहीं रखती हैं।

नियम 7. हमेशा जीत के बारे में ही सोचें

यह बहुत जरूरी है, क्योंकि आपकी उपलब्धि दूसरों के साथ किए गए सहकारी संघर्षों पर निर्भर करती है। लेखक के अनुसार, हमें हमेशा जीत के बारे में ही सोचना चाहिए। कभी भी हार-जीत के बारे में सोचकर लड़खड़ाना नहीं चाहिए।

नियम 8. पहले दूसरों को समझने की कोशिश करें

यही आधुनिक दुनिया की सबसे बड़ी कहावत है। कोवे की यह आदत संचार से जुड़ी हुई है और यह अति प्रभावशाली व शक्तिशाली है। इस आदत को कोवे ने यह कहते हुए वर्णित किया है कि "लिखने से पहले निदान करें।" यह आदत बहुत आसान तथा सबसे प्रभावशाली है और साथ ही यह सकारात्मक रिश्तों को बनाए रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमेशा खुले दिमाग से लोगों की बातों को सुनना चाहिए और फिर अपने प्रभावशाली तरीके से अपने विचार को लोगों तक पहुँचाने की कोशिश करें। इससे एक सकारात्मक समस्या को सुलझाने वाले वातावरण का निर्माण होगा।

नियम 9. तालमेल बैठाना

एक ऐसा तत्त्व, जो हमें बताता है कि संपूर्ण हमेशा उसके छोटे-छोटे भाग से महान् और बड़ा है, इसलिए हमें हमेशा संपूर्ण लक्ष्य को पूरा करने की तरफ ध्यान देना चाहिए। साथ ही प्रदर्शन करते समय हमारे विचार और हमारी क्रिया के बीच तालमेल बैठना भी बहुत जरूरी है।

नियम 10. कुल्हाड़ी को तेज करें

यह आत्म-नवीकरण की आदत है और इसके भीतर ही आपकी सभी दूसरी आदतें समावेशित हैं। इन आदतों का उपयोग कर आप मानसिक व शारीरिक दोनों रूप से विकसित हो सकते हैं। कोवे ने खुद को भी चार भागों में विभाजित किया है—अध्यात्म, मानसिकता, शारीरिक एवं सामाजिक भावुकता और इन सभी का समान रूप से विकास होना बहुत जरूरी है।

ओपरा विन्फ्रे

ओपरा विन्फ्रे एक अमेरिकी मीडिया कार्यकारी, अभिनेत्री, टॉक शो होस्ट, टेलीविजन निर्माता और परोपकारी कलाकार हैं। वे अपने टॉक शो 'द ओपरा विन्फ्रे शो' के लिए सबसे ज्यादा जानी जाती हैं। उनका जन्म 29 जनवरी, 1954 को कोसिउसको, मिसिसिपी में एक गरीब कुँवारी माँ के यहाँ हुआ। बचपन में उन्हें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा, जिनमें, उनके अनुसार नौ वर्ष की उम्र में उनका शारीरिक शोषण किया गया और तेरह वर्ष की उम्र में ही उन्हें घर से भागना पड़ा। ओपरा की माँ घरों में नौकरानी का काम करती थीं और अश्वेत होने के कारण ओपरा को हर जगह प्रताड़ित किया जाता था। अपने कॅरियर की शुरुआत उन्होंने लोकल रेडियो स्टेशन पर समाचार पढ़ने से की। इसके बाद रिपोर्टिंग और फिर टी.वी. एंकरिंग कर श्वेतों के राज को खत्म करते हुए अलग पहचान बनाई। उन्होंने मीडिया में बातचीत करने के मामलों में कई सारे बदलाव किए, इसीलिए उन्हें 'मीडिया क्षेत्र की रानी' भी कहा जाता है। 'फोर्ब्स' की दुनिया में सबसे अमीर अश्वेतों की सूची में शामिल होनेवाली वे पहली अश्वेत महिला हैं। आज उन्हें अमेरिका की सबसे अमीर और प्रतिष्ठित महिलाओं में गिना जाता है।

ओपरा विन्फ्रे के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. कॅरियर को उस एक गलती से

परिभाषित नहीं किया जाएगा

सफलता एक विशाल छलाँग नहीं है। यह शिशु-चरणों की एक शृंखला है और यदि आप एक गलती करते हैं तो समझें कि आपके जीवन और आपके कॅरियर को उस एक गलती से परिभाषित नहीं किया जाएगा। आपको और अधिक कदम उठाने होंगे और आप अंतत: सफलता पर पहुँचेंगे।

नियम 2. कोई अवसर दिखाई दे तो उसे ग्रहण करें

ओपरा अपनी किसी भी सफलता को किस्मत से नहीं जोड़तीं। इसके बजाय वे अनुग्रह और आशीर्वाद के साथ अवसर खोजने पर जोर देती हैं। सफल होने की कुंजी यह है कि अवसर जब भी आपके सामने आए तो उसे झपट लें। तो किस्मत का क्या? विन्फ्रे का कहना है, "भाग्य अवसर के क्षण की तैयारी कर रहा है। यदि आप तैयार नहीं हैं, यदि आप उस अवसर की तलाश में नहीं हैं तो किस्मत आपका कोई भला नहीं करती।"

नियम 3. अपनी पिछली गलतियों के लिए खुद को क्षमा करें

आप वह व्यक्ति नहीं हैं, जो आप पाँच, दस, बीस या अधिक वर्ष पहले थे। बहुत सारा ज्ञान सिर्फ उम्र के साथ आता है, इसलिए युवाकाल की गलतियों के लिए खुद को उलाहना न दें। पहले आप अँधेरे में थे, लेकिन अब

बेहतर जानते हैं। अतीत की उन गलतियों को शिक्षा के रूप में देखें और उनसे जितना हो सके, सीखें तथा फिर आगे बढ़ें।

नियम 4. कभी भी खुद को सुधारना बंद न करें

इसका अर्थ है, लगातार अपने व्यक्तित्व, अपने कौशल और नेटवर्क पर काम करना, ताकि आप एक अलग रूप में सर्वोत्तम संभव स्थिति में हों। दूसरे आपको आत्म-केंद्रित या स्वार्थी के रूप में देख सकते हैं; लेकिन विन्फ्रे का मानना है कि आपको उन्हें अनदेखा करना चाहिए। यदि आप आगे बढ़ना चाहते हैं तो आपको हमेशा सुधार करने की आवश्यकता है। लोग आपके बारे में कुछ कहें तो उसे प्रशंसा के रूप में लें; जैसे—आप बहुत कुछ कर रहे हैं और अन्य लोग ध्यान दे रहे हैं।

नियम 5. जितना हो सके, उतनी मेहनत करें

आपके अपने प्रदर्शन पर ही आपका नियंत्रण है। आप प्रतियोगिता को बिलकुल नियंत्रित नहीं कर सकते। जब विन्फ्रे अपने टॉक शो के साथ शुरुआत कर रही थीं तो वे जानती थीं कि मेहमानों, विषयों और एयरटाइम के लिए बहुत सारे अन्य शो प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं; लेकिन वे यह भी जानती थीं कि उनका उस पर कोई नियंत्रण नहीं है। वे जो कुछ भी कर सकती थीं, वह सबसे अच्छा शो था, जिसे वे जानती थीं कि कैसे बनाना है। इसी तरह, आप कर सकते हैं; सबसे अच्छा आप जानते हैं कि कैसे करें। यह एक दौड़ की तरह है—आप बस, तब तक कड़ी मेहनत करते हैं, जब तक आप फिनिश लाइन पार नहीं कर लेते और आप बस, इतना कर सकते हैं कि आप अपने आप को और अधिक तेजी से चलाएँ, न कि अपनी प्रतिस्पर्धा को और अधिक धीरे-धीरे चलाएँ। यही आपको सफलता दिलाता है—अपने आप को बनाना, यह देखने के लिए नहीं कि आपकी प्रतियोगिता कहाँ है।

नियम 6. केवल सपना न देखें—विश्वास करें

अपने लिए बड़े सपने देखना ठीक है; हम सब करते हैं। लेकिन अगर आप सफल होने जा रहे हैं तो आपको सपने से ज्यादा कुछ करना होगा। आपको विश्वास करना होगा कि जिस जीवन का आप नेतृत्व करना चाहते हैं, वह एक दिन आपका होगा। विन्फ्रे हमेशा से जानती थीं कि वे एक बड़ी जिंदगी जिएँगी। उन्हें अपने भविष्य के बारे में मजबूत विश्वास था। ऐसा ही करें और उस विश्वास को दृढ़ता से पकड़ें, यहाँ तक कि सबसे कठिन समय में और आप ठीक उसी तरह से प्राप्त करेंगे, जैसे कि आप चाहेंगे।

नियम 7. याद रखें कि लोग अलग कम, समान अधिक हैं

हम सभी एक ही बात चाहते हैं कि हम सभी अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचना चाहते हैं। निश्चित रूप से, हम सभी अलग-अलग तरीकों से इस बारे में बात करते हैं, क्योंकि हम सभी के पास अलग-अलग कौशल और अलग-अलग जुनून हैं; लेकिन दिन के अंत में हम सभी अपने आप के लिए वास्तविक होना चाहते हैं—खुद की 'सच्ची अभिव्यक्ति'।

नियम 8. जीवन में अपना उद्देश्य खोजें

यदि आप सफलता चाहते हैं तो आपको यह पता लगाने की आवश्यकता है कि आप पृथ्वी पर यहाँ क्यों हैं, अधिकांश उद्यमी पहले से ही यह महसूस करते हैं कि उन्हें अपना उद्देश्य पता है; लेकिन यदि आप नहीं जानते तो ठहर जाएँ! सबकुछ ठहराव पर रखें, वास्तविक आत्मा की खोज और आत्म-प्रतिबिंब के लिए कुछ समय लें और अपना उद्देश्य खोजें।

नियम 9. खुद को सतही और केंद्रित रखें

अपने काम में खो जाना और अपने अहंकार को बढ़ने देना आसान है, लेकिन अगर आप अपना ध्यान केंद्रित रखना चाहते हैं तो दयालु बने रहें और हमेशा दूसरों को समझने तथा कनेक्ट करने की कोशिश करें। इससे आप अपनी सफलता की संभावनाओं में काफी सुधार करेंगे। विन्फ्रे ने अपनी व्यक्तिगत सफलता के लिए खुद को सतही रखने की अपनी क्षमता का बहुत उपयोग किया।

नियम 10. यह याद रखने की कोशिश करें कि सबकुछ ठीक होगा

यदि आप सफलता में लंबी दौड़ का घोड़ा बनना चाहते हैं तो आपको अपने दृष्टिकोण को व्यापक करना होगा। हाँ, थोड़ा डर लगना स्वाभाविक है, लेकिन यह विश्वास कभी न खोएँ कि सबकुछ ठीक चलेगा।

नेपोलियन हिल

नेपोलियन हिल बीसवीं सदी के एक महान् लेखक थे। उन्होंने बीस वर्षों से अधिक समय यह जानने में बिताया कि कुछ लोग क्यों सफल होते हैं! उन्होंने इस विषय पर कई पुस्तकें भी लिखीं। नेपोलियन हिल सन् 1883 में वर्जीनिया में पैदा हुए। ये बड़े व्यवसायियों के सलाहकार, लेक्चरर और लेखक के रूप में सफल तथा लंबा कॅरियर बिताने के बाद सन् 1970 में उन्होंने दुनिया से विदा ली। 'सोचो और धनी बनो' उनके लेखकीय जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण पड़ाव रहा, जो पुस्तक सार्वकालिक बेस्टसेलर साबित हुई। दुनिया भर में इस पुस्तक की डेढ़ करोड़ प्रतियाँ बिक चुकी हैं। उन्होंने प्रबंधन, मानवीय संबंध और कॅरियर योजना पर कई पुस्तकें और लेख लिखे हैं। उनकी पुस्तकों में प्रसिद्ध हैं—'दि कंप्लीट ईडियट्स गाइड टू मैनेजिंग पीपल' और 'द कंप्लीट ईडियट्स गाइड टू टीम बिल्डिंग'।

नेपोलियन हिल के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. लक्ष्य निर्धारित करना

जो लोग लक्ष्य निर्धारित रखते हैं, वे जीवन में सफल होते हैं; क्योंकि वे जानते हैं कि वे कहाँ जा रहे हैं। जिन लोगों के जीवन में लक्ष्य होता है, वे ध्यान केंद्रित रखकर कार्य करते हैं। वे सही दिशा में आगे बढ़ते हैं।

नियम 2. स्वयं पर विश्वास

जिन लोगों ने भी सफलता पाई है, वे स्वयं पर विश्वास रखते हैं। वे इस बात की चिंता नहीं करते हैं कि दूसरे लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं या क्या कहते हैं।

नियम 3. रचनात्मकता

सफल लोगों में रचनात्मकता पाई जाती है या जिन लोगों में रचनात्मकता होती है, वे सफल होते हैं। ये लोग हर कार्य को नए और बेहतर तरीके से करना पसंद करते हैं। यही कारण है कि वे दूसरों से आगे निकल जाते हैं।

नियम 4. स्पष्ट

जिन लोगों की सोच स्पष्ट होती है, वे सफल होते हैं। स्पष्ट सोच रखनेवाले लोग ही अपना लक्ष्य निर्धारित कर पाते हैं। इस कारण वे सही दिशा में आगे बढ़ते हैं और सफल होते हैं।

नियम 5. गलतियों से सीखना

सफल लोग अपनी गलतियों से सीखते हैं। उन्हें आप कभी निराश नहीं देखेंगे। वे हमेशा आगे बढ़कर प्रयास करते हैं। यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो गलतियों से अवश्य ही सीखें।

नियम 6. उत्साह

उत्साह सफलता की चाबी है। जो लोग उत्साहित रहते हैं, वे अपने कार्यों को बेहतर तरीके से करते हैं। जिन लोगों में उत्साह नहीं होता है, वे लोग अपने कार्यों को आधे-अधूरे मन से करते हैं। जीवन में सफलता के लिए उत्साहित होकर कार्य करें।

नियम 7. अनुशासन

सफल लोगों में अनुशासन होता है। वे अपने कार्यों को तय समय पर करते हैं। वे अपने कार्यों को कल पर टालते नहीं हैं। समय पर कार्य करना उन्हें दूसरों से आगे रखता है।

नियम 8. हार नहीं मानना

नेपोलियन हिल कहते हैं कि हार माननेवाले लोग कभी सफल नहीं होते और सफल लोग कभी हार नहीं मानते। यदि जीवन में सफल होना है तो कभी हार नहीं माननी चाहिए और लगातार प्रयास करते रहना चाहिए।

नियम 9. सकारात्मक रहना

हमेशा सकारात्मक सोचना चाहिए और नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए। प्रतिदिन कुछ प्रेरणादायक पढ़ना चाहिए।

नियम 10. मनुष्य अपने भाग्य का विधाता स्वयं है

यदि मनुष्य चाहे तो असंभव को संभव कर सकता है। आपका भाग्य, आपके कर्म सिद्धांत, दूसरों की सहायता—ये सब अपनी जगह पर सही हो सकते हैं; लेकिन यह भी सत्य है कि मनुष्य अपनी संकल्प-शक्ति के सहारे भाग्य को भी बदल सकता है। बहुतों ने ऐसा कर दिखाया है और बहुत लोग आज कर रहे हैं तथा आगे भी करेंगे। सबकुछ आपके अंदर है। अनंत शक्तिवाली सत्ता आपके अंदर निवास करती है। फिर आपको किसके सहारे की जरूरत है? इसलिए उस कार्य में लग जाइए, जिसे आप करना चाहते हैं।

बिल गेट्स

बिल गेट्स का जन्म 28 अक्तूबर, 1955 को अमेरिका के सिएटल में हुआ। वे दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक हैं। बिल गेट्स अमेरिका के एक बड़े बिजनेसमैन हैं, जो माइक्रोसॉफ्ट के को-फाउंडर हैं। माइक्रोसॉफ्ट दुनिया की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी है। सन् 1975 में इस कंपनी की शुरुआत हुई, तब से बिल गेट्स ने इस कंपनी में अलग-अलग पदों पर काम किया। वे चेयरमैन, सी.ई.ओ. एवं चीफ सॉफ्टवेयर आर्किटेक्ट रह चुके हैं। पर्सनल कंप्यूटर की दुनिया में एक क्रांति लाने के लिए बिल गेट्स का नाम इतिहास के पन्नों में अंकित है। वे उन महान् उद्योगपतियों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी मेहनत और लगन के बल पर पूरी दुनिया में अपना नाम बहुत ऊँचा उठा दिया। सन् 1987 के बाद से लगातार बिल गेट्स का नाम दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति की सूची में आता रहा है। वे सबसे बड़े दानियों में भी शुमार हैं।

बिल गेट्स के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. किसी से तुलना न करें

आप अपनी तुलना किसी से भी न करें। अगर आप ऐसा करते हैं तो आप खुद की बेइज्जती कर रहे हैं। आपको कुछ उपहारों, प्रतिभाओं और बुद्धिमत्ता से नवाजा गया था, जिसे आपको निर्णायक कारवाई के साथ उजागर करने की आवश्यकता है। आपको अपने उपहारों की खोज करने और उन्हें एक भावुक एवं पूर्ण जीवन जीने के लिए उपयोग करने की आवश्यकता है।

नियम 2. आलसी इनसान

मैं हमेशा किसी कठिन काम को करने के लिए किसी आलसी इनसान को चुनूँगा, क्योंकि वह आलसी इनसान उस काम को पूरा करने के लिए कोई आसान तरीका निकालेगा।

नियम 3. अपनी क्षमताओं और कमजोरियों को जानें

हम अकसर इसलिए असफल हो जाते हैं, क्योंकि न तो हम अपनी क्षमताओं को जानते हैं और न ही अपनी कमजोरियों को। आपको व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी चाहिए। आप परिस्थितियों, मौसम या हवा को नहीं बदल सकते हैं; लेकिन आप अपने आप को बदल सकते हैं। यही आपकी जिम्मेदारी है।

नियम 4. ईडियट बनकर

खुद ईडियट बनकर खुश रहें और यह पूरी उम्मीद है कि आप अंत में सफलता प्राप्त करेंगे। परिपक्वता विपरीत हालात होने पर भी बिना क्षमा-याचना या शिकायत किए आगे बढ़ने की योग्यता है।

नियम 5. शिक्षक

टेक्नोलॉजी मात्र औजार है, जो बच्चों को एक साथ काम करने के लिए पास लाती है; पर जहाँ तक बात बच्चों को प्रेरित करने की है तो शिक्षक सबसे महत्त्वपूर्ण है। लर्निंग धन की शुरुआत है। लर्निंग स्वास्थ्य की शुरुआत है। लर्निंग आध्यात्मिकता की शुरुआत है। सर्चिंग व लर्निंग जहाँ है, वहीं चमत्कार की सारी प्रक्रिया शुरू होती है।

नियम 6. कोच

हर व्यक्ति को एक कोच की जरूरत होती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप एक बास्केटबॉल खिलाड़ी, टेनिस खिलाड़ी, पहलवान या एक ब्रिज प्लेयर हैं। यदि आप अपने लक्ष्यों पर काम करते हैं तो आपके लक्ष्य आप पर काम करेंगे। यदि आप अपनी योजना पर काम करते हैं तो आपकी योजना आप पर काम करेगी। हमारा निर्माण अंततोगत्वा हमारे अच्छे कार्यों से ही होता है।

नियम 7. गलती

यदि आप गरीब घर में जनमे हैं तो यह आपकी गलती नहीं है, लेकिन अगर आप गरीबी में ही मरते हैं तो यह आपकी ही गलती है। सफलता न तो जादुई होती है और न ही रहस्यमय होती है। सफलता बुनियादी सिद्धांतों का लगातार पालन करने का स्वाभाविक परिणाम है।

नियम 8. गलतियों से सीखना

सफलता मिलने के बाद खुशियाँ मनाना तो ठीक है, परंतु गलतियों से सीखना और भी महत्त्वपूर्ण है। हमारा निर्माण अंततोगत्वा हमारे अच्छे कार्यों से ही होता है। हमें जिस रास्ते जाना है, वह पालों का सेट निर्धारित करता है, न कि हवा की दिशा।

नियम 9. फ्यूचर प्लान

आप दस साल बाद का भविष्य नहीं बता सकते, पर दस साल तक की प्लानिंग तो कर सकते है। इसलिए फ्यूचर प्लान करें। यदि आप असामान्य जोखिम के लिए तैयार नहीं हैं तो आपको साधारण जीवन के लिए समझौता करना पड़ेगा।

नियम 10. अलग नजरिया

अगर आपके पास किसी चीज को देखने का अलग नजरिया है तो उसे लोगों से शेयर करें, डिस्कस करें। नहीं तो दिमाग अलग तरह से सोचना ही बंद कर देगा। यह मायने नहीं रखता कि आपने समस्या से कब और कैसे निजात पाई! निजात पाना ही सबसे ज्यादा मायने रखता है। आप निर्णय लिये बिना प्रगति नहीं कर सकते।

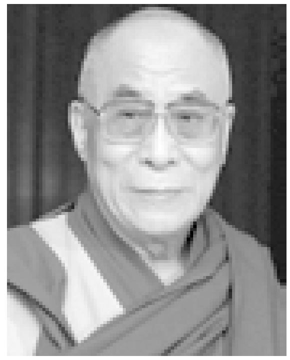

दलाई लामा

वर्तमान व चौदहवें दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो का जन्म 6 जुलाई, 1935 को उत्तरी तिब्बत में आमदो के एक छोटे गाँव तकछेर में एक कृषक परिवार में हुआ। दो वर्ष की उम्र में ल्हामो दोंडुब नाम का वह बालक तेरहवें दलाई लामा थुबतेन ग्यात्सो के अवतार के रूप में पहचाना गया। ऐसा विश्वास है कि दलाई लामा अवलोकितेश्वर या चेनेरेजिग के रूप हैं, जो कि करुणा के बोधिसत्त्व एवं तिब्बत के संरक्षक संत हैं। चीन द्वारा सन् 1949 में तिब्बत पर आक्रमण के बाद उन्हें भारत में शरण लेने को बाध्य होना पड़ा। तब से वे उत्तर भारत के धर्मशाला नामक स्थान में निवास करते हैं, जो कि निर्वासित तिब्बती राजनीतिक प्रशासन का केंद्र है। मानव अधिकारों के लिए काम करने के लिए उन्हें सन् 1989 में 'नोबेल शांति पुरस्कार' मिल चुका है। उनका विश्वास विज्ञान, अहिंसा व करुणा की शक्ति में है।

दलाई लामा के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. अच्छे दोस्त

गलतियाँ बतानेवाले दोस्त ही अच्छे होते हैं। कमजोरियाँ बताकर वे आपके व्यक्तित्व में छिपे खजाने के बारे में बताते हैं, इसलिए उनका सम्मान करना चाहिए। यदि आप दोस्त खोजने के लिए निकलेंगे तो आपको पता चलेगा कि वे बहुत कम हैं। यदि आप दोस्त बनाने निकलेंगे तो आप हर जगह उन्हें पाएँगे।

नियम 2. आंतरिक शक्ति

मुश्किलें खड़ी करनेवाले लोगों पर गुस्सा नहीं करना चाहिए; क्योंकि समस्याओं का सामना करने से हमारी आंतरिक शक्ति विकसित होती है और धैर्य दिखाने का अवसर भी मिलता है। एक अच्छा दिमाग और एक अच्छा दिल हमेशा से विजयी जोड़ी रहे हैं।

नियम 3. करुणा

करुणा का संबंध धार्मिक विश्वास से नहीं है। यह मानवीय है। हमारी शांति और मानसिक स्थिरता के लिए यह जरूरी है। करुणा के बिना मनुष्य का अस्तित्व संभव नहीं है। मुझे पता है कि जहाँ मैं कमजोर हूँ, भगवान् मजबूत हैं और जब हम विश्वास में विश्वास करते हैं तो हम अजेय होते हैं।

नियम 4. प्रसन्नता

प्रसन्नता कहीं बाहर से नहीं आती। यह आपके अपने कर्मों से ही पैदा होती है। हर कष्ट का कारण अज्ञानता है। खुशी पाने की चाहत में हम दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं। मैं कभी किसी कड़वे व्यक्ति से नहीं मिला, जो आभारी था या कोई आभारी व्यक्ति, जो कड़वा था।

नियम 5. समस्याओं को ताकत बनाएँ

समस्याओं को अपनी ताकत बनाएँ। वे कितनी भी गंभीर और कष्टदायी क्यों न हों, बेहतर की उम्मीद बनाए रखें। अगर हम आशा करना छोड़ देंगे तो यही सबसे बड़ी गलती होगी। हमारे जीवन में चुनौतियाँ हमारे विश्वास को मजबूत करने के लिए हैं। वे हमें रौंदने के लिए नहीं हैं।

नियम 6. रिश्ते

रिश्ते जरूरतों पर आधारित नहीं होते। सर्वश्रेष्ठ रिश्ते वही होते हैं, जिनमें दोनों पक्षों के बीच प्रेम उनकी जरूरतों से ज्यादा होता है। वे भावनाएँ ही हैं, जो हमें मनुष्य बनाती हैं, वास्तविक बनाती हैं। 'इमोशन' शब्द का मतलब है—एनर्जी इन मोशन।

नियम 7. दूसरों की मदद

जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य दूसरों की मदद करना है। अगर आप किसी की मदद नहीं कर सकते तो कम-से-कम उनके लिए मुश्किलें न खड़ी कीजिए। मैं जितना अधिक अस्वीकार किए जाने का जोखिम उठाता हूँ, मेरे स्वीकार किए जाने की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है।

नियम 8. धर्म और अध्यात्म

हम धर्म और अध्यात्म के बिना जीवित रह सकते हैं, लेकिन मानवीय प्रेम के बिना नहीं। जो कोई भी लोगों को सेवा देता रहता है, वह खुद को महानता—महा धन, महा प्रतिफल, महा संतुष्टि, महा प्रतिष्ठा और महा आनंद की श्रेणी में खड़ा पाता है।

नियम 9. चिंता

चिंता किसी समस्या का समाधान नहीं है। अगर किसी मुश्किल का हल निकल सकता है तो उसके लिए चिंता क्यों करें? अगर हल नहीं निकल सकता तो चिंता करके भी कोई फायदा नहीं। हम अपने आसपास दु:ख को बाहर रखने के लिए दीवारों का निर्माण करते हैं तो आनंद को भी बाहर ही रोक देते हैं।

नियम 10. समय का महत्त्व

जिंदगी का बीतने वाला प्रत्येक क्षण आपकी जिंदगी से कुछ-न-कुछ चुरा ले जाता है और आपको पता ही नहीं चलता। अंतत: एक दिन वह आता है, जब हमें पता चलता है कि हमने जिंदगी में कुछ किया ही नहीं, पूरी जिंदगी यूँ ही बीत गई। जीवन में कुछ अर्थपूर्ण करना है तो समय के महत्त्व को समझना होगा।

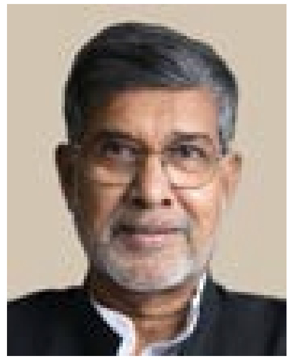

कैलाश सत्यार्थी

कैलाश सत्यार्थी का जन्म मध्य प्रदेश के विदिशा में 11 जनवरी, 1954 को हुआ। 'नोबेल शांति पुरस्कार' विजेता कैलाश सत्यार्थी 'बचपन बचाओ आंदोलन' चलाते हैं। पेशे से इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर रहे कैलाश सत्यार्थी ने कम उम्र में ही कॅरियर छोड़कर बच्चों के लिए कार्य करना शुरू कर दिया। उन्हें बाल श्रम के खिलाफ आंदोलन चलाकर लाखों मासूमों को बचाने का श्रेय दिया जाता है। वे 'ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर' के अध्यक्ष भी हैं। सन् 1980 में सत्यार्थी द्वारा चलाया गया 'बचपन बचाओ आंदोलन' अब तक लगभग 80 हजार मासूमों का जीवन तबाह होने से बचा चुका है। कैलाश सत्यार्थी कहते हैं, "बाल मजदूरी महज एक बीमारी नहीं है, बल्कि कई बीमारियों की जड़ है। इसके कारण कई जिंदगियाँ तबाह होती हैं। रास्ते में आते-जाते बच्चों को काम करता देख बड़ा अजीब लगता था, बेचैनी होने लगती थी तो नौकरी छोड़ दी और 1980 में 'बचपन बचाओ आंदोलन' की नींव रखी।"

कैलाश सत्यार्थी के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सकारात्मक

मैं सकारात्मक हूँ कि मैं अपने जीवनकाल में बाल-श्रम का अंत देख सकता हूँ, क्योंकि अब गरीब-से-गरीब व्यक्ति भी महसूस कर रहा है कि शिक्षा वह साधन है, जो उन्हें सशक्त बना सकता है। औपचारिक शिक्षा आपको जीविका मुहैया कराएगी और स्व-शिक्षा आपका भाग्य बनाएगी।

नियम 2. मानवीय मूल्य

आर्थिक विकास और मानव विकास साथ-साथ होना चाहिए। मानवीय मूल्यों की वकालत करने की सख्त जरूरत है। आप अपने संचार कौशल का अभ्यास करने के लिए हर अवसर का लाभ उठाएँ, ताकि जब महत्त्वपूर्ण अवसर आएँ, तब दूसरों को प्रभावित करने के लिए आप में संचार की प्रतिभा, अदा, शार्पनेस, स्पष्टता और जज्बा तैयार होंगे।

नियम 3. मानव दासता

अगर अभी नहीं तो कब? अगर तुम नहीं तो कौन? अगर हम इन मौलिक प्रश्नों के उत्तर दे सकें तो शायद हम मानव दासता का दाग मिटा सकें। दूसरों को छोटा जीवन जीने दो, लेकिन आप मत जियो। दूसरों को छोटी-छोटी बातों पर बहस करने दो, लेकिन आप मत करो। दूसरों को छोटी तकलीफों पर रोने दो, लेकिन आप मत रोओ। दूसरों को किसी और के हाथों में अपने भविष्य को छोड़ने दो, लेकिन आप मत छोड़ो।

नियम 4. बाल-श्रम और अशिक्षा

गरीबी, बाल-श्रम और अशिक्षा के बीच एक त्रिकोणीय संबंध है, जिनमें कारण और परिणाम का संबंध है। हमें इस दुष्चक्र को तोड़ना होगा। यदि आप अपने जीवन की योजना डिजाइन नहीं करते हैं तो संभावना है कि आप किसी और की योजना में फँस जाओ और अंदाजा लगाओ कि वे आपके लिए क्या योजना बनाएँगे? ज्यादा कुछ नहीं।

नियम 5. शोषण से शिक्षा की ओर और

गरीबी से साझा समृद्धि की ओर प्रगति

मैं शोषण से शिक्षा की ओर और गरीबी से साझा समृद्धि की ओर प्रगति करने के लिए कहता हूँ। एक ऐसी प्रगति, जो गुलामी से आजादी की ओर हो; एक ऐसी प्रगति, जो हिंसा से शांति की ओर हो। जब आप दूसरों का न्याय करते हैं तो आप उन्हें परिभाषित नहीं करते हैं, आप खुद को परिभाषित करते हैं।

नियम 6. प्रगति

गरीबी बढ़ती है। अगर बच्चों को शिक्षा से वंचित किया जाता है तो वे गरीब रह जाते हैं। केवल एक सपने को कभी नहीं छोड़ें, क्योंकि इसे पूरा करने में समय लगेगा। वैसे भी, समय बीत जाएगा। दु:ख के बिना कोई सफलता नहीं है। मुझे लगता है कि 'पीड़ित' शब्द का मतलब जबरदस्त प्रयास और निर्देशन करना था।

नियम 7. गुलामी

अगर आप इन परिस्थितियों में गुलाम बच्चों द्वारा बनाई गई चीजें खरीदते रहेंगे तो आप गुलामी के स्थायीकरण के लिए बराबर के जिम्मेदार होंगे। हम परिस्थितियों को हम पर शासन करने दे सकते हैं, या हम प्रभार ले सकते हैं और अपने जीवन को भीतर से शासित कर सकते हैं।

नियम 8. दुनिया इतनी गरीब

बीस साल पहले हिमालय की तलहटी में मेरी मुलाकात एक पतले-दुबले लड़के से हुई। उसने मुझसे पूछा, 'क्या दुनिया इतनी गरीब है कि मुझे कोई औजार या बंदूक उठाने पर मजबूर करने की बजाय एक खिलौना और एक किताब नहीं दे सकती?' यदि आप लोगों के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं तो आपके पास एक उद्यम है।

नियम 9. बच्चों को क्लास रूम में

मैं यह मानने से इनकार करता हूँ कि दुनिया इतनी गरीब है, जबकि सेनाओं पर होनेवाला सिर्फ एक हफ्ते का वैश्विक खर्च हमारे सभी बच्चों को क्लास रूम में ला सकता है। किसी प्रकार के संतुलन या त्याग के बिना कोई भी निर्णय नहीं लिया जा सकता।

नियम 10. हमारे बच्चे

वे किसके बच्चे हैं, जो फुटबॉल सिलते हैं, फिर भी कभी फुटबॉल से खेले नहीं? वे हमारे बच्चे हैं। वे किसके बच्चे हैं, जो पत्थरों और खनिजों की खान में काम करते हैं? वे हमारे बच्चे हैं। वे किसके बच्चे हैं, जो कोको की पैदावार करते हैं, फिर भी चॉकलेट का टेस्ट नहीं जानते? वे सभी हमारे बच्चे हैं।

रतन टाटा

रतन टाटा विख्यात और सम्मानित भारतीय व्यवसायियों में से एक हैं। उनका जन्म 28 दिसंबर, 1937 को बंबई (अब मुंबई) में हुआ। रतन टाटा भारत और विदेशों में विभिन्न संगठनों के साथ कार्य कर चुके हैं। वे व्यापार और उद्योग से संबंधित प्रधानमंत्री परिषद् के सदस्य भी रहे हैं। उन्हें भारत सरकार द्वारा जनवरी 2000 में 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया।

रतन टाटा के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. गुण और प्रतिभा

हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ विशेष गुण और प्रतिभा होती है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंदर मौजूद गुणों एवं प्रतिभा को पहचानना चाहिए। वह व्यक्ति, जो अपनी संगति से ऊपर सफल होता है, वह वही होता है, जो जीवन के आरंभिक रूप से अपनी वस्तु को स्पष्ट रूप से देखता है और उस वस्तु की ओर आदतन अपनी शक्तियों का निर्देशन करता है।

नियम 2. संतुलित व सफल जिंदगी

जीवन में केवल अच्छी शैक्षिक योग्यता या अच्छा कॅरियर ही काफी नहीं है। आपका लक्ष्य होना चाहिए कि एक संतुलित व सफल जिंदगी जी जाए। संतुलित जीवन का मतलब है—आपका स्वास्थ्य, लोगों से अच्छे संबंध और मन की शांति; सबकुछ अच्छा होना चाहिए। जो अंदर होता है, वह हमेशा बाहर दिखाई देता है।

नियम 3. समान अवसर

हम सभी के पास समान योग्यता नहीं है, लेकिन हमारे पास अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए समान अवसर हैं। जितना अधिक हम एक विचार या एक लक्ष्य के बारे में महसूस करते हैं, उतने ही अधिक विचार हमारे अवचेतन में गहरे दफन होते हैं, जो हमें इसकी पूर्ति के मार्ग की ओर ले जाते हैं।

नियम 4. जीवन का आनंद

केवल पैसा और प्रसिद्धि कमाना ही काफी नहीं है। सोचिए, जब आपका किसी से ब्रेकअप हो तो उस दिन कंपनी में प्रमोशन कोई मायने नहीं रखता। जब आपकी पीठ में दर्द हो तो कार ड्राइविंग करने में कोई आनंद नहीं आता। जब आपके दिमाग में टेंशन हो तो शॉपिंग करने में भी कोई आनंद नहीं आता। यह जीवन आपका है। इसे इतना भी गंभीर मत बनाइए। हम सब इस दुनिया में कुछ पलों के मेहमान हैं तो जीवन का आनंद लीजिए।

नियम 5. अलग ढंग से

ऐसी कई चीजें हैं, जिन्हें अगर मुझे दोबारा जीने का मौका मिले तो शायद मैं अलग ढंग से करूँगा। लेकिन मैं पीछे मुड़कर यह नहीं देखना चाहूँगा कि मैं क्या नहीं कर पाया? मौके तैयार मन की तरफदारी करते हैं। जितना

अधिक आप अभ्यास करते हैं, आप उतने भाग्यशाली बन जाते हैं।

नियम 6. मेहनत

विश्व के करोड़ों लोग मेहनत करते हैं, लेकिन सबको इसका फल अलग-अलग प्राप्त होता है। इन सबके लिए मेहनत जिम्मेदार है। इसलिए मेहनत से मत भागिए, मेहनत करने के तरीकों में सुधार लाइए। यह मत सोचिए कि इसे करने का सबसे सस्ता तरीका क्या है या इसे करने का सबसे तेज तरीका क्या है? सोचो, इसे करने का सबसे गजब का तरीका क्या है?

नियम 7. पत्थरों से मजबूत स्मारक

उन सारे पत्थरों को अपने पास रख लें, जिन्हें लोग आप पर फेंकते हैं; और उन पत्थरों का उपयोग एक मजबूत स्मारक बनाने में करें। गलतियाँ करना महान् बनने के लिए काफी नहीं है। आपको गलतियाँ स्वीकार करना होगा और फिर सीखना होगा कि कैसे उस गलती को अपने फायदे में बदल दें।

नियम 8. नकल को ना

वह व्यक्ति, जो दूसरों की नकल करता है, कुछ समय के लिए तो सफल हो सकता है, परंतु जीवन में बहुत आगे नहीं बढ़ पाता। कोई उद्यम शुरू करना बिना पैराशूट के हवाई जहाज से कूदने के जैसा है। बीच हवा में उद्यमी पैराशूट बनाना शुरू करता है और उम्मीद करता है कि जमीन पर गिरने से पहले वह खुल जाएगा।

नियम 9. जीवन में उतार-चढ़ाव

आगे बढ़ने के लिए जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत जरूरी हैं, क्योंकि ई.सी.जी. में भी एक सीधी लाइन का मतलब होता है कि हम जिंदा नहीं हैं। जब आपको सोचने के लिए मजबूर किया जाता है, तब आप अपनी मानसिक क्षमता का विस्तार करते हैं। जब आप अपनी मानसिक क्षमता का विस्तार करते हैं, आपकी दौलत बढ़ जाती है।

नियम 10. प्रश्न पूछें

मैं हमेशा लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए कहता हूँ। कहता हूँ कि लोग प्रश्न पूछें, जो अभी तक पूछे नहीं गए हैं; नए विचारों को आगे रखें, नए आइडियाज पर विमर्श करें, ताकि दुनिया को और बेहतरीन बनाया जा सके। जीवन में सबसे सफल लोग वे होते हैं, जो सवाल पूछते हैं। वे हमेशा सीखते हैं। वे हमेशा आगे बढ़ते हैं। वे हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं।

□

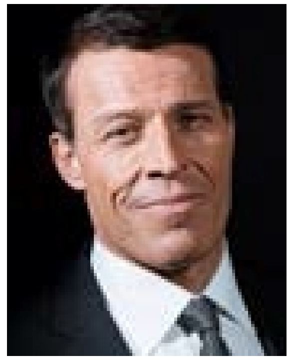

टोनी रॉबिंस

टोनी रॉबिंस एक अमेरिकी लेखक, उद्यमी, परोपकारी और जीवन-निर्माण के वक्ता हैं। रॉबिंस को उनके सूचनाप्रद सेमिनार और सेल्फ-हेल्प बुक्स के लिए जाना जाता है। रॉबिंस कई कंपनियों के संस्थापक हैं और करोड़ों डॉलर कमाते हैं। रॉबिंस का जन्म उत्तरी हॉलीवुड, कैलिफोर्निया में 29 फरवरी, 1960 को हुआ। उन्होंने अपने कॅरियर की शुरुआत मोटिवेशनल स्पीकर और लेखक जिम रोहन के लिए सेमिनार के प्रबंधन के साथ की, जब वे 17 साल के थे। बाद में उन्होंने भी इसी कॅरियर में अपना नाम कमाया।

टोनी रॉबिंस के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जीवन में बदलाव

हम चाहें तो अपना जीवन बदल सकते हैं। हम जो भी चाहते हैं, उसे कर सकते हैं, पा सकते हैं और वैसे हो सकते हैं। आपके द्वारा लिया गया निर्णय आपके भाग्य का निर्माण करता है। दुनिया के सबसे धनवान् व्यक्ति नेटवर्क बनाते हैं; बाकी सभी लोग काम खोजने के लिए प्रशिक्षित किए जाते हैं।

नियम 2. कमजोर लक्ष्य

लोग आलसी नहीं होते हैं, बल्कि उनके लक्ष्य हमेशा कमजोर होते हैं, जो उनको प्रेरित नहीं कर पाते। यदि आप वह करते हैं, जो आप हमेशा से करते आ रहे हैं तो आपको वही मिलेगा, जो हमेशा से मिलता रहा है। जैसे हैं, वैसे बने रहना आसान है, लेकिन बदलना आसान नहीं है। अधिकतर लोग आजीवन वैसे ही बने रहते हैं। जो लोग छोटे सपने देखते हैं, वे छोटे लोगों की तरह ही जीते रह जाते हैं। दृष्टि वह है, जो आप अपनी आँखों से देखते हैं। विजन वह है, जो आप अपने दिमाग से देखते हैं।

नियम 3. एक चीज में मास्टरी

एक कारण कि हम में से इतने कम लोग वह हासिल कर पाते हैं, जो हम सचमुच चाहते हैं कि हम कभी अपना ध्यान केंद्रित नहीं करते, हम कभी अपनी शक्ति केंद्रित नहीं करते। अधिकतर लोग जीवन में इधर-उधर के काम करते रहते हैं, कभी भी किसी एक चीज में मास्टरी करने की नहीं सोचते।

नियम 4. चुनौती

मैं आपको अपने जीवन को महान् बनाने की चुनौती देता हूँ। मैं चुनौती देता हूँ कि आप उन लोगों की श्रेणी में आएँ, जो कहते हैं कि वे करते हैं और अपनी बात पर चलते हैं। जैसा कि मैंने कहा, 'काश, मैं यह कह पाता कि यह आसान था।' ऐसा नहीं था, लेकिन यह कठिन भी नहीं था। लेकिन बिना किसी प्रबल कारण या उद्देश्य के जीवन में कुछ भी कठिन है।

नियम 5. योगदान

यह वो नहीं है कि हमें क्या मिलता है, बल्कि यह वो है कि हम क्या बनते हैं, क्या योगदान देते हैं, जो हमारी जिंदगी को मायने देता है। नई चीजों के लिए तैयार रहने और गलतियाँ करने के बारे में एक अच्छी चीज यह है कि गलतियाँ करना आपको विनम्र बनाता है। विनम्र लोग घमंडी लोगों से अधिक सीखते हैं।

नियम 6. कम खाइए

बहुत अधिक खाना सीखना चाहते हैं तो कम खाइए। इस तरह आप लंबे समय तक बहुत कुछ खाने के लिए जिंदा रहेंगे। बोलना आसान है। अपनी आँखों से सुनना सीखिए। एक्शन वास्तव में, शब्दों से अधिक प्रभावी होता है। आदमी जो कहता है, उससे अधिक यह देखिए कि वह करता क्या है?

नियम 7. आकलन

एक बार आप समय पर महारत हासिल कर लेते हैं तो आप समझ जाएँगे कि यह कितना सच है कि ज्यादातर लोग ज्यादा आँक लेते हैं कि वे एक साल में क्या कुछ हासिल कर सकते हैं और कम आँक लेते हैं कि वे एक दशक में क्या कुछ हासिल कर सकते हैं। मुझे इतने लोग संघर्ष करते हुए दिखते हैं, अकसर कड़ी मेहनत करते हुए, बस, इसलिए, क्योंकि वे पुराने आइडियाज से चिपके हुए होते हैं।

नियम 8. जीवन पर नियंत्रण

सफलता का रहस्य यह सीखना है कि कैसे दर्द और खुशी का उपयोग किया जाए, बजाय इसके कि दर्द और खुशी कैसे आपका उपयोग करती हैं। अगर आप यह करते हैं तो आपका जीवन आपके नियंत्रण में है। अगर नहीं तो जीवन आपको नियंत्रित करता है। यदि आप अमीर बनना चाहते हैं तो आपको अपने विजन का विकास करना होगा। आपको समय के दरवाजे पर खड़े होकर भविष्य को देखना होगा।

नियम 9. दृष्टिकोण

प्रभावी ढंग से संवाद करने के लिए हमें एहसास होना चाहिए कि हम सभी अलग-अलग ढंग से दुनिया को देखते हैं और इस समझ को एक गाइड के रूप में दूसरों से संवाद करने में प्रयोग करना चाहिए। यदि आपको यह अहसास है कि आप ही समस्या हैं, तब आप खुद को बदल सकते हैं, कुछ सीख सकते हैं और बुद्धिमान बन सकते हैं। अपनी समस्याओं के लिए दूसरों को दोष न दें।

नियम 10. जीवन की खुशी

केवल वही लोग जीवन की खुशी को अनुभव कर पाते हैं, जिन्होंने ईमानदारी और निस्स्वार्थ की शक्ति को जान लिया हो। यह पता लगाएँ कि आप कहाँ हैं, आप कहाँ जा रहे हैं और वहाँ पहुँचने की एक योजना बनाएँ। यह वो नहीं है, जो आप अपने मुँह से बोलते हैं और जो आपका जीवन निर्धारित करता है। यह वो है, जो आप खुद से कहते हैं, जिसमें सबसे अधिक शक्ति होती है।

वारेन बफेट

वारेन बफेट का जन्म 30 अगस्त, 1930 को अमेरिका के ओमाहा शहर के नेबरस्का में हुआ। वे एक सफल निवेशक और उद्यमी हैं। वारेन बफेट को व्यापार और निवेश का शौक बचपन से ही था। अपने व्यापार के शुरुआती दिनों में, जब वे केवल ग्यारह वर्ष के थे, तब घर-घर जाकर पत्रिकाएँ बाँटना, च्युइंगम एवं कोका-कोला की बोतल बेचना, गोल्फ बॉल एवं स्टांप बेचने जैसे कई काम किया करते थे। जब वे हाई स्कूल में थे—केवल 13 वर्ष की उम्र के, तब उन्होंने अपना पहला आयकर रिटर्न भरा। आज 89 वर्ष की उम्र में भी वे सफल निवेशक और उद्यमी होने के साथ-साथ एक प्रेरक वक्ता और 21वीं सदी के सबसे बड़े दानवीर हैं। वारेन बफेट ने अपनी कुल संपत्ति का लगभग 85 फीसदी हिस्सा दान कर दिया है।

वारेन बफेट के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. प्रतिष्ठा का निर्माण

प्रतिष्ठा का निर्माण करने के लिए बीस साल लग जाते हैं और उसे बरबाद करने में पाँच मिनट। अगर आप इस बारे में सोचते हैं, आप अलग तरह से काम करेंगे। हारनेवाले असफल होने पर मैदान छोड़ देते हैं। विजेता तब तक फेल होते रहते हैं, जब तक वे सफल नहीं हो जाते।

नियम 2. जरूरत

यदि आप उन चीजों को खरीदते हैं, जिनकी आपको जरूरत नहीं है तो शीघ्र ही आपको उन चीजों को बेचना पड़ेगा, जिनकी आपको जरूरत है। लोगों को जानना चाहिए और समझना चाहिए कि जिंदगी आपके लिए इंतजार नहीं करती। अगर आपको कुछ चाहिए तो उठिए और उसके पीछे भागिए।

नियम 3. बचत

खर्च करने के बाद जो बचे, उसकी बचत भले ही न करें, लेकिन बचत करने के बाद जो बचा, उसे खर्च अवश्य करें। वित्तीय संघर्ष अकसर लोगों द्वारा जीवन भर किसी और के लिए काम करने का प्रत्यक्ष परिणाम होता है। वह गेम खोजिए, जिसमें आप जीत सकते हैं और फिर अपना जीवन उसे खेलने में लगा दीजिए; और जीतने के लिए खेलिए।

नियम 4. जोखिम

कभी भी नदी की गहराई को दो पैरों से नहीं नापना चाहिए। सबसे अधिक बेवकूफी भरे कामों में से एक है—अपने आप को बुद्धिमान दिखाने का दिखावा करना। जब आप बुद्धिमान होने का दिखावा करते हैं, तब आप मूर्खता के चरम पर होते हैं। सबसे बड़ी संपत्ति, जो हम सभी के पास है, वह है हमारा दिमाग। यदि दिमाग को सही से ट्रेंड किया जाए तो यह पल भर में अपार दौलत पैदा कर सकता है।

नियम 5. उम्मीद

ईमानदारी सबसे महँगा तोहफा है। घटिया लोगों से इसकी उम्मीद न करें। सबसे सफल लोग कुछ अलग तरह के होते हैं, जो कि पूछने से नहीं डरते, खासतौर से जब सब लोग उसे जाहिर मानते हैं। सभी शब्दों में जिंदगी को सबसे अधिक बरबाद करनेवाला शब्द 'कल' है।

नियम 6. इनसानियत

यदि आप इनसानियत के 1 फीसदी भाग्यशाली लोगों में भी शामिल हैं तो आप 99 फीसदी लोगों को इनसानियत सिखा सकते हैं। स्कूल में हम सीखते हैं कि गलती करना बुरी बात है और ऐसा करने पर हमें सजा मिलती है। फिर भी, यदि हम देखें कि मनुष्य को कैसे सीखने के लिए बनाया गया है तो पाएँगे कि हम गलती करके सीखते हैं।

नियम 7. संगति

अपने से बेहतर लोगों की संगत करना अच्छा होता है। ऐसे सहयोगी बनाएँ, जिनका व्यवहार आपसे अच्छा हो और आप उस दिशा में बढ़ जाएँगे। हम गिरकर चलना सीखते हैं। यदि हम कभी न गिरें तो हम कभी नहीं चल पाएँगे। हर कोई आपको जोखिम बता सकता है। एक उद्यमी इनाम देख सकता है। आशा करना आपकी ऊर्जा बहा देता है। एक्शन लेना ऊर्जा पैदा कर देता है।

नियम 8. खरीद

एक शानदार कंपनी को उचित कीमत पर खरीदना एक उचित कंपनी को शानदार कीमत पर खरीदने से ज्यादा अच्छा है। सबसे बड़ा इनाम तब मिलता है, जब आप खुद को छोड़ देते हैं। यह दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने के बारे में है, किसी ऐसी चीज का हिस्सा बनने के बारे में है, जो आपसे बड़ी हो और एक सकारात्मक बदलाव लाने के बारे में है।

नियम 9. कमाई

कभी भी अकेली आय पर निर्भर न रहें। आय का दूसरा साधन बनाने के लिए निवेश करें। हमारे साथ क्या होता है, इस पर शायद हमारा जरा भी नियंत्रण नहीं है, लेकिन हम इसको नियंत्रित कर सकते हैं कि हम प्रतिक्रिया कैसे करते हैं! अगर हम सही नजरिया चुनें तो हम सामने आनेवाली सभी चुनौतियों से ऊपर उठ सकते हैं।

नियम 10. कीमत

कीमत वह है, जो आप भुगतान करते हैं और मूल्य वह है, जो आप प्राप्त करते हैं। केवल वही खरीदिए, जिसे आप खुशी के साथ अगले दस सालों तक होल्ड कर सकें। हार न मानें और इस बात को जानें कि हमेशा कोई-न-कोई होता है, जो आप में विश्वास करता है और जो आपको उसी रूप में प्यार करता है, जैसे आप हैं।

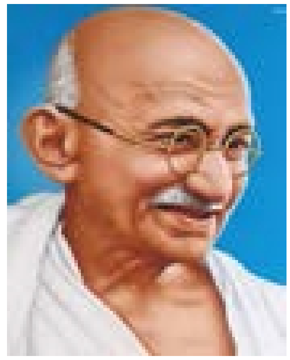

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ और 30 जनवरी, 1948 को दिल्ली के बिड़ला हाउस में उनकी हत्या कर दी गई। भारत को स्वतंत्र कराने में उनकी निर्णायक भूमिका रही। प्यार से हम उन्हें 'बापू' पुकारते हैं। उनके विचार आज भी दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

महात्मा गांधी के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सत्य

गांधीजी सत्य के बड़े आग्रही थे। वे सत्य को ईश्वर-तुल्य मानते थे। वे कहते थे, "सत्य मेरे लिए सर्वोपरि सिद्धांत है। मैं वचन और चिंतन में सत्य की स्थापना करने का प्रयत्न करता हूँ। परम सत्य तो परमात्मा है। परमात्मा कई रूपों में संसार में प्रकट हुए हैं। मैं उन्हें देखकर आश्चर्यचकित और अवाक् रह जाता हूँ। मैं सत्य के रूप में परमात्मा की पूजा करता हूँ और सत्य की खोज में अपनी प्रिय वस्तु की भी बलि चढ़ा सकता हूँ।"

नियम 2. अहिंसा

अहिंसा पर गांधीजी ने बड़ा सूक्ष्म विचार किया है। वे लिखते हैं—"अहिंसा की परिभाषा बड़ी कठिन है। अमुक काम हिंसा है या अहिंसा, यह सवाल मेरे मन में कई बार उठा है। मैं समझता हूँ कि मन, वचन और शरीर से किसी को भी दु:ख न पहुँचाना अहिंसा है; लेकिन इस पर अमल करना देहधारी के लिए असंभव है। साँस लेने में अनेक सूक्ष्म जीवों की हत्या हो जाती है। आँख की पलक उठाने व गिराने से ही पलकों पर बैठे जीव मर जाते हैं। साँप-बिच्छू को भी न मारें, पर उन्हें पकड़कर दूर तो फेंकना ही पड़ता है। इससे भी उन्हें थोड़ी-बहुत पीड़ा तो होती ही है। मैं जो भी खाता हूँ, जो कपड़े पहनता हूँ, यदि उन्हें बचाऊँ तो मुझसे ज्यादा जिन्हें जरूरत है, वे उन गरीबों के लिए काम आ सकते हैं। मेरे स्वार्थ के कारण उन्हें ये चीजें नहीं मिल पातीं। इसलिए मेरे उपयोग से गरीब पड़ोसी के प्रति थोड़ी हिंसा होती है। जो वनस्पति मैं अपने जीने के लिए खाता हूँ, उससे वनस्पति जीवन की हिंसा होती है। बच्चों को मारने, पीटने, डाँटने में हिंसा ही तो है। क्रोध करना भी सूक्ष्म हिंसा है।"

नियम 3. ब्रह्मचर्य

जो मन, वचन और काया से इंद्रियों को अपने वश में रखता है, वही ब्रह्मचारी है। जिसके मन के विकार नष्ट नहीं हुए हैं, उसे पूरा ब्रह्मचारी नहीं कहा जा सकता। मन एवं वचन से भी विकारी भाव नहीं जाग्रत् होने चाहिए। ब्रह्मचर्य की साधना करनेवालों को खान-पान का संयम रखना चाहिए। उन्हें जीभ का स्वाद छोड़ना चाहिए और बनावट तथा शृंगार से दूर रहना चाहिए। संयमी लोगों के लिए ब्रह्मचर्य आसान है।

नियम 4. अस्तेय, चोरी न करना

दूसरे की चीज उसकी इजाजत के बिना लेना चोरी है। जो चीज हमें जिस काम के लिए मिली हो, उसके सिवाय दूसरे काम में उसे लेना या जितने समय के लिए मिली हो, उससे ज्यादा समय तक उसे काम में लेना भी चोरी है। अपनी कम-से-कम जरूरत से ज्यादा मनुष्य जितना लेता है, वह चोरी है। अस्तेय और अपरिग्रह मन की

स्थितियाँ हैं। सबके लिए इतनी बारीकी से उसका पालन करना कठिन है। पर जैसे-जैसे मनुष्य अपने शरीर की आवश्यकताएँ घटाता जाएगा, वैसे-वैसे अस्तेय और अपरिग्रह की गहराई में पहुँच जाएगा।

नियम 5. अपरिग्रह

जिस प्रकार चोरी करना पाप है, उसी प्रकार जरूरत से ज्यादा चीजों का संग्रह करना भी पाप है। इसलिए आवश्यकता से ज्यादा चीजें इकट्ठा करना अनुचित है। उदाहरण के लिए, यदि आपका काम दूसरी तरह चल जाए तो कुरसी रखना व्यर्थ है।

नियम 6. प्रार्थना

महात्मा गांधी को प्रार्थना में अटूट विश्वास था। दक्षिण अफ्रीका में रहते समय से ही उन्होंने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना आरंभ कर दी थी। प्रार्थना का मूल अर्थ माँगना है। पर गांधीजी प्रार्थना का अर्थ ईश्वरीय स्तुति, भजन, कीर्तन, सत्संग, अध्यात्म और आत्म-शुद्धि मानते थे। ईश्वर को किसी ने नहीं देखा है। उसे हमें हृदय में अनुभव करना है। इसी के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए। गांधीजी सत्य को ईश्वर मानते थे। वे सत्य का अर्थ परमात्मा निरूपित करते थे, जो संसार में प्रारंभ से ही था, अभी है और भविष्य में भी रहेगा। आराधना ही प्रार्थना है। प्रार्थना में सत्य से एकाकार होने की इच्छा रखनी चाहिए। जिस प्रकार विषयी अपने विषयों में एकरस होने को व्याकुल हो जाता है, उसी प्रकार हमें भी उस परम सत्य में एकरस होने के लिए व्याकुल हो जाना चाहिए। प्रार्थना में व्याकुलता आनी चाहिए।

नियम 7. सादगी

गांधीजी का मानना था कि अगर कोई व्यक्ति समाज-सेवा में कार्यरत है तो उसे साधारण जीवन की ओर ही बढ़ना चाहिए, जिसे वे ब्रह्मचर्य के लिए आवश्यक मानते थे। उनकी सादगी से प्रेरित होकर लोग पश्चिमी जीवन-शैली को त्यागने को मजबूर होने लगे थे। इसे वे 'खुद को शून्य की स्थिति में लाना' कहते हैं, जिसमें साधारण जीवन-शैली को अपनाना और अपने वस्त्र स्वयं धोना आवश्यक है।

नियम 8. ईश्वर एक

गांधीजी का मानना था कि प्रत्येक धर्म के मूल में सत्य और प्रेम होता है। उनका कहना है कि 'कुरान', 'बाइबिल', 'जेंद-अवेस्ता', 'तालमुड' या 'गीता' किसी भी माध्यम से देखिए, हम सबका ईश्वर एक ही है और वह सत्य तथा प्रेम-स्वरूप है।

नियम 9. बड़ी सोच रखें, पर छोटी चीजों से संतुष्ट रहें

देश की आजादी को गांधीजी ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। उन्हें रोकने के लिए अंग्रेजों ने कई लुभावने प्रस्ताव दिए। उनके सामने कई लालच आए, लेकिन उन्होंने उन सबसे बढ़कर हमेशा अपने जीवन के उद्देश्य को महत्त्व दिया। एक वकील होने के नाते वे चाहते तो ऐशो-आराम की जिंदगी जी सकते थे। वे समझदार थे। उनकी सोच बड़ी थी, पर उन्होंने खुद को हमेशा सादा रहन-सहन में ढाल लिया और जीवन में छोटी-छोटी चीजों में खुशियाँ ढूँढ़ते हुए आगे बढ़े। यही नजरिया उन्हें 'राष्ट्रपिता' बनाता है। झूठी शान और दिखावा आपको कुछ पल का आनंद जरूर दे सकते हैं, पर ये आपको संतुष्ट नहीं कर सकते। संतुष्ट रहने के लिए आपको आगे बढ़ने और कुछ करने की चाह तो रखनी होगी; पर जो आपके पास है, उसमें खुशियाँ ढूँढ़नी होंगी।

नियम 10. प्रेम में ही जीत

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग में दर्शन और अपने जीवन के मार्ग का वर्णन किया है। वे लिखते हैं—"जब मैं निराश होता हूँ, तब मैं याद करता हूँ कि इतिहास सत्य का मार्ग होता है, किंतु प्रेम इसे सदैव जीत लेता है। यहाँ अत्याचारी एवं हत्यारे भी हुए हैं और कुछ समय के लिए वे अपराजेय लगते थे, किंतु अंत में उनका पतन ही होता है—इसका सदैव विचार करें।" प्रेम पर आधारित शक्ति सजा के डर से उत्पन्न शक्ति से हजार गुना अधिक और स्थायी होती है।

□

जैक मा

'अलीबाबा' ग्रुप के संस्थापक जैक मा का जन्म 10 सितंबर, 1964 को चीन के जेजिआंग प्रांत के एक छोटे से गाँव हंगझोउ में हुआ। जैक के परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। जैक एक बहुत ही साधारण परिवार से थे। उनके माता-पिता पारंपरिक चीनी नाटकों और प्रसिद्ध कहानियों को सुनाने का काम करते थे। उनके परिवार की आजीविका का यही एकमात्र साधन था। नौ वर्ष तक उन्होंने एक टूरिस्ट गाइड की तरह काम किया। वर्ष 1995 की शुरुआत में, वे अपने दोस्तों की मदद से अमेरिका गए, जहाँ उन्होंने पहली बार इंटरनेट देखा। इसी वर्ष जैक और कुछ दोस्तों ने मिलकर 20,000 डॉलर इकट्ठे किए और एक कंपनी की शुरुआत की। इस कंपनी का मुख्य काम दूसरी कंपनियों के लिए वेबसाइट बनाना था। उन्होंने अपनी कंपनी का नाम 'चायना येलो पेजेज' रखा। वर्ष 1999 में उन्होंने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर वेबसाइट 'अलीबाबा' की स्थापना की और एक इतिहास रच दिया।

जैक मा के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. नेतृत्व

बुद्धिमान लोगों का नेतृत्व करने के लिए किसी मूर्ख की आवश्यकता होती है। जब टीम में सभी वैज्ञानिक हों तो सबसे अच्छा होगा कि कोई किसान नेतृत्व करे, क्योंकि उसके सोचने का तरीका अलग होगा। जिंदगी के खेल में इससे पहले कि आप कुछ लें, आपको अंदर कुछ-न-कुछ रखना होगा।

नियम 2. लक्ष्य

इससे फर्क नहीं पड़ता कि लक्ष्य कितना कठिन है। आपके पास हमेशा वह सपना होना चाहिए, जो आपने पहले दिन देखा था। वह आपको प्रेरित रखेगा और आगे बढ़ाएगा। जो आपके पास है, उसके लिए कृतज्ञ बनिए और दुखड़ा रोना बंद करिए। यह सबको उबा देता है, आपके लिए कुछ अच्छा नहीं करता।

नियम 3. असफलता

हार मान लेना सबसे बड़ी असफलता होती है। यदि आपने हार नहीं मानी है तो आपके पास और भी बहुत सारे अवसर होंगे अपने आपको साबित करने के लिए। जीतने का इतना महत्त्व नहीं है, जितना कि जीतने के लिए प्रयास करने का महत्त्व होता है। सबसे बड़े गर्व की बात कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि हर बार गिरकर उठने में है।

नियम 4. उद्यमी

यदि आप एक सफल उद्यमी बनना चाहते हैं तो 30 से 40 साल की उम्र में खुद के लिए काम करें। 40 से 50 साल की उम्र तक आपको उन चीजों पर काम करना चाहिए, जिनमें आप दक्ष हों। यदि औसत व्यक्ति को अपने

जीवन और भाग्य पर बड़ी शक्ति प्राप्त होती है तो उसे आश्चर्य और धन्यवाद की स्थिति में रहना होगा।

नियम 5. योग्य व्यक्ति

किसी पद को उसके योग्य व्यक्ति को दें, न कि बहुत ज्यादा योग्य व्यक्ति को। यह बहुत ही कष्टदायी बात हो सकती है। परंतु इसका कोई अर्थ नहीं है कि जहाँ आपको एक ट्रैक्टर की जरूरत हो, वहाँ आप एक विशाल हवाई जहाज के इंजन का प्रयोग करें।

नियम 6. गलती

कोई भी गलती आपके लिए एक शानदार रिवेन्यू है। 20 साल की उम्र तक एक अच्छे स्टूडेंट बनें। उद्यमी बनने के लिए आपको थोड़ा अनुभव लेना जरूरी है। किसी उद्यमी का लोगों को उनको कर्तव्यों के बारे में बताना एक प्रमुख विशेषता है, जिसमें उनको निपुण होना चाहिए।

नियम 7. धैर्य एवं दृढ़ता

एक लीडर के अंदर अधिक धैर्य एवं दृढ़ता होनी चाहिए और उसे वह सहन करने में सक्षम होना चाहिए, जो उसके कर्मचारी नहीं कर सकते। एक अच्छा श्रोता होना एक अच्छे लीडर के लिए वास्तव में बहुत बुराई है। आपको पहली कतार के सभी लोगों को सुनना पड़ेगा।

नियम 8. नजरिया

जब आपका नजरिया अलग हो तो जीतना आसान हो जाता है। जब टीम बुद्धिमान लोगों से भरी पड़ी हो तो एक अनपढ़ व्यक्ति का नेतृत्व करना सबसे बेहतर होता है। उस अनपढ़ के सोचने का तरीका अलग होगा। इससे सफल होना बहुत आसान हो जाता है, अगर आपके पास ऐसे लोग हों, जो चीजों को अलग-अलग नजरिए से देखते हों।

नियम 9. सफल

इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता, अगर हम असफल हो गए। कम-से-कम हमने दूसरों के लिए रास्ता तो बना दिया। भले ही मैं असफल हो गया, लेकिन कोई तो जरूर सफल होगा। यदि मैं असफल होता हूँ तो मैं बार-बार, बार-बार कोशिश करता हूँ। यदि आप असफल होते हैं तो क्या आप दोबारा कोशिश करेंगे?

नियम 10. टीम

यदि हम एक अच्छी टीम हैं और यह जानते हैं कि हमें क्या करना है तो हममें से हर एक उनमें से दस को हरा सकता है। मैंने 'अलीबाबा' में अपने बुरे दिनों से सीखा है कि आपके पास अपनी एक ऐसी टीम होनी चाहिए, जिसकी कोई वैल्यू हो और वह किसी भी दशा में कुछ नया कर सके। यदि आप हार नहीं मानेंगे तो आपके पास जीतने का मौका रहेगा। फोकस करें और अपनी शारीरिक शक्ति से ज्यादा अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करें।

एलन मस्क

एलन मस्क दुनिया के सबसे महान् एवं सबसे शानदार आधुनिक आविष्कारकों में से एक और भविष्य की प्रौद्योगिकी, जैसे नवीकरणीय ऊर्जा और अंतरिक्ष यात्रा में बड़ी प्रगति के कर्णधार हैं। एलन मस्क का जन्म 28 जून, 1971 को प्रिटोरिया, दक्षिण अफ्रीका में हुआ; बाद में उनका परिवार अमेरिका में बस गया। एलन ने बचपन से ही कंप्यूटर प्रोग्रामिंग सीखना शुरू कर दिया था और 12 साल की उम्र में अपना पहला वीडियो गेम बेचा। उन्होंने भौतिकी और अर्थशास्त्र में स्नातक डिग्री के अलावा 'आर्ट सेंटर कॉलेज ऑफ डिजाइन' से डिजाइन में मानद डॉक्टरेट और 'सरे विश्वविद्यालय' से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में मानद डॉक्टरेट भी प्राप्त कीं। वर्ष 2002 में मस्क ने 'स्पेसएक्स' में निवेश किया। 'स्पेसएक्स' ने नासा के लिए कई अनुबंध पूरे किए हैं, जिनमें 'फाल्कन 9' अंतरिक्ष यान को कार्गो के साथ अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर भेजना भी शामिल है। टेस्ला मोटर्स की पहली इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स कार 'टेस्ला रोडस्टर' के डिजाइन में मस्क ने काफी मेहनत की। इस कार के लिए उन्हें वर्ष 2006 का 'ग्लोबल ग्रीन' उत्पाद डिजाइन पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने एक हाईस्पीड ट्रांसपोर्ट सिस्टम की कल्पना की है, जिसे 'हाइपरलूप' कहा जाता है। ग्लोबल वार्मिंग की चुनौतियों से निबटने के साथ वे संयुक्त राज्य अमेरिका में सौर ऊर्जा के दूसरे सबसे बड़े प्रदाता हैं। एलन मस्क मंगल पर बस्ती बसाने की अपनी योजना पर भी कार्यरत हैं, जिसमें बताया गया कि वे एक बार में 100 लोगों को मंगल पर ले जाएँगे और उनकी बस्ती वहाँ बसा देंगे। इसके लिए एक अति विशाल स्पेसक्राफ्ट बनाया जाएगा।

एलन मस्क के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जीवन

जीवन के एजेंट के रूप में यह (जीवन) हमारे कंधों पर है। जो चीज करने योग्य है, वह दुनिया के बारे में हमारी समझ में सुधार करने और ब्रह्मांड की बेहतर प्रशंसा करने की कोशिश हो सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि इसके बारे में हम ज्यादा चिंता करें। कोशिश करें और आनंद लें, क्योंकि वास्तव में जीवन बहुत अच्छा रहता है। यह सच में है। मुझे लगता है कि पृथ्वी पर जीवन सिर्फ समस्याओं को हल करने के बारे में ही नहीं, बल्कि उससे अधिक होना चाहिए। यह कुछ प्रेरणादायक होना चाहिए, भले ही यह घबराहट के बारे में हो।

नियम 2. चुनौती

किसी ऐसे व्यक्ति पर ध्यान दें, जो किसी और के प्रति उच्च आदर्श रखता है। वह मूल्यांकन करने में वास्तव में कठोर होना चाहिए; क्योंकि स्वाभाविक मानव प्रवृत्ति इच्छापूर्ण सोच है, इसलिए उद्यमियों को चुनौती यह बता रही है कि वास्तव में आपके विचारों पर विश्वास करने और उनके विरोध में क्या अंतर है—कुछ अवास्तविक सपनों का पीछा करना, जो वास्तव में योग्यता नहीं है। बाधाओं पर ध्यान केंद्रित न करें, इस पर ध्यान केंद्रित करें कि आपको और आपके जीवन को कुछ सार्थक क्या दे सकता है? बाधाओं को चुनौती दी जानी चाहिए।

नियम 3. गलती

मुझे लगता है कि एक जटिल काम के लिए बड़ी संख्या में लोगों को नौकरी पर रखना एक गलती है। बड़ी संख्या सही जवाब पाने में प्रतिभा की कभी भी क्षतिपूर्ति नहीं करेगी (दो लोग जो कुछ नहीं जानते हैं, एक से बेहतर नहीं हैं), बल्कि प्रगति को धीमा कर देगी और कार्य को अविश्वसनीय रूप से महँगा बना देगी।

नियम 4. असफलताओं से सीख

जब आप अपनी कल्पना को अमली जामा पहनाने लगते हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप सफल होंगे या असफल और जब आप अपनी असफलताओं से सीखते हैं तो समय के साथ बाधाएँ टल जाती हैं।

नियम 5. वास्तविक शक्ति

मानसिक कठोरता पर हाल के एक पोस्ट में हमने दिखाया कि आपके मन से वास्तविक शक्ति कैसे आती है। जब आपके पास करने के लिए एक मजबूत उद्देश्य है तो आप कभी हार नहीं मानेंगे। अगर कोई अपने काम के बारे में भावुक है तो वह उनके द्वारा उत्पन्न परिणामों में दिखाई देगा।

नियम 6. अस्तित्व का संकट

अस्तित्व के संकट के बारे में मैं हमेशा सोचता रहा हूँ और यह पता लगाने की कोशिश करता था कि इसका क्या अर्थ है? मैंने निष्कर्ष निकाला कि यदि हम दुनिया के ज्ञान को आगे बढ़ा सकते हैं, यदि हम चेतना के दायरे और पैमाने का विस्तार कर सकते हैं तो सही प्रश्न पूछने और अधिक प्रबुद्ध बनने में सक्षम हैं। आगे बढ़ने का यही एकमात्र तरीका है।

नियम 7. आत्म-विश्लेषण

अपने आत्म-विश्लेषण में बहुत कठोर रहें, निश्चित रूप से बेहद दृढ़ रहें और पशु की तरह काम करें। हर हफ्ते 80 से 100 घंटे काम करें। ये सभी सफलता के मार्ग की बाधाओं को दूर करते हैं।

नियम 8. आलोचना

महान् व्यक्ति की पहचान आलोचना के जवाब में निहित है। आलोचना से भागिए मत। इसे समझिए। यदि इसमें कुछ सच है तो समस्या को ठीक करें। इससे आपका जीवन या उत्पाद बेहतर होगा।

नियम 9. कृत्रिम बुद्धि

मुझे लगता है कि हमें कृत्रिम बुद्धि के बारे में बहुत सावधान रहना चाहिए। अगर मुझसे पूछा जाए कि हमारे अस्तित्व पर सबसे बड़ा खतरा क्या है तो शायद यही है। तो हमें बहुत सावधान रहना होगा। कृत्रिम बुद्धि के साथ हम राक्षस को बुला रहे हैं।

नियम 10. डर

डर एक कच्ची मानव भावना है। हर कोई इसे महसूस करता है। क्या मायने रखता है कि आप इससे दूर भागते हैं और अपने आत्मविश्वास को झटका लगाते हैं, या आप इसका सामना करते हैं, इसे समझते हैं और फिर अपने आत्मविश्वास को मजबूत करने के लिए इसे पराजित करते हैं! डर से पार पाना कठिन बात है, मुझे यह निश्चित लगता है। अगर मुझे लगता है कि कुछ महत्त्वपूर्ण है तो मैं डर के बावजूद इसे खुद कर दूँगा। लेकिन यही वास्तव में दृढ़ इच्छा को साबित कर सकता है। मुझे डर से नफरत है। काश, मैं इसे कम कर पाता!

नरेंद्र मोदी

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पूरा नाम नरेंद्र दामोदर दास मोदी है। उनका जन्म गुजरात के वडनगर के मोदी मोहल्ले में 17 सितंबर, 1950 को हुआ। शिक्षा पूरी करके वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) से जुड़ गए और निष्ठापूर्वक कार्य करने लगे। सन् 1987 में नरेंद्र मोदी भाजपा के आमंत्रण पर उसमें शामिल हो गए और विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए अक्तूबर 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री बने। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी को भाजपा ने अपना प्रधानमंत्री उम्मीदवार घोषित किया और उनके नेतृत्व में भाजपा ने अभूतपूर्व जीत हासिल की। 26 मई, 2014 को मोदी ने भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

नरेंद्र मोदी के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. अधिकार और कर्तव्य

भारत का संविधान नागरिकों के कर्तव्य, नागरिकों के अधिकार, लोकतंत्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता—एक प्रकार से यह संस्कार उत्सव भी है, जो आनेवाली पीढ़ियों को लोकतंत्र के प्रति, लोकतांत्रिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक भी करता है और संस्कारित भी करता है। लेकिन अभी भी हमारे देश में नागरिकों के कर्तव्य और नागरिकों के अधिकार—उन पर जितनी बहस होनी चाहिए, जितनी गहराई से बहस होनी चाहिए, जितनी व्यापक रूप में चर्चा होनी चाहिए, वह अभी नहीं हो रही है। मैं आशा करता हूँ कि हर स्तर पर—हर समय—जितना बल अधिकारों पर दिया जाता है, उतना ही बल कर्तव्यों पर भी दिया जाए। अधिकार और कर्तव्य की दो पटरियों पर ही भारत के लोकतंत्र की गाड़ी तेज गति से आगे बढ़ सकती है।

नियम 2. अनुशासन

जीवन में अनुशासन सफलताओं की आधारशिला को मजबूत बनाने का बहुत बड़ा कारण होता है। एक मजबूत आधार अनुशासन से आता है। जो प्रबंधनहीन होते हैं, अनुशासनहीन होते हैं, वे सुबह करनेवाला काम शाम को करते हैं, दोपहर को करनेवाला काम रात में देर से करते हैं। उनको यह तो लगता है कि काम हो गया, लेकिन इतनी ऊर्जा खराब होती है और हर पल तनाव रहता है। हमारे शरीर में भी एकाध अंग, थोड़ी सी तकलीफ करे तो आपने देखा होगा कि पूरा शरीर सहजता नहीं अनुभव करता है। इतना ही नहीं, हमारी दिनचर्या भी चरमरा जाती है और इसलिए, किसी चीज को हम छोटी न मानें। आप देखिए, अपने आपको, कभी जो निर्धारित है, उसमें समझौता करने की आदत में मत फँसाइए। तय करें, करके देखें।

नियम 3. उत्साह

उत्साह से भरा व्यक्ति अत्यंत बलशाली होता है, क्योंकि उत्साह से बढ़कर कुछ नहीं होता। सकारात्मकता और उत्साह से भरे व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं। लोग ठीक ही कहते हैं, निराशावाद कमजोरी की ओर तथा आशावाद शक्ति की ओर ले जाता है।

नियम 4. एकता

विविधता में एकता, यही देश की ताकत है। भाषाएँ अनेक हों, जातियाँ अनेक हों, पहनावे अनेक हों, खान-पान अनेक हों; लेकिन अनेकता में एकता—यह भारत की ताकत है, भारत की विशेषता है। हर पीढ़ी का एक दायित्व है। हर सरकारों की जिम्मेदारी है कि हम देश के हर कोने में एकता के अवसर खोजें, एकता के तत्त्व को उभारें। बिखराववाली सोच, बिखराववाली प्रवृत्ति से हम भी बचें, देश को भी बचाएँ।

नियम 5. चुनौती

जहाँ कुछ नहीं है, वहाँ रेगिस्तान में अगर एक पौधा भी कोई उगा देता है तो उसको जिंदगी का एक संतोष मिलता है। चुनौतियों की अपनी एक ताकत होती है और मैं उन लोगों को कभी भाग्यवान् नहीं मानता हूँ, जिनके जीवन में कभी चुनौतियाँ न आई हों। जिंदगी उन्हीं की बनती है, जो चुनौतियों से लोहा लेने का सामर्थ्य रखते हैं। व्यक्ति के जीवन में भी जिंदगी में कसौटियों से गुजरते रहना जिंदगी को सँवारने के लिए बहुत काम आता है।

नियम 6. जीवन-शैली

आज हमारी जीवन-शैली बदल गई है। शारीरिक गतिविधियों की कमी और हमारे खान-पान के तरीकों में बदलाव भी हुआ है। समाज एवं परिवार को इस चीज पर ध्यान देने की जरूरत है। जरूरत है छोटी-छोटी चीजों को सही तरीके से, नियमित रूप से करते हुए उन्हें अपनी आदत में बदलने की, उसे अपना एक स्वभाव बनाने की। मैं तो चाहूँगा कि परिजन जागरूकतापूर्वक यह प्रयास करें कि बच्चे खुले मैदानों में खेलने की आदत बनाएँ। संभव हो तो हम परिवार के बड़े लोग भी इन बच्चों के साथ जरा खुले में जाकर खेलें। बच्चों को लिफ्ट में ऊपर जाने-आने की बजाय सीढ़ियाँ चढ़ने की आदत लगाएँ।

नियम 7. नकल

ये जो शॉर्ट-कट वाले रास्ते होते हैं, वे नकल करने के लिए कारण बन जाते हैं। कभी-कभार खुद पर विश्वास नहीं होने के कारण मन करता है कि बगलवाले से जरा देख लूँ, सुनिश्चित कर लूँ, मैंने जो लिखा है, सही है कि नहीं है और कभी-कभी तो हमने सही लिखा होता है, लेकिन बगलवाले ने झूठा लिखा होता है तो उसी झूठ को हम भी स्वीकार कर लेते हैं और हम भी मर जाते हैं। तो नकल कभी फायदा नहीं करती है। नकल आपको बुरा बनाती है, इसलिए नकल न करें। आपने कई बार और बार-बार यह सुना होगा कि नकल मत करना, नकल मत करना। मैं भी आपको वही बात दोबारा कह रहा हूँ। नकल को आप हर रूप में देख लीजिए, वह जीवन को विफल बनाने के रास्ते की ओर आपको घसीटकर ले जा रही है और परीक्षा में ही अगर निरीक्षक ने पकड़ लिया तो आपका तो सबकुछ बरबाद हो जाएगा; और मान लीजिए, किसी ने नहीं पकड़ा तो जीवन पर, आपके मन पर एक बोझ तो रहेगा कि आपने ऐसा किया था और जब कभी आपको अपने बच्चों को समझाना होगा तो आप आँख में आँख मिला करके उन्हें नहीं समझा पाओगे। एक बार नकल की आदत पड़ गई तो जीवन में कभी कुछ सीखने की इच्छा ही नहीं रहेगी। तो फिर आप कहाँ पहुँच पाओगे?

नियम 8. मानवीय गुण

क्या आपका मन नहीं करता कि आप कुछ नया सीखें? आज स्पर्धा का युग है। परीक्षा में इतने डूबे हुए रहते हैं, उत्तम-से-उत्तम अंक पाने के लिए खप जाते हैं, खो जाते हैं। अवकाश में भी कोई-न-कोई कोचिंग क्लास लगी रहती है, अगली परीक्षा की चिंता रहती है। कभी-कभी डर लगता है कि रोबोट तो नहीं हो रही हमारी युवा पीढ़ी, मशीन की तरह तो जिंदगी नहीं गुजार रही! दोस्तो, जीवन में बहुत कुछ बनने के सपने देखना अच्छी बात है, कुछ कर गुजरने के इरादे अच्छी बात है और करना भी चाहिए, लेकिन यह भी देखिए कि अपने भीतर जो मानवीय तत्त्व है, वह तो कहीं कुंठित नहीं हो रहा है, हम मानवीय गुणों से कहीं दूर तो नहीं चले जा रहे हैं।

नियम 9. एकाग्रता

मैं एक बात बताऊँ, मेरी अपनी—मैं कभी-कभी कोई लेक्चर सुनने जाता हूँ या मुझे सरकार में भी कुछ विषय ऐसे होते हैं, जो मैं नहीं जानता हूँ और मुझे काफी एकाग्र होना पड़ता है। तो कभी-कभी ज्यादा एकाग्र करके समझने की कोशिश करता हूँ तो भीतर एक तनाव महसूस करता हूँ। फिर मुझे लगता है, नहीं-नहीं, थोड़ा रिलेक्स कर लूँगा तो मेरे लिए अच्छा रहेगा। तो मैंने अपने आप अपनी टेक्नीक विकसित की है। बहुत गहरी साँस लेता हूँ। तीन बार या पाँच बार गहरी साँस लेता हूँ। समय तो 30 सेकंड, 40 सेकंड, 50 सेकंड जाता है, लेकिन फिर मेरा मन एकदम से शांत होकर चीजों को समझने के लिए तैयार हो जाता है। हो सकता है, यह मेरा अनुभव हो, आपके भी काम आ सकता है।

नियम 10. चेतना

कुछ-न-कुछ ऐसी चीजें, जो आप नहीं जानते हैं, उनको जानने का प्रयास कीजिए, इससे आपको जरूर लाभ होगा। आपके भीतर की मानवीय शक्तियों को चेतना मिलेगी, विकास के लिए बहुत अच्छा अवसर बनेगा।

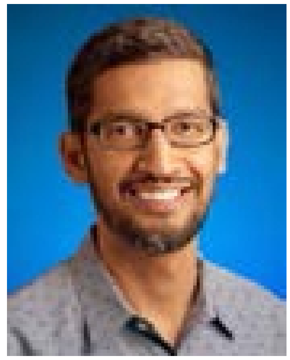

सुंदर पिचाई

वरिष्ठ टेक्नोलॉजी एग्जीक्यूटिव सुंदरराजन पिचाई वर्तमान में सर्च इंजन कंपनी 'गूगल' के सी.ई.ओ. हैं। उन्हें 10 अगस्त, 2015 को गूगल का मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनाया गया। उनका जन्म 12 जुलाई, 1972 को तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में एक तमिल परिवार में हुआ। सुंदर ने आई.आई.टी., खड़गपुर से मेटालर्जिकल इंजीनियरिंग में डिग्री हासिल की। बाद में स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय से 'मैटेरियल साइंसेज एंड इंजीनियरिंग' में मास्टर ऑफ साइंस किया और पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के 'व्हार्टन स्कूल' से प्रबंधन (एम.बी.ए.) की शिक्षा ग्रहण की। सुंदर पिचाई ने सन् 2004 में गूगल ज्वॉइन किया, जहाँ उन्हें 'उत्पाद प्रबंधन' और 'नई खोजों एवं नए विचारों' से संबंधित कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी गई। इसके तहत उन्होंने गूगल क्रोम, क्रोम ओ.एस. और गूगल ड्राइव जैसे उत्पादों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ-साथ उन्होंने गूगल मैप्स और जी-मेल जैसे महत्त्वपूर्ण उत्पादों के एप्लीकेशन के विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सुंदर पिचाई के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सही दृष्टिकोण

एक व्यक्ति, जो खुश है, इसलिए नहीं है, क्योंकि सबकुछ उसके जीवन में सही है; वह खुश है, क्योंकि उसके जीवन में सबकुछ के प्रति उसका दृष्टिकोण सही है। यह सच है कि आप सबकुछ नियंत्रित करने में सक्षम नहीं हैं।

नियम 2. माता-पिता

मेरी माँ और पिताजी में—पिताजी ने वह किया, जो ज्यादातर माता-पिता करते हैं। उन्होंने अपने जीवन में बहुत त्याग किया और अपनी आय का ज्यादातर हिस्सा यह सुनिश्चित करने में खर्च किया, जिससे उनके बच्चे शिक्षित हो सकें। प्यार पर कभी हार न मानें, अगर वह आपके दिल में है!

नियम 3. अनूठी और अद्वितीय आकांक्षाएँ

मेरे मन में हर बार यही बात चोट करती है कि भारतीय लोगों की आकांक्षाएँ अनूठी और अद्वितीय हैं। भले ही वे उस पृष्ठभूमि से नहीं हैं, फिर भी वे बहुत अपेक्षा रखनेवाले होते हैं। यह सोचना झूठ है कि आप उतने अच्छे नहीं हैं। यह सोचना झूठ है कि आप किसी काम के नहीं हैं।

नियम 4. क्रांति का दौर

भारत लंबे समय से तकनीकी कंपनियों के लिए प्रतिभा का एक निर्यातक रहा है; लेकिन अब भारत अपनी ही क्रांति के दौर से गुजर रहा है। यदि आप आर्थिक रूप से मुक्त होना चाहते हैं तो आपको उन समस्याओं से

अलग होना होगा, जो पहले आपको पीछे ले जाती रही हो। यदि आप लोगों के लीडर बनना चाहते हैं तो आपको शब्दों का मास्टर बनना होगा।

नियम 5. सबसे शक्तिशाली

मोबाइल के क्षेत्र में बहुत शक्तिशाली पुरुष और महिलाएँ हैं। मैं भाग्यशाली हूँ कि इस जगत् का हिस्सा हूँ; परंतु मैं ऐसा कभी नहीं सोचता कि मैं सबसे शक्तिशाली व्यक्ति हूँ। अतीत से चिपके रहने की अपेक्षा मैं भविष्य का स्वागत करूँगा।

नियम 6. प्रभाव का चक्र

प्रभाव का चक्र उन चीजों को संदर्भित करता है, जिन्हें आप नियंत्रित कर सकते हैं—कार्य में प्रगति करना, अपने रिश्तों का पोषण करना, अपने शरीर की देखभाल करना आदि और चिंता का विषय उन चीजों से है, जिन्हें आप शायद ही नियंत्रित कर सकते हैं—आतंकवाद, मौसम, दूसरे आपके बारे में क्या सोचते हैं, पशु-क्रूरता आदि। आपको अपनी सारी ऊर्जा को प्रभाव के घेरे में निवेश करना चाहिए, क्योंकि वहाँ आप प्रगति कर सकते हैं और वह पूर्ति प्राप्त कर सकते हैं, जो हर व्यक्ति जीवन में चाहता है।

नियम 7. वर्तमान के लिए डिजाइन

खुशी वह चीज नहीं है, जिसे आप भविष्य के लिए स्थगित करें। यह वह चीज है, जिसे आप वर्तमान के लिए डिजाइन करें। या तो आप समय का सदुपयोग करें, अन्यथा समय आपको नहीं बख्शेगा। हमारे समाज में साहस के विपरीत कायरता नहीं है। यह अनुरूपता है। सफलता एक आदर्श का प्रगतिशील अहसास है।

नियम 8. कृतज्ञता की भावना

खुद को कुछ देने के लिए अपने आप को बनाना एकमात्र तरीका है। मैं इस खूबसूरत और आश्चर्यजनक ग्रह पृथ्वी पर रहने के अवसर के लिए आभारी हूँ। सुबह मैं कृतज्ञता की भावना से जागता हूँ। व्यक्ति जितना अधिक सुरक्षा चाहता है, उतना ही वह अपने जीवन से नियंत्रण खो देता है।

नियम 9. कोशिश

हम उन चीजों पर काम करने की कोशिश करते हैं, जिन्हें भविष्य में करोड़ों-अरबों लोग हर दिन उपयोग में लाएँगे। प्रभावी संचार में 20 फीसदी हिस्सा आपके ज्ञान का है और 80 फीसदी हिस्सेदारी उस ज्ञान के बारे में आपकी संवेदना (कैसा महसूस करते हैं) की है।

नियम 10. सुदृष्टिकोण

हम गहन कंप्यूटर विज्ञान का उपयोग करने की कोशिश करते हैं, ताकि समस्याओं को सुलझाने के लिए हमें एक सुदृष्टिकोण प्राप्त हो सके। हम अपने अवचेतन मन में जो कुछ भी सोचते हैं और निरंतर उसकी पुनरावृत्ति करते रहते हैं वह एक दिन वास्तविकता बन जाएगी।

□

स्वामी विवेकानंद

12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता (अब कोलकाता) में स्वामी विवेकानंद ने उस समय अवतार लिया, जब यहाँ हिंदू धर्म के अस्तित्व पर संकट के बादल मँडरा रहे थे। पंडितों व पुरोहितों ने हिंदू धर्म को घोर आडंबरवादी और अंधविश्वासपूर्ण बना दिया था। ऐसे में स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म को एक पूर्ण पहचान प्रदान की। तीस वर्ष की उम्र में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो, अमेरिका में विश्व धर्म संसद् में हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया और इसे सार्वभौमिक पहचान दिलवाई। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने एक बार कहा था, "यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो स्वामी विवेकानंद को पढ़िए। उनमें आप सबकुछ सकारात्मक ही पाएँगे, नकारात्मक कुछ भी नहीं।"

स्वामी विवेकानंद ईश्वर के सच्चे प्रतिनिधि थे और सब पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेना ही उनकी विशिष्टता थी। वे केवल संत ही नहीं थे, एक महान् देशभक्त, प्रखर वक्ता, ओजस्वी विचारक, रचनाधर्मी लेखक और करुण मानव-प्रेमी भी थे। अमेरिका से लौटकर उन्होंने देशवासियों का आह्वान करते हुए कहा था, "नया भारत निकल पड़े मोदी की दुकान से, भड़भूजे के भाड़ से, कारखाने से, हाट से, बाजार से; निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से।" और जनता ने स्वामीजी की पुकार का उत्तर दिया। वह गर्व के साथ निकल पड़ी। गांधीजी को आजादी की लड़ाई में जो जन-समर्थन मिला, वह विवेकानंद के आह्वान का ही फल था। इस प्रकार, वे भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के भी एक प्रमुख प्रेरणा-स्रोत बने। 39 वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में स्वामी विवेकानंद जो काम कर गए, वे आनेवाली अनेक शताब्दियों तक पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे। 4 जुलाई, 1902 को वे महासमाधिस्थ हो गए।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. लक्ष्य-प्राप्ति तक रुको मत

हे युवाओ! उठो, जागो और लक्ष्य-प्राप्ति तक रुको नहीं। पीछे मत देखो, आगे देखो—अनंत ऊर्जा, अनंत उत्साह, अनंत साहस और अनंत धैर्य—तभी महान् कार्य किए जा सकते हैं। प्रयत्न करते रहो; जब तुम्हें अपने चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार दिखता हो, तब भी मैं कहता हूँ कि प्रयत्न करते रहो! किसी भी परिस्थिति में तुम हारो मत, बस, प्रयत्न करते रहो! तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य जरूर मिलेगा, इसमें जरा भी संदेह नहीं।

नियम 2. सब संभव

कभी यह मत सोचिए कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है। ऐसा सोचना सबसे बड़ा विधर्म है। अगर कोई पाप है तो यह कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य निर्बल हैं। ब्रह्मांड की सारी शक्तियाँ पहले से हमारी हैं। वे हम ही हैं, जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है!

नियम 3. लक्ष्य-निर्धारण

सर्वप्रथम हमें अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। जिसके जीवन में ध्येय नहीं है, जिसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है, उसका जीवन व्यर्थ है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे लक्ष्य एवं कार्यों के पीछे शुभ उद्देश्य होना चाहिए। जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए केवल करना शेष रह जाता है। जीवन में एक ही

लक्ष्य साधो और दिन-रात उस लक्ष्य के बारे में सोचो और फिर जुट जाओ उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए। हमें किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए।

नियम 4. आत्मविश्वास

जीवन में जो तय किया है या जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक है—अपने आप में विश्वास। आत्मविश्वास सफलता का रहस्य है। यदि हमें अपने आप पर ही विश्वास नहीं है तो हमारा कार्य किस प्रकार सफल होगा? जो भी कार्य करो, आस्था और विश्वास के साथ। आत्मविश्वास वीरता का सार है। सफलता के लिए जरूरी है अपने आप पर मान करना, अभिमान करना, विश्वास एवं लगन के साथ जुटे रहना। धैर्य और स्थिरता से काम करना, यही एक मार्ग है। यदि तुम में विश्वास है, तब प्रत्येक कार्य में तुम्हें सफलता मिलेगी। फिर तुम्हारे सामने कैसी भी बाधाएँ क्यों न हों, कुछ समय बाद संसार तुमको मानेगा ही। जब तक तुम पवित्र होकर अपने उद्देश्य पर डटे रहोगे, तब तक तुम कभी निष्फल नहीं होओगे। तभी महान् कार्य किए जा सकते हैं।

नियम 5. समर्पण

समर्पण का अर्थ है—अपने लक्ष्य के प्रति सदैव जागरूक रहना और जीवन के प्रत्येक क्षण में उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करते रहना। किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए समर्पण अनिवार्य है। दृढ़ निश्चय ही विजय है। ध्येय के प्रति पूर्ण संकल्प व समर्पण रखो। इस संसार में प्रत्येक वस्तु संकल्प-शक्ति पर निर्भर है। शुभ उद्देश्य के लिए सच्ची लगन से किया हुआ प्रयत्न कभी निष्फल नहीं होता। समर्पण से कार्य को पूरा करने की लगन ही युवाओं को सफलता प्रदान कर सकती है। जीवन में नैतिकता, तेजस्विता और कर्मण्यता का अभाव नहीं होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी महान् कार्य धीरे-धीरे होते हैं; परंतु पवित्रता, धैर्य तथा प्रयत्न द्वारा सारी बाधाएँ दूर हो जाती हैं।

नियम 6. चरित्र व आचरण की महत्ता

संस्कार, सुविचार, संकल्प, समर्पण व सिद्धता—इस पंचामृत के सम्मिलित स्वरूप का नाम है—सफलता। वही समाज उन्नति और उपलब्धियों के चरम शिखर पर पहुँच सकता है, जहाँ व्यक्ति में चरित्र होता है। भारत की सत्य-सनातन संस्कृति व्यक्ति के चरित्र के निर्माण में सहायक बनती है। आवश्यक है कि आप चरित्र व आचरण की महत्ता को समझें और सभ्यता, शालीनता एवं विनम्रता को अपनाएँ।

नियम 7. संगठन

वर्तमान युग संगठन का युग है। व्यक्तिगत स्वार्थों का उत्सर्ग, सामाजिक प्रगति के लिए कार्य करने की परंपरा जब तक प्रचलित नहीं होगी, तब तक कोई राष्ट्र सच्चे अर्थों में सामर्थ्यवान् नहीं बन सकता। वर्तमान समय में सामूहिक आत्मविश्वास के जागरण की अत्यंत आवश्यकता है। उदात्त ध्येय के लिए संगठित शक्ति का समर्पित होना अनिवार्य है। विचारवान् और उत्साही व्यक्तियों का एक छोटा सा समूह इस संसार को बदल सकता है। वास्तव में, इस संसार को संगठित शक्ति ने ही बदला है।

नियम 8. असंभव को भी संभव करना

जीवन में सतत आगे बढ़ते रहना हमारा कर्तव्य है। जीवन-पथ में अनेक बाधाएँ आती हैं; परंतु क्रमशः समस्त प्रकार की बाधाओं को दूर करके, उससे ऊपर उठकर असंभव को भी संभव किया जा सकता है।

नियम 9. सफलता के माध्यम

आगे बढ़ो और याद रखो—धैर्य, साहस, पवित्रता और अनवरत कर्म सफलता के माध्यम हैं।

नियम 10. पाँच सूत्र

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता-प्राप्ति के लिए आवश्यक है—सद्गुण, सद्व्यवहार, सदाचार, सत् संकल्प। चरित्र-निर्माण के पाँच सूत्र हैं—आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मत्याग। उपर्युक्त पाँच तत्त्वों के अनुशीलन से व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व तथा देश व समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है।

□

जोसेफ मर्फी

जोसेफ मर्फी आयरिश मूल के मनोवैज्ञानिक लेखक थे, जिन्होंने अमेरिकी नागरिकता प्राप्त की। जोसेफ मर्फी अपनी पुस्तक 'आपके अवचेतन मन की शक्ति' के लिए विश्व-प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म 20 मई, 1898 को आयरलैंड में हुआ। 1920 के दशक में वे अमेरिका चले गए। इस दौरान वे अमेरिका के न्यूयॉर्क में रहे और वहाँ उन्होंने 'चर्च ऑफ द हीलिंग क्राइस्ट' जाना शुरू कर दिया। अध्यात्म और मन की शक्ति के विषय में ज्ञान प्राप्त करने हेतु वे भारत भी आए। यहाँ उन्होंने संतों से भेंट की और हिंदू दर्शन को समझने का प्रयास किया। डॉ. जोसेफ मर्फी अंतरराष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त लेखक, शिक्षक और वक्ता थे। उन्होंने काफी समय तक अध्ययन किया और कई वर्षों के शोध के बाद उन्हें विश्वास हो गया कि हममें से प्रत्येक के भीतर एक विराट् शक्ति हमारे अवचेतन मन की शक्ति है, जो हमारे जीवन का कायाकल्प कर सकती है। उन्होंने 30 से अधिक स्वयं-सहायता पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'द पॉवर ऑफ सबकॉन्शियस माइंड' सार्वकालिक बेस्टसेलिंग पुस्तकों में से एक है। इस पुस्तक की सफलता के बाद डॉ. मर्फी संसार भर में हजारों लोगों के समक्ष व्याख्यान देने लगे और अपने दैनिक रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से उन्होंने लाखों लोगों को संबोधित किया। इस प्रकार, उन्होंने लोगों को बताया कि उनकी बताई बातों पर अमल करके कितने ही लोगों ने अपने जीवन में किस तरह के क्रांतिकारी परिवर्तन किए। अवचेतन मन की शक्ति को उद्घाटित करनेवाले इस महान् लेखक का 83 वर्ष की आयु में 16 दिसंबर, 1981 को कैलिफोर्निया में देहावसान हो गया।

जोसेफ मर्फी के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सफल जीवन के लिए

आप एक पूर्ण, सुखी और सफल जीवन जीने के लिए आवश्यक सभी उपकरणों के साथ पैदा हुए हैं। आप जीतने के लिए, हराने के लिए, सभी बाधाओं से ऊपर उठने के लिए पैदा हुए हैं और अपनी भीतरी महिमा एवं सुंदरता का प्रदर्शन करने के लिए पैदा हुए हैं। सभी शक्तियाँ, गुण, लक्षण और परमेश्वर के पहलू आपके भीतर हैं। आपका जीवन परमेश्वर का जीवन है और वह जीवन अब आपका जीवन है। परमेश्वर जो कुछ भी करते हैं, हमेशा सफल होते हैं, चाहे एक पौधे का रोपण हो या ब्रह्मांड का। आप अनंत के साथ हैं और आप असफल नहीं हो सकते। आपके अवचेतन मन की गहराई में असीम शक्ति है, अनंत ज्ञान का भंडार है। अनंत है वह, जिसकी आपको जरूरत है। वह सब आपका ही इंतजार कर रहा है—अवचेतन मन से संपर्क बनाकर उसे बाहर निकालने के लिए।

नियम 2. अवचेतन मन

आप अपने अवचेतन मन की छिपी शक्ति से संपर्क करके, उसे सीखकर अपने जीवन में अधिक शक्ति, अधिक धन, अधिक स्वास्थ्य, अधिक खुशी और अधिक संपन्नता ला सकते हैं। आपको इस शक्ति को कहीं और से हासिल करने की आवश्यकता नहीं है, पहले से ही यह आपके पास है; लेकिन आप इससे अनजान हैं। आपकी अवचेतन गहराई के भीतर अनंत ज्ञान व अनंत शक्ति छिपी है, जो विकास और अभिव्यक्ति की प्रतीक्षा कर रही है। अपनी गहराई की इन क्षमताओं को पहचानें और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ें। आपका अवचेतन मन आपको वह सारा ज्ञान उपलब्ध करा सकता है, जो आप जानना चाहते हैं, बशर्ते आप अपने मस्तिष्क को खुला रखें और ग्रहणशील हों। आप नए विचार गढ़ सकते हैं, जिनसे आप नए आविष्कार, नई खोज कर सकते हैं या पुस्तकें एवं नाटक लिख सकते हैं। इसके माध्यम से आप जीवन में सही रास्ता और लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। अपने अवचेतन मन की शक्ति से आप आदर्श साथी को आकर्षित कर सकते हैं, साथ ही सही व्यापार

सहयोगी को भी। यह आपके घर के लिए सही खरीदार ढूँढ़ सकता है और आपको आपकी जरूरत के पैसे तथा वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान कर सकता है।

नियम 3. आत्मविश्वास

आत्मविश्वास किसी भी कार्य के लिए आवश्यक तत्त्व है, क्योंकि एक बड़ी खाई को दो छोटी छलाँगों में पार नहीं किया जा सकता। आत्मविश्वास के साथ आप गगन चूम सकते हैं और आत्मविश्वास के बिना मामूली सी उपलब्धि भी पकड़ से परे है। आत्मविश्वास हमारे उत्साह को जगाकर हमें जीवन में महान् उपलब्धियों के मार्ग पर ले जाता है। यह आत्मविश्वास रखो तो तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो। आत्मविश्वास है तो आप शुरू करने से पहले ही जीत चुके हैं। दरअसल, लोगों का विश्वास पैसे से अधिक मूल्यवान् है।

नियम 4. आलोचना

आपको आलोचना से चोट नहीं पहुँचाई जा सकती, जब आपको पता हो कि आप अपने विचारों, प्रतिक्रियाओं और भावनाओं के स्वामी हैं। इससे आपको प्रार्थना करने और दूसरे को आशीर्वाद देने का अवसर मिलता है, जिससे आपको स्वयं को आशीर्वाद मिलता है। आलोचना आपकी सहमति के बिना आपको चोट नहीं पहुँचा सकती। यदि कोई व्यक्ति आपकी आलोचना करता है और ये दोष आपके भीतर हैं तो आनंद लें, धन्यवाद दें और उसकी टिप्पणियों की सराहना करें। यह आलोचना आपको अपनी गलती विशेष को ठीक करने का अवसर देती है।

नियम 5. महान् उद्देश्य

सफलता इसमें है कि वह चीज, जो आप करना पसंद करते हैं, पता करें, फिर करें। मनुष्य का उद्देश्य महान्, व्यापक और अधिक परोपकारी होना चाहिए। उसे दूसरों की सेवा करनी चाहिए और आपको यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि आप जिस चीज को करना चाहते हैं, वह कहीं आपकी सफलता को कम तो नहीं कर देती।

नियम 6. उपचार-शक्ति

अपने आप को अकसर याद दिलाएँ कि उपचार की शक्ति आपके अवचेतन मन में है। आपके अवचेतन में एक चमत्कारी उपचार-शक्ति है, जो परेशान मन और टूटे हुए दिल को ठीक कर सकती है। यह दिमाग के बंद दरवाजे को खोल सकती है और आपको मुक्त कर सकती है। यह आपको सभी प्रकार की सामग्री और शारीरिक बंधन से मुक्त कर सकती है। उपचार की केवल एक प्रक्रिया है और वह विश्वास है। केवल एक ही उपचार-शक्ति है, अर्थात् आपका अवचेतन मन। विभिन्न मंदिरों में आप जो चमत्कारी उपचार सुनते हैं, वे कल्पना और अंधविश्वास के कारण हैं, जो अवचेतन मन पर कार्य करते हैं, जिससे उपचार-शक्ति प्रवाहित होती है। हम सभी प्राकृतिक जन्मजात चिकित्सक हैं, क्योंकि अनंत उपचार शक्ति हमारे भीतर उपस्थित है और हम इसे अपने विचारों एवं विश्वासों से जोड़ सकते हैं। आप अपने आप को स्वास्थ्य और सौहार्द में पुन: संयोजित कर सकते हैं, क्योंकि आप सद्भाव, जीवन-शक्ति, पूर्णता, सौंदर्य और सिद्धि पर अकसर ध्यान करते हैं।

नियम 7. कृतज्ञता

कृतज्ञता अनंत ईश्वर के साथ तालमेल रखती है और ब्रह्मांड की रचनात्मक शक्तियों से जुड़ी होती है तथा आप अनगिनत आशीषों को आकर्षित करनेवाले एक मानसिक व आध्यात्मिक चुंबक बन जाते हैं। मानसिक, आध्यात्मिक और भौतिक धन की पूरी प्रक्रिया को एक शब्द—कृतज्ञता—द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है।

नियम 8. क्रोध : एक तरह का पागलपन

क्रोध एक तरह का पागलपन है। क्रोध मूर्खों के हृदय में ही बसता है। क्रोध वह हवा है, जो बुद्धि के दीप को बुझा देती है। कोई भी क्रोधित हो सकता है। यह आसान है; लेकिन सही व्यक्ति से, सही सीमा में, सही समय पर और सही उद्देश्य के साथ, सही तरीके से क्रोधित होना सभी के वश की बात नहीं है और यह आसान नहीं है। क्रोध पर यदि काबू न किया जाए तो वह जिस चोट के कारण उत्पन्न हुआ, उससे भी कहीं ज्यादा हानि पहुँचा सकता है। हर एक मिनट, जिसमें आप क्रोधित रहते हैं, आप 60 सेकंड की मन की शांति खोते हैं। हर बार जब आप क्रोधित होते हैं, तब आप अपनी ही प्रणाली में जहर घोलते हैं।

नियम 9. खुशी

आपके जीवन की खुशी आपके विचारों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। मैंने पाया है कि खुशी खोजने का एक निश्चित तरीका है कि इसे हर कीमत पर चाहा जाए। यदि आपकी खुशी इस बात पर निर्भर करती है कि कोई और क्या करता है, तो मेरा मानना है कि आपको कोई समस्या है। आपके भीतर जबरदस्त शक्ति है। जब आप इस शक्ति पर पूर्णतः आत्मविश्वास प्राप्त करेंगे तो खुशी आपके पास स्वतः आएगी, फिर आप अपने सपने सच कर सकेंगे। खुशी एक शांत दिमाग की फसल है। शांति, संतुलन, सुरक्षा और दिव्य मार्गदर्शन पर अपने विचारों को केंद्रित करें, आपका मन खुशी का उत्पादक होगा।

नियम 10. जीवन का आनंद

अगर हम बदलते नहीं हैं तो हम बढ़ते नहीं हैं। अगर हम बढ़ते नहीं हैं तो वास्तव में हम जीवन जीते नहीं हैं। जीवन केवल पीछे देखकर समझा जा सकता है; लेकिन इसे आगे देखते हुए जीना चाहिए। जीवन या परमेश्वर आपके विरुद्ध कोई वैर-भाव नहीं रखते। जीवन कभी आपकी निंदा नहीं करता। जीवन आपके हाथ के किसी गंभीर घाव को भर देता है। यदि आप अपनी उँगली जला बैठते हैं तो जीवन आपको क्षमा कर देता है। यह दर्द कम करता है और काट-छाँट को पूर्णता में पुनर्स्थापित करता है। मनुष्य का जीवन आध्यात्मिक व शाश्वत है। जीवन स्वयं-नवीकरणीय, शाश्वत, अविनाशी है और सभी मनुष्यों की वास्तविकता है। सभी लोग मरते हैं, पर वास्तव में सभी लोग जीते नहीं हैं। जीवन का सबसे बड़ा उपयोग इसे किसी ऐसी चीज में लगाने में है, जो इसके बाद भी रहे। जीवन का उद्देश्य है कि उद्देश्य भरा जीवन हो। जीवन से बचकर आप शांति नहीं पा सकते। सबसे आवश्यक चीज है कि आप अपने जीवन का आनंद लें, खुश रहें। बस, यही मायने रखता है।

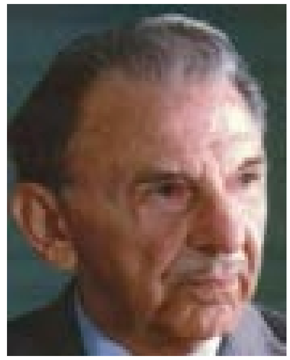

जे.आर.डी. टाटा

जहाँगीर रतनजी दादाभाई टाटा का जन्म 29 जुलाई, 1904 को पेरिस में हुआ। वे रतनजी दादाभाई टाटा और उनकी फ्रांसीसी पत्नी सुजैन ब्रियरे की दूसरी संतान थे। जे.आर.डी. की माँ फ्रांसीसी थीं, इसलिए उनके बचपन का ज्यादा समय फ्रांस में बीता और इसलिए फ्रेंच उनकी पहली भाषा थी। उन्होंने कैथेड्रल और जॉन कोनोन स्कूल, बंबई में अपनी आरंभिक पढ़ाई की और इंजीनियरिंग की पढ़ाई कैंब्रिज विश्वविद्यालय से की। 34 वर्ष की उम्र में वे टाटा संस के चेयरमैन बने। दशकों तक उन्होंने टाटा समूह की कंपनियों का मार्गदर्शन किया। जे.आर.डी. पहले शख्स थे, जिन्हें वर्ष 1929 में भारत में पहला पायलट लाइसेंस मिला। जे.आर.डी. उसूलों के बहुत पक्के व्यक्ति थे। उन्होंने व्यापार में सफलता के साथ-साथ उच्च नैतिक मानदंडों को भी कायम रखा। उनकी अध्यक्षता में टाटा समूह ने नई बुलंदियों को छुआ। उनके काल में टाटा समूह की कंपनियों की संख्या 15 से बढ़कर 100 से ज्यादा हो गई। साथ ही टाटा समूह की परिसंपत्ति 62 करोड़ रुपए से बढ़कर 10 हजार करोड़ रुपए की हो गई। उद्योग तथा राष्ट्र-निर्माण में बेहतरीन योगदान के लिए वर्ष 1992 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। जे.आर.डी. का वर्ष 1993 में 89 वर्ष की आयु में जिनेवा (स्विट्जरलैंड) में निधन हो गया। मरणोपरांत उन्हें पेरिस में दफनाया गया।

जे.आर.डी. टाटा के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जीने का तरीका

ज़िंदगी को थोड़ा खतरनाक तरीके से जिएँ। कभी भी संदेह के साथ शुरू न करें, हमेशा आत्मविश्वास से शुरू करें। यह कभी न कहें कि आप इस चीज को खरीद नहीं सकते। यह गरीब आदमी का नजरिया है। यह पूछो कि उसे कैसे खरीदा जा सकता है?

नियम 2. काम

जब आप काम करते हैं तो ऐसे काम करें, जैसे कि सबकुछ आप ही पर निर्भर करता है। जब आप प्रार्थना करते हैं तो प्रार्थना ऐसे करें, जैसे कि सबकुछ भगवान् पर निर्भर करता है। भगवान् का प्यार इतना वास्तविक है कि उसने आपको साबित करने के लिए बनाया है। भगवान् ने आपको सिर्फ एक मुँह दिया, लेकिन उसने आपको दो कान दिए, ताकि आप जितना बोलते हैं, उससे दोगुना सुनें।

नियम 3. कड़ी मेहनत

गहन सोच और कड़ी मेहनत के बिना कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। छोटे से शुरू करें और बड़े सपने देखें। दूसरों को अपने सपनों को प्राप्त करने में मदद करें और आप अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे।

नियम 4. सफलता

भौतिक दृष्टि से कोई सफलता या उपलब्धि तब तक सार्थक नहीं कही जा सकती, जब तक कि वह देश और उसके लोगों की जरूरतों या हितों की सेवा नहीं करती है और निष्पक्ष व ईमानदार संसाधनों द्वारा प्राप्त नहीं की जाती।

नियम 5. अप्राप्य लक्ष्य

हमारी अधिकांश समस्याएँ खराब कार्यान्वयन, गलत प्राथमिकताओं और अप्राप्य लक्ष्यों के कारण हैं। व्यवसायी को कामकाजी पंडित होना चाहिए। उन्हें, जो वे करते हैं, उसके बारे में किताबी पंडित होने की जरूरत नहीं है।

नियम 6. धन

धन खाद की तरह होता है। जब आप इसे ढेर करते हैं तो यह बदबू मारता है; जब आप इसे फैलाते हैं तो यह बढ़ता है। पैसा बनाने के लिए पैसे की जरूरत नहीं होती। पैसा वास्तव में सिर्फ एक विचार है। पैसों की लत मत लगाइए। सीखने के लिए काम करिए। पैसों के लिए काम मत करिए। ज्ञान के लिए काम करिए। पैसे का मोह सभी बुराइयों की जड़ है। पैसे की कमी सभी बुराइयों की जड़ है।

नियम 7. अच्छे मानवीय संबंध

अच्छे मानवीय संबंध न केवल महान् व्यक्तिगत पुरस्कार-प्रदाता होते हैं, बल्कि किसी भी उद्यम की सफलता के लिए अपरिहार्य भी होते हैं। हार केवल उन लोगों को प्रभावित करती है, जो फिर कोशिश करने से इनकार करते हैं।

नियम 8. उत्पादकता और दक्षता

उत्पादकता और दक्षता निरंतर कड़ी मेहनत के साथ गुणवत्ता, उच्चतम मानकों पर जोर देते हुए कदम-दर-कदम आगे बढ़ते हुए हासिल की जा सकती हैं।

नियम 9. नेतृत्व

एक नेता होने के लिए आपको अनिवार्य रूप से स्नेह के साथ मनुष्यों का नेतृत्व करना होगा। हर एक विकलांगता, जो तुममें है, उसके बदले में चुनौतियों से पार पाने के लिए तुम्हारे अंदर कहीं अधिक क्षमता है। भय सभी की सबसे बड़ी विकलांगता है।

नियम 10. स्वच्छता और विवेक

स्वच्छता पूर्ण मानकों की कसौटी है तथा विवेक सबसे अच्छा गुणवत्ता निरीक्षक व परीक्षक है। सही दिशा में छोटे-छोटे कदम उठाएँ। चाहे आपके कदम कितने ही छोटे क्यों न हों, अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

जेफ बेजोस

जेफ बेजोस एक अमेरिकन टेक्नोलॉजी उद्यमी, निवेशक और परोपकारी हैं। जेफ का जन्म 12 जनवरी, 1964 को अल्बुकर्क, न्यू मेक्सिको, अमेरिका में हुआ। जेफ का पूरा नाम जेफरी प्रेस्टन बेजोस है। बेजोस को लोग उनकी अप्रतिम सफलता के लिए जानते हैं और ये अब दुनिया के सबसे अमीर इनसान बन चुके हैं।

अमेरिकी उद्यमी जेफ बेजोस 'अमेजन डॉट कॉम' के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा 'वाशिंगटन पोस्ट' के मालिक हैं। बेजोस ने प्रिंस्टन विश्वविद्यालय से कंप्यूटर साइंस और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग का अध्ययन किया। स्नातक के बाद उन्होंने 'वॉल स्ट्रीट' में काम किया; मगर जल्दी ही 'अमेजन डॉट कॉम' खोलने के लिए अपनी आकर्षक नौकरी छोड़ दी। उन्होंने एक वर्चुअल बुक स्टोर खोला, जो इंटरनेट की सबसे बड़ी सफल कहानियों में से एक बन गया। वर्ष 2013 में बेजोस ने 'वाशिंगटन पोस्ट' को 250 मिलियन डॉलर में खरीदा। उनके सफल व्यापारिक उद्यमों ने आज उन्हें दुनिया के सबसे अमीर लोगों में से एक बना दिया है।

जेफ बेजोस के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. मौजूदा को बेहतर बनाएँ

जरूरी नहीं है कि हर बार कुछ नया ही आपको सफलता दिलाए। आप जो हैं, उसे और बेहतर बनाकर भी सफलता पा सकते हैं। सामंजस्य इस तरह से जरूरी है, क्योंकि जीवन हमेशा गुलाबी नहीं होता है, लेकिन यह हमेशा रहने लायक है।

नियम 2. बदलते समय के बावजूद बदलाव नहीं

अकसर लोग सवाल करते हैं कि अगले दस सालों में क्या बदलने वाला है? वैसे तो यह एक दिलचस्प सवाल है, लेकिन उससे भी ज्यादा दिलचस्प सवाल यह है कि अगले दस सालों में क्या नहीं बदलने वाला है? मेरा मानना है कि दूसरा सवाल ही ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। आपको ऐसी ही चीजों को ध्यान में रखते हुए बिजनेस स्ट्रेटेजी बनानी चाहिए, जिनमें बदलते समय के बावजूद बदलाव न हो, जो हमेशा बनी रहें।

नियम 3. दीर्घकालीन सोच

यदि आप दीर्घकालिक सोचें तो जीवन संबंधी अच्छे निर्णय ले सकते हैं, जिन पर आपको बाद में अफसोस नहीं होगा। हमेशा दीर्घकालिक सोच और 'न्यूनतम पश्चात्ताप' की नीति का पालन करें। कोई भी नया काम करते समय तात्कालिक नफा-नुकसान के बारे में न सोचें। दूरदर्शिता का इस्तेमाल करें और लंबे समय के बारे में सोचें, भले ही निकट भविष्य में नुकसान हो जाए।

नियम 4. नवाचार

नया काम करना सफल होने का सबसे आसान रास्ता है। विकास न करना खतरनाक होता है। हम बहुत से अँधेरे रास्तों पर आगे बढ़ते हैं और कभी-कभार हम ऐसी चीजें खोज लेते हैं, जो सचमुच काम करती हैं।

नियम 5. कम मार्जिन और ज्यादा वॉल्यूम

ज्यादा मार्जिन में आदमी आलसी बन जाता है। कम मार्जिन पर सफल होने के लिए आपको मशक्कत करनी पड़ती है, कार्य-कुशल बनना पड़ता है। अमेजन ने लागत कम करने और कार्य-कुशलता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया, ताकि ग्राहकों को कम कीमत में सामान मिल सके। इस नीति से लाभ यह होता है कि अधिक ग्राहक आकर्षित होते हैं। ग्राहक बार-बार सामान खरीदते हैं, मौखिक प्रचार होता है और कंपनी की अच्छी छवि बनती है। कम मार्जिन की नीति की बदौलत ही अमेजन ने इतना बड़ा कारोबार खड़ा किया है।

नियम 6. ग्राहक-सेवा पर ध्यान

कारोबार में कहा जाता है, 'ग्राहक पहले नंबर पर आता है'; लेकिन अधिकतर कंपनियों के काम इसके विपरीत होते हैं। अमेजन ने ग्राहक की सेवा को सर्वोपर माना है। ग्राहकों से महत्त्वपूर्ण कुछ नहीं है। ग्राहक सेवा ही अमेजन की सफलता का सबसे बड़ा कारण है। यदि कोई एक कारण है, जिसकी बदौलत हमने पिछले छह वर्षों में इंटरनेट पर हमारे साथियों से बेहतर प्रदर्शन किया है तो वह यही है कि हमने लेजर की तरह ग्राहक-अनुभव पर ध्यान केंद्रित किया है। हमने अमेजन पर बिकनेवाले सामानों की संख्या भी इसलिए बढ़ाई, ताकि ग्राहकों की ज्यादा-से-ज्यादा सेवा कर सकें। अमेजन इ-कॉमर्स की वह मंजिल बनना चाहती है, जहाँ ग्राहकों को हर वह चीज मिल जाए, जो वे ऑनलाइन खरीदना चाहते हैं।

नियम 7. मौखिक प्रचार

जब हमने यू.एस. अमेजन शुरू किया, तब हमारे पास मार्केटिंग के लिए बजट नहीं था, इसलिए विज्ञापन देने का कोई प्रश्न भी नहीं था। बाद में हमने सोचा कि सबसे अच्छा विज्ञापन यही है कि ग्राहक अपने दोस्तों-नातेदारों के सामने हमारी प्रशंसा करें। यदि आप बेहतरीन अनुभव प्रदान करते हैं तो ग्राहक एक-दूसरे को इसके बारे में जरूर बताते हैं। मौखिक प्रचार बहुत शक्तिशाली होता है, इसलिए हमने अपने प्रोडक्ट व सर्विस को इतना उत्कृष्ट बनाया कि ग्राहक इसकी प्रशंसा और मौखिक प्रचार करें।

नियम 8. सक्सेस मंत्र

आठ घंटे की नींद, 10 बजे पहली मीटिंग और दिन में सिर्फ तीन बड़े फैसले मेरी सफलता के मंत्र हैं। सफलता कुछ सरल अनुशासनों के रोजाना पालन से ज्यादा कुछ नहीं है। स्वर्ग असली है और भगवान् असली हैं, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना है कि उसके साथ चलना असली है।

नियम 9. अच्छी नींद से दिन की शुरुआत

रात की अच्छी नींद के साथ ही मेरे दिन की शुरुआत होती है। मैं रात में जल्दी सोता हूँ। मेरा मानना है कि अच्छी नींद लेने से ही आपके अगले दिन की अच्छी शुरुआत होती है। आप अच्छे से सोच पाते हैं और दिन में भी आपमें ऊर्जा बनी रहती है। सुबह की शुरुआत मैं एक कप कॉफी के साथ करता हूँ। कॉफी पीते-पीते ही मैं अखबार पढ़ता हूँ। बच्चों के स्कूल जाने से पहले मैं उनके साथ नाश्ता करता हूँ। यह मेरे लिए एक नियम है।

नियम 10. ब्रांड

किसी कंपनी के लिए एक ब्रांड एक व्यक्ति के लिए उसकी साख की तरह है। आप कठिन चीजों को करने का प्रयास करके साख पाते हैं। उत्कृष्टता हमेशा बिकती है। वही ब्रांड, जो आनेवाले वर्षों में सफल होंगे, जिनका उद्देश्य सिर्फ मुनाफा कमाने से अलग होगा।

स्टीफन हॉकिंग

स्टीफन हॉकिंग का जन्म 8 जनवरी, 1942 को ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंड में हुआ। ऑक्सफोर्ड से भौतिक-शास्त्र में विशेषज्ञता हासिल करने के बाद उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय में ब्रह्मांडिकी एवं सामान्य आपेक्षिकता पर अनुसंधान आरंभ किया। 21 वर्ष की उम्र में उन्हें एक असाध्य रोग मोटर न्यूरॉन ने जकड़ लिया। यह रोग शरीर-संचालन एवं वाक्-शक्ति को प्रभावित करता है। इसके बावजूद वे अनुसंधान में लगे रहे। सन् 1966 में उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि मिली। इसके बाद उन्होंने 'ब्लैक होल्स' पर अध्ययन आरंभ किया। सन् 1973 में उन्होंने इस बात पर अविश्वास प्रकट किया कि 'ब्लैक होल्स' अंतरिक्ष में ऊर्जा व कणों का उत्सर्जन कर सकते हैं और यहाँ तक कि तेज ऊर्जा का फव्वारा छोड़ सकते हैं। उनकी यह विस्फोटक खोज सन् 1974 में 'नेचर' पत्रिका में 'ब्लैक होल एक्सप्लोजन' शीर्षक से प्रकाशित हुई। सन् 1977 में वे कैंब्रिज में गुरुत्वाकर्षणीय भौतिकी के प्रोफेसर नियुक्त हुए और 1979 में कैंब्रिज में गणित के ल्यूकेसियन प्रोफेसर बने। सन् 1663 में आइजक न्यूटन इस पद पर आसीन थे। सन् 1988 में उनकी 'ए ब्रीफ हिस्टरी ऑफ टाइम' (समय का संक्षिप्त इतिहास) पुस्तक प्रकाशित हुई, जो 1998 में 'गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' द्वारा सदाबहार सर्वाधिक बिक्रीवाली पुस्तक के रूप में दर्ज हुई। 11 मार्च, 2018 को कैंब्रिज में उनका निधन हो गया।

स्टीफन हॉकिंग के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. बोलना

हमारी बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी उपलब्धि हमें बोलने से मिलती है और हमारी बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी असफलता न बोलने में है। कभी भी अपनी मानसिकता को असफलता की ओर मत ले जाइए, क्योंकि हमारी सबसे बड़ी आशा ही हमारा भविष्य बनती है। इसलिए हमें सभी से हमेशा बोलते रहना चाहिए।

नियम 2. प्यार, खुशी और सुंदरता

कुछ लोगों का ऐसा मानना है कि प्यार, खुशी और सुंदरता जैसी बातें किसी अलग समुदाय के लोगों के लिए बनी हैं, जो विज्ञान से अलग हों; लेकिन मुझे ऐसा कभी नहीं लगता। यह खुशी की अपेक्षाओं में है कि हमें बहुत खुशी मिलती है और खुशी की उम्मीद करने के लिए साहस चाहिए।

नियम 3. चीज की महत्ता

कोई भी व्यक्ति जब किसी चीज की उम्मीद पूरी तरह खो देता है, तब उसे सचमुच उस चीज की महत्ता समझ में आती है, जो उसके पास है। दृष्टि वह है, जो आप अपनी आँखों से देखते हैं। विजन वह है, जो आप अपने दिमाग से देखते हैं।

नियम 4. भगवान् का पासा

भगवान् सिर्फ पासा नहीं खेलते, बल्कि कभी-कभी उसे ऐसी जगह फेंकते हैं कि वे दिखाई भी नहीं देते हैं। प्रत्येक वह चीज, जिसे हम देख सकते हैं, वह उसकी परछाईं है, जिसे हम देख नहीं सकते। बदलाव का सबसे कठिन हिस्सा अनजान रास्ते से होकर गुजरना होता है।

नियम 5. सफलता पाना

भले ही आपके जीवन में कितनी भी परेशानियाँ आएँ या आपको अपना जीवन कितना ही कठिन लगे, अगर आप सफलता पाना चाहते हैं तो हमेशा कुछ-न-कुछ करते रहें, जिससे आप जरूर सफल होंगे।

नियम 6. विकलांगों को सलाह

अन्य विकलांग लोगों के लिए मेरी सलाह है कि उन चीजों पर ध्यान दें, जिन्हें अच्छी तरह से करने से आपकी विकलांगता नहीं रोकती और उन चीजों के लिए अफसोस नहीं करें, जिन्हें करने में ये बाधा डालती हैं। आत्मा और शरीर दोनों से विकलांग न बनें।

नियम 7. समस्याओं का समाधान

यदि आप कहीं फँसे हुए हों तो वहाँ उग्र होना अच्छी बात है। हम सिर्फ समस्याओं के बारे में सोचते रहते हैं, लेकिन कभी उसे हल करने की कोशिश नहीं करते।

नियम 8. गुस्सा या शिकायत

यदि मैं अपनी विकलांगता के लिए गुस्सा करूँ तो यह मेरे लिए समय को व्यर्थ गँवाने जैसा होगा। यदि आप हमेशा गुस्सा या शिकायत करते हैं तो लोगों के पास आपके लिए वक्त नहीं रहेगा।

नियम 9. जीने का अर्थ और उद्देश्य

आपका कार्य ही आपको जीवन जीने का अर्थ एवं उद्देश्य देता है और इसके बिना आपका जीवन बिलकुल अधूरा है। बहुत सारे लोग सोचने में बहुत आलसी होते हैं। कुछ नया सीखने की बजाय वे एक ही विचार के बारे में दिन-रात सोचते हैं।

नियम 10. परफेक्शन

अगली बार अगर कोई यह शिकायत करे कि आपने गलती कर दी तो उन्हें बताएँ कि यह अच्छी बात है, क्योंकि बिना परफेक्शन के आप कभी कुछ छोड़ नहीं सकते। जब आप अपने ज्ञान की सीमाओं तक पहुँच जाते हैं तो कुछ गलतियाँ करने का समय आ जाता है।

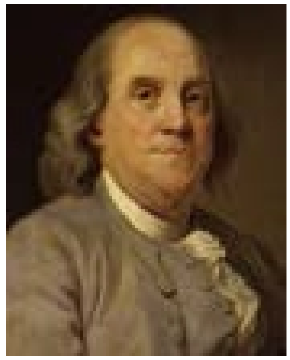

बेंजामिन फ्रेंकलिन

बेंजामिन फ्रेंकलिन को संयुक्त राज्य अमेरिका का जनक कहा जाता है। फ्रेंकलिन लेखक, मुद्रक, व्यंग्यकार, राजनीतिक विचारक, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, आविष्कारक, नागरिक कार्यकर्ता, राज-मर्मज्ञ, सैनिक और राजनयिक थे। उनका जन्म बोस्टन, मैसाचुसेट्स के मिल्क स्ट्रीट में 17 जनवरी, 1706 को हुआ। एक प्रिंटिंग प्रशिक्षु के रूप में कार्य सीखने के बाद सन् 1730 में फ्रेंकलिन ने अपना खुद का एक प्रिंटिंग कारखाना स्थापित किया और एक समाचार-पत्र 'द पेंसिल्वेनिया गजेट' निकाला। वे एक आविष्कारक भी थे। सन् 1750 में एक प्रयोग द्वारा उन्होंने सिद्ध किया कि आकाशीय बिजली विद्युत् है। 1736 में फ्रेंकलिन ने अमेरिका की प्रथम स्वयंसेवक अग्निशमन कंपनियों में से एक 'यूनियन फायर कंपनी' का गठन किया। सन् 1748 में फ्रेंकलिन राजनीति में गए और काउंसलर चुने गए। राजनेता के रूप में ग्रेट ब्रिटेन और फिर फ्रांस के साथ उपनिवेशों के संबंधों से संबद्ध उनकी राजनयिक सेवाएँ यादगार रही हैं। सन् 1785 में फ्रेंकलिन ने अमेरिकी स्वतंत्रता के एक विजेता के रूप में जॉर्ज वॉशिंगटन के बाद दूसरा स्थान ग्रहण किया। उनकी मृत्यु 84 साल की उम्र में 17 अप्रैल, 1790 को हुई। उन्हें फिलाडेल्फिया में क्राइस्ट चर्च बेरिअल ग्राउंड में दफनाया गया।

बेंजामिन फ्रेंकलिन के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. संयम

इतना ही खाओ कि आलस्य न आए। इतना न पिओ कि नशा हो जाए। कभी-कभी जिंदगी की शुरुआत में जो आपके लिए सही होता है, वह जिंदगी के अंत में आपके लिए सही नहीं होता। विकास का तात्पर्य धन और वैभव नहीं, चरित्र और विवेक होता है। अत: अपना आत्म-अवलोकन करें।

नियम 2. मौन

वही बोलो, जिससे तुम्हारा या दूसरों का लाभ हो। क्षुद्र बातचीत से बचो। सत्य से डराना अच्छी बात है, सत्य से डरना नहीं। अत: इसका सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहें। सबसे बड़ी त्रासदी बुरे व्यक्तियों का अत्याचार और दमन नहीं, बल्कि उस पर अच्छे लोगों का मौन रहना है।

नियम 3. व्यवस्था

तुम्हारी सभी चीजों की अपनी जगह होनी चाहिए। तुम्हारे हर काम का अपना समय होना चाहिए। मैं कोशिश करने और फिर कोशिश करनेवाला हूँ; क्योंकि जिस क्षण मैं हार मानता हूँ, वह क्षण है, जब मैं असफल रहता हूँ।

नियम 4. संकल्प

तुम्हारे लिए जो आवश्यक है, उसे करने का संकल्प लो। जिसे करने का संकल्प तुमने लिया है, उसे बिना असफल हुए तुम करो। मैं भगवान् की रचना हूँ, उसकी योजना के अनुसार डिजाइन किया हुआ। मेरे पास जो नहीं है, उसके लिए भगवान् से नाराज होने का विकल्प है, या जो मेरे पास है, उसके लिए आभारी होने का।

नियम 5. मितव्ययिता

अपने या दूसरों के भले के लिए ही खर्च करो, अर्थात् बरबाद मत करो। जिंदगी चीजों के होने के बारे में नहीं है। यह खुद मौजूद होने के बारे में है। आप खुद को उन सभी चीजों से घेर सकते हैं, जो पैसा खरीद सकता है, फिर भी आप उतने ही दु:खी होंगे, जितना कोई इनसान हो सकता है। मैं ऐसे परफेक्ट बॉडी वाले लोगों को जानता हूँ, जिनके पास मैंने जितनी खुशी पाई है, उसकी आधी खुशी भी नहीं है।

नियम 6. श्रम

समय नष्ट मत करो। हमेशा किसी-न-किसी सार्थक काम में लगे रहो। सभी अनावश्यक कार्यों में कटौती करो। हम किसी दिन वाली मानसिकता में आसानी से फँस जाते हैं। किसी दिन मेरे पास वह सारा पैसा होगा, जो मुझे लाइफ एंजॉय करने के लिए चाहिए। किसी दिन मैं अपने परिवार के साथ अधिक समय बिता पाऊँगा। किसी दिन मेरे पास आराम करने के लिए और जो मैं चाहता हूँ, वह करने के लिए ढेर सारा वक्त होगा।

नियम 7. निष्ठा

किसी हानिकारक छल का प्रयोग मत करो। निश्छल और न्यायपूर्ण तरीके से सोचो और यदि बोलो तो तदनुसार बोलो। हमारे जीवन का उस दिन अंत होना शुरू हो जाता है, जिस दिन हम उन मुद्दों के बारे में चुप हो जाते हैं, जो आम समाज के लिए मायने रखते हैं। उन लोगों को क्षमा करें, जिन्होंने आपको ठेस पहुँचाई है।

नियम 8. न्याय

घायल करके किसी को गलत मत बनाओ या वे लाभ देने से मत चूको, जो तुम्हारा कर्तव्य है। अतिवाद से बचो। क्रोध में चोट करने से बचो, तब भी जब तुम्हें लगता है कि वे इसके हकदार हैं। हमें आपस में भाइयों की तरह रहना सीखना होगा या फिर हम सभी का मूर्खों की तरह विनाश हो जाएगा।

नियम 9. स्वच्छता

शरीर, वस्त्र या घर में गंदगी बरदाश्त न करो। तुच्छ बातों पर या आम अथवा अपरिहार्य दुर्घटनाओं से परेशान न हों। कल रात के साथ कल खत्म हो गया। आज एक बिलकुल नया दिन है। कर्तव्य हमें चीजों को अच्छे ढंग से कराता है, लेकिन प्रेम हमें उन्हें खूबसूरती से कराता है।

नियम 10. शुचिता

स्वास्थ्य या संतानोत्पत्ति के लिए ही संसर्ग का विरले प्रयोग करो और नीरसता, कमजोरी या अपने अथवा किसी और की शांति या प्रतिष्ठा के प्रतिकूल इसका प्रयोग न हो। स्वतंत्र होना अपनी जंजीर को उतार देना मात्र नहीं है, बल्कि इस तरह जीवन जीना है कि औरों का सम्मान व स्वतंत्रता बढ़े।

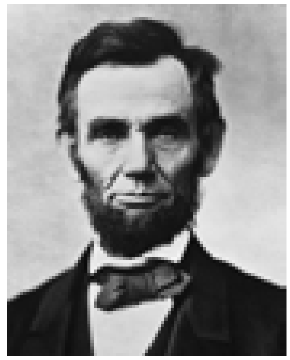

अब्राहम लिंकन

अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का जन्म 12 फरवरी, 1809 को केंटुकी में हुआ। उनका जीवन बिलकुल भी आसान नहीं था। कई कठिन परिस्थितियों से गुजरने के बाद वे अमेरिका के राष्ट्रपति बने। वे वर्ष 1861 से 1865 तक राष्ट्रपति रहे। उन्होंने अमेरिका के सबसे बड़े संकट गृह-युद्ध को शांत किया; साथ ही अमेरिका में दास प्रथा का अंत भी किया। 14 अप्रैल, 1865 को राष्ट्रपति के पद पर रहते हुए ही गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई।

अब्राहम लिंकन के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. संकल्प

हमेशा ध्यान रखें कि काम कितना भी कठिन क्यों न हो, सिर्फ आपका संकल्प ही आपकी सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण है। दूसरी कोई बात आपको सफलता नहीं दिला सकती है। जब हम किसी कार्य को पूरा करने का दृढ़ संकल्प बना लेते हैं तो हमारे शरीर में एक तरह की सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जो कार्य को सफल बनाने में मदद करता है।

नियम 2. असत्य से बढ़कर दूसरा अधर्म नहीं

किसी भी व्यक्ति के पास इतनी अच्छी याददाश्त नहीं है कि वह बहुत अच्छा झूठा बन सके। इसलिए झूठ बोलने से बचें और किसी दूसरे को झूठा बनाने के आरोप से भी बचें। पृथ्वी ने कहा है—‘असत्य से बढ़कर दूसरा अधर्म नहीं है। सबकुछ सह सकती हूँ, झूठे की मार नहीं सह सकती।’ सबसे अच्छा तो यही है कि झूठ का कोई जवाब ही न दिया जाए। झूठ अपनी मौत मर जाता है। उसकी अपनी कोई शक्ति नहीं होती। विरोध पर वह फलता-फूलता है।

नियम 3. जिम्मेदारियाँ

आप आनेवाले कल की जिम्मेदारियों और परेशानियों से बचने के लिए वर्तमान की जिम्मेदारियों से मुँह नहीं मोड़ सकते। अपने जीवन की जिम्मेदारी को स्वीकार करें। इस बात को जान लीजिए कि जहाँ आप पहुँचना चाहते हैं, वहाँ आप ही अपने आप को ले जा सकते हैं। अपने जीवन की जिम्मेदारी लेने की तत्परता ही स्वाभिमान रूपी वसंत का स्रोत बन सकती है।

नियम 4. सफलता

कुछ लोग सफलता हासिल कर लेते हैं तो यह इस बात का सुबूत है कि आप भी सफल हो सकते हैं। सफलता हमारा परिचय दुनिया को करवाती है और असफलता हमें दुनिया का परिचय करवाती है। हिम्मत बताई नहीं, दिखाई जाती है।

नियम 5. तैयारी

किसी पेड़ को काटने के लिए आप मुझे छह घंटे दीजिए। मैं पहले चार घंटे कुल्हाड़ी की धार तेज़ करने में लगाऊँगा और अंतिम दो घंटे में पेड़ को काट दूँगा। अपने लक्ष्य में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित्त व निष्ठावान् होना पड़ेगा।

नियम 6. सामान्य लोग

सामान्य दिखनेवाले लोग ही संसार के सबसे अच्छे लोग होते हैं। यही वजह है कि भगवान् ऐसे बहुत से लोग बनाता है। ईश्वर के सामने हम सभी एक बराबर ही बुद्धिमान हैं और एक बराबर ही मूर्ख भी। यदि आप अच्छा बना नहीं सकते तो कम-से-कम ऐसा करिए कि वह अच्छा दिखे।

नियम 7. जीवन में शांति जरूरी

यदि आप अपने जीवन में शांति चाहते हैं तो लोकप्रियता से बचिए। जब व्यक्ति प्रसिद्ध हो जाता है तो उसके जीवन की शांति खत्म हो जाती है। शांति कोई लक्ष्य नहीं है, जिसे हमें प्राप्त करना है, बल्कि वह साधन है, जिसके द्वारा हमें लक्ष्यों को प्राप्त करना है। शांति चाँदी, सोने और हीरे से ज्यादा कीमती होती है।

नियम 8. तरीके बदलो, इरादे नहीं

यदि आप एक बार किसी का भरोसा तोड़ देते हैं तो आप फिर कभी उनका सम्मान प्राप्त नहीं कर सकते। अगर जिंदगी में कुछ पाना हो तो तरीके बदलो, इरादे नहीं। रास्ते मत बदलो, रास्ते बनाओ।

नियम 9. हारने से कैसा डरना

लगभग सारे शख्स परेशानियों का सामना कर सकते हैं; लेकिन यदि आप किसी शख्स के चरित्र का पता लगाना चाहते हैं तो उसे सत्ता सौंप दें। संघर्ष इनसान को मजबूत बनाता है, फिर चाहे वह कितना भी कमजोर क्यों न हो। अगर हारने से डर लगता है तो जीतने की इच्छा कभी मत रखना! इनसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी हैं।

नियम 10. जिंदादिली

जिंदगी में कुछ ऐसी चीज़ें होती हैं, जिन्हें आप नियंत्रित नहीं कर सकते और आपको उनके साथ जीना होता है। आपके पास एक चॉइस है—बिटर या बेटर? बेटर को चुनें, बिटर को भूल जाएँ। जिंदगी के अंत में साल मायने नहीं रखते, बल्कि उन बिताए गए सालों की जिंदादिली मायने रखती है।

□

अल्फ्रेड नोबेल

अल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबेल का जन्म 21 अक्तूबर, 1833 को स्वीडन के स्टॉकहोम में हुआ। अल्फ्रेड ने अपने घर पर रहकर विज्ञान, साहित्य, अर्थशास्त्र, रसायन एवं भौतिकी का अध्ययन किया और 17 वर्ष की उम्र में रूसी, फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी आदि भाषाएँ धारा-प्रवाह बोलनी सीख लीं। उनके पिता ने केमिकल इंजीनियर बनाने के लिए उन्हें पेरिस भेजा। इसके बाद वे अपने पिता के कारखाने में विस्फोटकों के, विशेषकर नाइट्रोग्लिसरीन के, अध्ययन में लग गए। उन्होंने डायनामाइट व बेलिस्टाइट नामक दो विस्फोटक का निर्माण किया। इन दोनों ही पदार्थों का उद्योग तथा युद्ध में भी विस्तृत रूप से उपयोग होने लगा। इससे नोबेल की आमदनी अप्रत्याशित रूप से बढ़ गई। लेकिन उनका एकाकी जीवन रोगों से युद्ध करते बीता। उन्हें कभी शांति नसीब नहीं हुई। बाद में मानव-हित की आकांक्षा से प्रेरित होकर उन्होंने अपने धन का उपयोग एक ट्रस्ट स्थापित करके किया, जिससे 'नोबेल पुरस्कार' दिए जाते हैं। स्वीडिश लोगों को 10 दिसंबर, 1896 को उनकी मृत्यु के बाद ही पुरस्कारों के बारे में पता चला, जब उन्होंने उनकी वसीयत पढ़ी, जिसमें उन्होंने अपने धन से मिलनेवाली सारी वार्षिक आय पुरस्कारों की मदद करने में दान कर दी थी। अपनी वसीयत में उन्होंने आदेश दिया था कि "सबसे योग्य व्यक्ति, चाहे वह स्केंडिनेवियन हो या न हो, नोबेल पुरस्कार प्राप्त करेगा।"

अल्फ्रेड नोबेल के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जीवन के उद्देश्य का सृजन

अगर आप अपने जीवन का उद्देश्य नहीं ढूँढ़ पा रहे हैं तो उसका सृजन करना आपका कर्तव्य है। यदि आपके पास हजारों विचार हैं और केवल एक को आप सफल बना सकें तो संतुष्टि के लिए वह पर्याप्त है। जो मंजिलों को पाने की चाहत रखते हैं, वो समंदरों पर भी पत्थरों के पुल बना देते हैं।

नियम 2. जो आप सोचते हैं, उसके लिए आप जिम्मेदार हैं

आप शायद यह विश्वास करते होंगे कि जो आप करते हैं, आप उसके लिए जिम्मेदार हैं, न कि आप जो सोचते हैं, उसके लिए; लेकिन सच्चाई यह है कि जो आप सोचते हैं, आप उसके लिए जिम्मेदार हैं; क्योंकि आप उसी स्तर का चुनाव करते हैं। जो आप सोचते हैं, वो ही आप करते हैं। आपके जीवन में दो प्राथमिक चुनाव हैं—परिस्थितियाँ जैसी हैं, वैसी स्वीकार कर ली जाएँ या उन्हें बदलने की जिम्मेदारी ली जाए!

नियम 3. इनसान की तलाश

जीवन में अनुभवों से सीखकर खुद को बदलने की जरूरत होती है। अगर हम बदलना बंद कर देते हैं तो एक ही जगह रुक जाते हैं। जो बदलता है, वही आगे बढ़ता है। अगर आप उस इनसान की तलाश कर रहे हैं, जो आपकी जिंदगी बदलेगा तो आईने में देख लें।

नियम 4. खुशियों की जिम्मेदारी स्वयं लें

एक दिल को प्यार करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है, जबकि पेट को भोजन के लिए मजबूर किया जा सकता है। संतुलित रहें, अपनी खुशियों की जिम्मेदारी स्वयं लें। लोगों से या चीजों से यह अपेक्षा न रखें कि वे आपके लिए खुशियाँ लेकर आएँगे। आप निराश हो सकते हैं।

नियम 5. कर्म की जिम्मेदारी-उपलब्धियों का श्रेय नहीं

अकेले शुभकामनाएँ शांति सुनिश्चित नहीं करेंगी। कुछ पुख्ता भी करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी होगी। आप परिस्थितियाँ नहीं बदल सकते; मौसम या हवाओं का रुख नहीं बदल सकते; लेकिन आप अपने आप को बदल सकते हैं। आपको अपने कर्म की जिम्मेदारी लेनी चाहिए, लेकिन अपनी उपलब्धियों का श्रेय नहीं।

नियम 6. जीवन की जिम्मेदारी

चरित्र वह नहीं है कि जिसके साथ आप पैदा हुए हैं और बदल नहीं सकते, जैसे कि आपकी उँगलियों के निशान। ये वो है, जिसके साथ आप पैदा नहीं हुए हैं और जिसे बनाने की जिम्मेदारी आपको लेनी चाहिए। जहाँ आप खड़े हैं, वहाँ होने के लिए जिम्मेदारी लेना आपको वहाँ जाने के लिए शक्ति देता है, जहाँ आप जाना चाहते हैं। जितनी जल्दी आप अपने जीवन की जिम्मेदारी लेंगे, उतनी जल्दी आप सफल होंगे।

नियम 7. शांति जरूरी

जिस दिन दो सेनाएँ परस्पर एक-दूसरे का सर्वनाश कर देंगी, शायद तब सभी सभ्य देश डरकर फिर से साथ मिल जाएँगे और अपने सैनिकों को हटा देंगे। तरक्की के लिए शांति जरूरी है।

नियम 8. मदद

जो आदमी कार्य करने में सक्षम हो, उसके लिए कुछ भी न छोड़ें, क्योंकि इस प्रकार वह अपने कार्य से विमुख होकर नकारा हो जाएगा। वहीं दूसरी ओर, सपने देखनेवालों की मदद करें, क्योंकि उन्हें जीवन में आगे बढ़ना मुश्किल लगता है।

नियम 9. युद्ध

युद्ध के समर्थक खूब इसके समर्थन में लिखेंगे; लेकिन युद्ध तभी तक जारी रहेंगे, जब तक कि परिस्थितियों के बल उन्हें असंभव नहीं बना देते। आप भी एक बल बन सकते हैं।

नियम 10. प्रकृति-शिक्षक

प्रकृति मनुष्य की शिक्षक है। वह अपनी खोज के लिए अपने खजाने को उजागर करती है, अपनी आँखों को खोलती है, अपने दिमाग को रोशन करती है और अपने दिल को शुद्ध करती है। एक प्रभाव सभी स्थलों और उसके अस्तित्व की आवाज के साथ साँस लेता प्रतीत होता है।

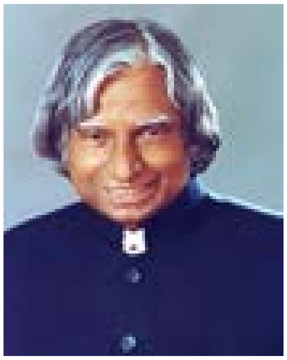

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

एक मछुआरे के बेटे ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अखबार बेचकर अपने जीवन का सफर शुरू किया और देश के श्रेष्ठ वैज्ञानिक बने तथा आगे चलकर सबसे बड़े राष्ट्रपति पद को भी शोभायमान किया। डॉ. कलाम का जन्म 15 अक्तूबर, 1931 को दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ। आरंभिक संघर्षपूर्ण दौर से गुजरते हुए उन्होंने मद्रास इंजीनियरिंग कॉलेज से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में पढ़ाई की। सन् 1962 में कलाम इसरो में पहुँचे, जहाँ पहला स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान 'एसएलवी-3' बनाया। सन् 1980 में 'रोहिणी' उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के समीप स्थापित किया गया। उन्होंने 'अग्नि' और 'पृथ्वी' जैसी मिसाइलें भारतीय तकनीक से बनाईं। वर्ष 1992 से 1999 तक डॉ. कलाम रक्षा मंत्री के रक्षा सलाहकार भी रहे। इस दौरान वाजपेयी सरकार ने पोखरण में दूसरी बार परमाणु परीक्षण भी किए और भारत परमाणु हथियार बनानेवाले देशों में शामिल हो गया। सन् 1982 में कलाम डी.आर.डी.एल. (डिफेंस रिसर्च डेवलपमेंट लैबोरेट्री) के डायरेक्टर बनाए गए। वहाँ स्वदेशी मिसाइलों के विकास के दौर में सबसे पहले सितंबर 1985 में 'त्रिशूल', फिर फरवरी 1988 में 'पृथ्वी' और मई 1989 में 'अग्नि' का परीक्षण किया गया। इसके बाद सन् 1998 में रूस के साथ मिलकर भारत ने सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल 'ब्रह्मोस' बनाई गई। 'ब्रह्मोस' धरती, आकाश और समुद्र—कहीं भी दागी जा सकती है। इस सफलता के साथ ही कलाम को 'मिसाइल मैन' के रूप में प्रसिद्धि मिली और सन् 1981 में भारत सरकार ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्म भूषण', फिर 1990 में 'पद्म विभूषण' और 1997 में 'भारत रत्न' प्रदान किया। 27 जुलाई, 2015 को भारत के इस महान् सपूत का हृदयाघात से शिलांग में निधन हो गया।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सपने

सपने सच हों, इसके लिए सपने देखना जरूरी है। महान् सपने देखनेवालों के सपने हमेशा श्रेष्ठ होते हैं। मैं यह विश्वास करता हूँ कि अपने चुनावों के लिए हम पूरी तरह से जिम्मेदार हैं और हमें जीवन भर अपने हर कार्य, शब्द एवं विचार के परिणाम को स्वीकार करना चाहिए।

नियम 2. युवाओं के लिए संदेश

अलग ढंग से सोचने का साहस करें, आविष्कार का साहस करें, अज्ञात पथ पर चलने का साहस करें, असंभव को खोजने का साहस करें और समस्याओं को जीतें तथा सफल बनें। ये वे महान् गुण हैं, जिनकी दिशा में आप अवश्य काम करें।

नियम 3. भ्रष्टाचार से मुक्ति

अगर एक देश को भ्रष्टाचार-मुक्त होना है तो मैं यह महसूस करता हूँ कि हमारे समाज में तीन ऐसे लोग हैं, जो ऐसा कर सकते हैं। ये हैं—पिता, माता और शिक्षक।

नियम 4. मुश्किलों का सामना

मनुष्य को मुश्किलों का सामना करना जरूरी है, क्योंकि सफलता के लिए यह जरूरी है। जब हम बाधाओं का सामना करते हैं तो हम पाते हैं कि हमारे भीतर साहस और लचीलापन मौजूद है, जिसकी हमें स्वयं जानकारी नहीं थी और यह तभी सामने आता है, जब हम असफल होते हैं। जरूरत है कि हम इन्हें तलाशें और जीवन में सफल बनें।

नियम 5. काम में लगे रहें

अपनी पहली सफलता के बाद आराम न करें, क्योंकि अगर आप दूसरे प्रयास में असफल हो जाएँगे तो सब यही कहेंगे कि पहली सफलता आपको भाग्य से मिली थी।

नियम 6. निडरता और शक्ति

जब तक भारत विश्व की बराबरी में नहीं खड़ा होगा, तब तक कोई हमारा सम्मान नहीं करेगा। इस विश्व में डर की कोई जगह नहीं है। यहाँ केवल शक्ति ही शक्ति का सम्मान करती है।

नियम 7. विकास के अवसर

यह संभव है कि हम सबके पास बराबर प्रतिभा न हो, लेकिन अपनी प्रतिभाओं को विकसित करने का हम सभी के पास बराबर अवसर होता है। एक के बाद दूसरा आता रहता है।

नियम 8. सबसे बड़े अध्यापक

जिंदगी और समय विश्व के दो सबसे बड़े अध्यापक हैं। जिंदगी हमें समय का सही उपयोग करना सिखाती है, जबकि समय हमें जिंदगी की उपयोगिता बताता है।

नियम 9. पूरे मन से काम करें

जो लोग आधे-अधूरे मन से कोई काम करते हैं, उन्हें आधी-अधूरी व खोखली सफलता मिलती है, जो चारों ओर कड़वाहट भर देती है। इसलिए जो भी काम करें, पूरे मन से करें।

नियम 10. मुश्किलों का सामना

जब हम दैनिक समस्याओं से घिरे रहते हैं तो हम उन अच्छी चीजों को भूल जाते हैं, जो कि हममें हैं। इनसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी हैं। हमें प्रयत्न करना नहीं छोड़ना चाहिए और समस्याओं से नहीं हारना चाहिए। मुश्किलें जिंदगी का हिस्सा हैं। उनके कारण जिंदगी को समाप्त नहीं किया जा सकता; लेकिन स्वयं की मदद करें, जिससे आप अपनी शक्ति को जान सकें। मुश्किलों को भी पता चलने दें कि उनके लिए आप कितने मुश्किल हैं!

बराक ओबामा

बराक हुसैन ओबामा संयुक्त राज्य अमेरिका के चौवालीसवें और देश के प्रथम अश्वेत (अफ्रीकी-अमेरिकी) राष्ट्रपति रहे। उन्होंने डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार के रूप में 20 जनवरी, 2009 को राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया। बराक ओबामा का जन्म 4 अगस्त, 1961 को होनोलुलु, हवाई में हुआ। ओबामा ने हार्वर्ड लॉ स्कूल से सन् 1991 में स्नातक किया और वकालत करने लगे। कुछ साल वे शिकागो विधि विश्वविद्यालय में कानून के अध्यापक भी रहे। नवंबर 2003 में वे सीनेट के लिए चुने गए। उन्होंने दो लोकप्रिय पुस्तकें भी लिखीं।

बराक ओबामा के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सही राह पर चलना

यदि आप सही राह पर चल रहे हैं और आप चलते रहने के लिए तत्पर हैं तो आप अंततः प्रगति करेंगे। यदि आप आगे बढ़ते रहते हैं तो कुछ चोटें जल्दी से ठीक हो जाती हैं। बहाने बहुत सस्ते होते हैं, इसलिए गरीब इसे बहुत ज्यादा अफोर्ड कर लेते हैं।

नियम 2. बदलाव के लिए

अगर हम किसी अन्य व्यक्ति या किसी अन्य समय के लिए प्रतीक्षा करेंगे तो बदलाव नहीं आ पाएगा। हम ही वे लोग हैं, जो इसका इंतजार कर रहे हैं। हम ही वे हैं, जो परिवर्तन चाहते हैं।

नियम 3. मूल्यों की कीमत

यदि हम अपने मूल्यों के लिए एक कीमत अदा करने को तैयार नहीं हैं, यदि हम उन्हें साकार करने के लिए कुछ त्याग करने को तैयार नहीं हैं, तब हमें अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या हम सही मायने में उन सब पर विश्वास रखते हैं?

नियम 4. दायित्व और जिम्मेदारी

यह प्रत्येक नागरिक का दायित्व और जिम्मेदारी है कि वे स्कूलों और उनमें पढ़नेवाले बच्चों पर धन का निवेश करें। हमें उन बच्चों की इच्छाओं का पूरी तरह ध्यान रखना होगा, जिनके अंक हमेशा अच्छे आए और वे सफलता के लिए हमेशा सोचते रहे और उन्हें यह बताना होगा कि वे भी दूसरे बच्चों की तरह पढ़-लिखकर आगे बढ़ सकते हैं।

नियम 5. साहस और प्रतिबद्धता

हमारी सुरक्षा, हमारी अर्थव्यवस्था और हमारे ग्रह के लिए बदलाव लाने का हममें साहस और प्रतिबद्धता होनी चाहिए। पहले खुद से कहो कि तुम क्या बनोगे और फिर वह करो, जो तुम्हें करना है। जो सपने देखते हैं और उन्हें पूरा करने की कीमत चुकाने को तैयार रहते हैं, वे खुश रहते हैं।

नियम 6. अवसरों की कमी की शिकायत नहीं

अपनी असफलताओं को अपने आपसे परिभाषित मत करने दो। कोई भी महान् व्यक्ति अवसरों की कमी के बारे में शिकायत नहीं करता। कोई पहाड़ चढ़ना मुश्किल नहीं है, शिखर पर मिलते हैं। यदि आपके पास जरूरत से ज्यादा है तो उसे उनसे शेयर करिए, जिन्हें उसकी सबसे ज्यादा जरूरत है।

नियम 7. विश्व स्तरीय शिक्षा

आज के श्रमिकों को प्रशिक्षण देना काफी नहीं है। हमें कल के श्रमिकों को भी तैयार करना पड़ेगा और इसके लिए सुनिश्चित करना होगा कि हर बच्चे को विश्व स्तरीय शिक्षा मिले। जो लोग अपनी सोच नहीं बदल सकते, वे कुछ नहीं बदल सकते। जिस नजर से आप इस दुनिया को देखेंगे, यह दुनिया आपको वैसी ही दिखेगी।

नियम 8. सच

ईश्वर को याद रखो और हमेशा सच बोलो। दूसरों की दुष्टता के बदले अपने अंदर की दुष्टता पर वार करो। अगर आप अपने कर्मों की जिम्मेदारी नहीं लेते हैं तो आप हमेशा के लिए अपने बचाव की स्थिति में ही रहेंगे।

नियम 9. उत्कृष्ट बनना

उत्कृष्टता के इस विचार को आत्मसात् करने की जरूरत है। कई लोग उत्कृष्ट बनने के लिए समय तक खर्च नहीं करते। जीवन में कभी किसी को कसूरवार न बनाएँ। अच्छे लोग खुशियाँ लाते हैं, बुरे लोग तजुरबा। अपनी कामयाबी को इतना छोटा न समझो, यह सिर्फ नसीबवालों को नसीब होती है।

नियम 10. उत्साहवर्धन

उत्साहवर्धन क्या है? यह किसी कार्य को शुरू करने के लिए उसमें पहली लगाई जानेवाली पूँजी है। एक 'इच्छा' कुछ नहीं बदलती, एक 'निर्णय' कुछ बदलता है; लेकिन एक 'निश्चय' सबकुछ बदल देता है। आत्मविश्वास के साथ आप गगन चूम सकते हैं और आत्मविश्वास के बिना मामूली-सी उपलब्धियाँ भी आपकी पकड़ से परे हैं।

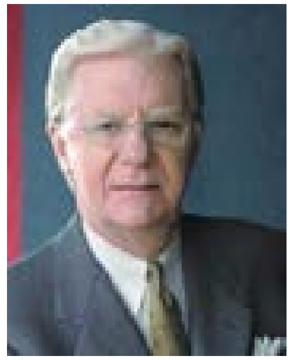

बॉब प्रॉक्टर

बॉब प्रॉक्टर का जन्म 5 जुलाई, 1934 को ओंटारियो, कनाडा में हुआ। आत्म-विकास के क्षेत्र में वे सबसे प्रभावशाली वक्ताओं में शामिल हैं। नेपोलियन हिल को अपना प्रेरणा-स्रोत माननेवाले बॉब प्रॉक्टर 1970 के दशक के बाद से लोगों को उनके व्यक्तित्व विकास हेतु प्रेरित व प्रोत्साहित करते आ रहे हैं। वर्ष 2006 में प्रॉक्टर को लेकर 'द सीक्रेट' नाम की मूवी आई और वे 'एलेन एवं लार्वा किंग लाइव' जैसे कई टी.वी. शो में अभिनय करते दिखाई दिए। प्रॉक्टर ने कई बेस्ट सेलर पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'यू वर बॉर्न रिच', 'द एबीसी ऑफ सक्सेस', 'टेक एक्शन नाओ', 'द आर्ट ऑफ थिंकिंग : चेंज योर माइंडसेट', 'चेंज योर लाइफ', 'डेस्टनीज : मोटिवेटिंग स्टोरीज फ्रॉम ऑर्डनरीज पीपल्स हू क्रिएटेड एक्स्ट्राऑर्डनरी रिजल्ट्स' इत्यादि शामिल हैं।

बॉब प्रॉक्टर के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जोखिम न लेना ही सबसे बड़ा जोखिम

यदि आप जोखिम नहीं लेते तो आप दु:ख और दर्द से तो बच सकते हैं, लेकिन आप सीख नहीं सकते, महसूस नहीं कर सकते, परिवर्तन नहीं कर सकते, विकास और प्यार नहीं कर सकते। असल में, जीवन में जोखिम न लेना ही सबसे बड़ा जोखिम है। जो व्यक्ति जोखिम नहीं उठाता है, वह जीवन में कुछ नहीं कर सकता है और उसके पास कुछ भी नहीं होता है। केवल जोखिम उठानेवाला व्यक्ति ही मुक्त हो सकता है।

नियम 2. लक्ष्य-निर्धारण

कुछ मनचाहा बड़ा हासिल करने के लिए एक ऐसा लक्ष्य निर्धारित करें, जो इतना बड़ा और इतना रोमांचकारी हो कि एक ही समय में वह आपको उत्तेजित करता हो और एक ही समय में आपको डराता हो। हमेशा अपने आप से सवाल पूछें—क्या यह मेरे लक्ष्य को पाने में मदद करनेवाला है या नहीं? आपका लक्ष्य बताता है कि आप अपने जीवन के साथ क्या कर रहे हैं। आपकी दृष्टि बताती है कि आप अपने लक्ष्य को कैसे जी रहे हैं। आपके लक्ष्य आपको अपनी दृष्टि का एहसास करने में सक्षम बनाते हैं।

नियम 3. समझदारी और बुद्धिमानी

पढ़ने या याद करने की कोई भी मात्रा आपको जीवन में सफल नहीं बनाएगी। यह समझदारी और बुद्धिमानी का प्रयोग है, जो मायने रखता है। हमारे जीवन की एकमात्र सीमाएँ वे हैं, जो हम खुद पर थोपते हैं। इसलिए असीम बनें।

नियम 4. डाक टिकट

एक डाक टिकट की तरह अपने लक्ष्य पर चिपके रहें। जब तक आप अपना लक्ष्य न पा लें, उससे चिपके रहें। जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की। जो छोटी-छोटी बातों में

सच को गंभीरता से नहीं लेता है, उस पर बड़े मसलों में भी भरोसा नहीं किया जा सकता।

नियम 5. मेरी अभिलाषा

आप क्या चाहते हैं? बैठ जाएँ और इसे कागज के एक टुकड़े पर लिखें। इसे वर्तमान काल में लिखें। चाहे तालियाँ गूँजें या फीकी पड़ जाएँ, अंतर क्या है? इससे मतलब नहीं है कि आप सफल होते हैं या असफल। बस, काम करिए। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता।

नियम 6. शून्य से शिखर पर

यह मायने नहीं रखता कि आप कहाँ हैं? चाहे आप शून्य पर हों, किंतु शिखर पर जा सकते हैं। ज्यादातर लोग उतने ही खुश रहते हैं, जितना वे अपने दिमाग में तय कर लेते हैं। दुनिया आपके उदाहरण से बदलेगी, आपकी राय से नहीं।

नियम 7. स्व-नियंत्रण

अपने स्वामी आप रहें, बाहरी दुनिया को अपने आप पर नियंत्रण न करने दें। अपने आसपास की गतिविधियों के प्रति सचेत रहें। साथ ही आपके भीतर क्या हो रहा है, इस पर नियंत्रण रखें।

नियम 8. जागरूक बनने की बात

आप जिसकी खोज में हैं, वह आपकी खोज में है। इसलिए आप जो कुछ भी चाहते हैं, वह पहले से ही आपका है तो आपको कुछ भी हासिल नहीं करना है। यह केवल आपके पास पहले से मौजूद चीजों के बारे में अधिक जागरूक बनने की बात है।

नियम 9. जीवन को डिजाइन करने की क्षमता

हम सभी में अपने जीवन को डिज़ाइन करने की क्षमता है; लेकिन ज्यादातर लोग जो चाहते हैं, उसका पीछा नहीं करते हैं। बहुत से लोग रास्तों पर तब तक आगे नहीं बढ़ते, जब तक कि सारी लाइटें ग्रीन न हो जाएँ। इसीलिए वे कहीं नहीं जा पाते।

नियम 10. सारी सृष्टि आपके जीवन में शुरू होती है

हम अपनी कल्पना में कुछ भी बना सकते हैं। यहीं से सारी सृष्टि आपके जीवन में शुरू होती है। ध्यान दें कि हर नए दिन में अवसर हैं। अपने बारे में नकारात्मक बातें न करें। याद रखें, आपका मन उन्हें ग्रहण करता है।

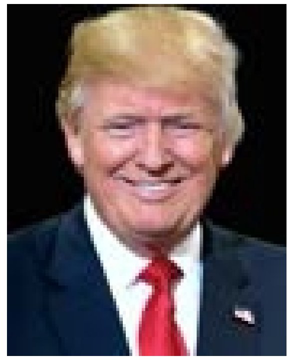

डोनाल्ड ट्रंप

डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के पैंतालीसवें राष्ट्रपति के साथ-साथ व्यवसायी, लेखक एवं टी.वी. कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनका रियल एस्टेट का भी बहुत बड़ा व्यवसाय है। वे एक सफल अमेरिकी कारोबारी हैं। उनके पास अरबों रुपए की संपत्ति है। न्यूयॉर्क के बेहद महँगे मैनहटन इलाके में उनके पास अच्छी-खासी जायदाद है। अगर कहें कि वे एक रईस अमेरिकी हैं तो गलत नहीं होगा। वे अपने विवादास्पद भाषणों के कारण भी मीडिया की सुर्खियों में बने रहते हैं। ट्रंप का संबंध किसी राजनीतिक घराने से नहीं है। वे अपने ही दम पर राजनीति के इस सर्वोच्च स्थान पर पहुँचे हैं। उनका जन्म 14 जून, 1946 को न्यूयॉर्क में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा न्यूयॉर्क में ही हुई। 13 वर्ष की उम्र में उनके माता-पिता ने उन्हें न्यूयॉर्क मिलिट्री स्कूल भेज दिया। वे सन् 1964 में ग्रेजुएशन के समय स्टार एथलीट और छात्र नेता के रूप में उभरे। उन्हें हमेशा से एक करिश्माई नेता माना गया है।

डोनाल्ड ट्रंप के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जीतने के बारे में

मेरा पूरा जीवन जीतने के बारे में है। मैं अकसर हारता नहीं हूँ। मैं लगभग कभी नहीं हारता। हारना मना है। अनियंत्रित वृद्धि और निष्क्रियता के बीच से होकर अपेक्षा से पूर्ण जिम्मेदारी की राह है, जिसका अनुकरण हम सबको करना है।

नियम 2. हारकर जीतना

कभी-कभार आप एक लड़ाई हारकर युद्ध जीतने का एक नया तरीका सीख जाते हैं। साहसी लोग शांति की खातिर क्षमा करने से घबराते नहीं हैं।

नियम 3. बड़ी सोच

जब सोचना ही है तो क्यों न बड़ा सोचो? जब दुनिया तुम पर उँगलियाँ उठाए, जब लोग तुम्हारे रास्ते में मुश्किलें बिछाएँ तो हौसला न खोएँ। उन मुश्किलों के आगे खुद को विजेता साबित करें।

नियम 4. कितना काम किया

आखिर में आप इससे नहीं मापे जाते कि आपने कितना काम लिया, बल्कि इससे मापे जाते हैं कि आपने कितना काम पूरा किया। एक सफल व्यक्ति स्व-प्रेरणा को व्यक्तिगत जिम्मेदारी समझता है। वह हमेशा अपने आप से शुरुआत करता है, क्योंकि वह अपनी स्फूर्ति पर काबू रखता है।

नियम 5. जुनून

बिना जुनून के आपके अंदर ऊर्जा नहीं रहती, बिना ऊर्जा के आपके पास कुछ नहीं होता। कभी-कभी हम नहीं जानते कि हमें क्यों भेजा गया है? हमें भरोसा करना चाहिए कि हमारे लिए भगवान् की योजना समय पर प्रकट होगी।

नियम 6. प्रतिक्रिया

विजेताओं को हारने से क्या अलग करता है, वह यह कि एक व्यक्ति कैसे भाग्य के प्रत्येक नए मोड़ के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देता है। अधिकतर लोग वास्तव में स्वतंत्रता नहीं चाहते; क्योंकि स्वतंत्रता अपने साथ जिम्मेदारी भी लेकर आती है और अधिकतर लोग जिम्मेदारी से डरते हैं।

नियम 7. कम आँका जाना

कम आँका जाना हमेशा अच्छा होता है। आप मेरे बारे में क्या सोचते हैं, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। जरूरी यह है कि मैं अपने बारे में क्या सोचता हूँ। आप केवल अंधकार में ही सितारों को देख सकते हैं।

नियम 8. सफलता

सफलता एक बुरी शिक्षक है। यह लोगों में ऐसे विचार विकसित कर देती है कि वे असफल नहीं हो सकते। अपने सपनों को जिंदा रखिए। अगर आपके सपनों की चिनगारी बुझ गई है तो इसका मतलब यह है कि आपने जीते-जी आत्महत्या कर ली है। एक सफल व्यक्ति बनने की कोशिश मत करो, बल्कि मूल्यों पर चलने वाले व्यक्ति बनो।

नियम 9. मस्तिष्क की जरूरत

हमें शक्ति की जरूरत है। हमें ऊर्जा की जरूरत है। हमें गति की जरूरत है और इसे चालू करने के लिए देश में मस्तिष्क की जरूरत है। अगर आप महानता हासिल करना चाहते हैं तो इजाजत लेना बंद करिए। कभी-कभी हमें स्वयं को यह बताने की जरूरत पड़ती है कि हम दूसरों को क्या दे सकते हैं।

नियम 10. लालच को ना

सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा यह है कि आप ज्यादा लालची नहीं बन सकते हैं। लोहे के गरम होने का इंतजार मत करो, बल्कि अपनी तपन द्वारा उसे गरम बनाओ; यानी समय का इंतजार मत करो, बल्कि ऐसी कोशिश करो कि समय आपके अनुकूल हो जाए।

□

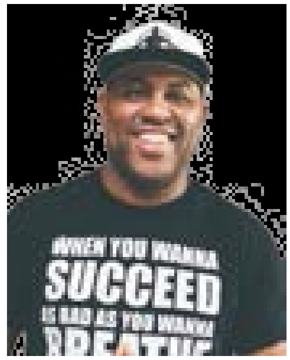

एरिक थॉमस

एरिक थॉमस एक प्रख्यात अमेरिकी प्रेरक वक्ता और लेखक हैं। उनका जन्म 3 सितंबर, 1970 को शिकागो में हुआ। पारिवारिक उतार-चढ़ावों के चलते बचपन में उन्हें भारी संकटों का सामना करना पड़ा। उनकी पढ़ाई छूट गई। कई साल उन्हें सड़कों पर गुजारने पड़े। इसी दौरान उनकी मुलाकात एक प्रचारक से हुई, जिसने उनकी जिंदगी को बदलकर रख दिया। आज वे एक सम्मानित उपदेशक, प्रेरक वक्ता, लेखक और अपनी निजी परामर्श फर्म के सी.ई.ओ. हैं; साथ ही 'फॉर्च्यून' 500 कंपनियों और पेशेवर खेल संगठनों—दोनों के लिए काम करते हैं। एरिक ने कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'द सीक्रेट टू सक्सेस' प्रमुख है।

एरिक थॉमस के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जानिए, आपको क्या चाहिए

यदि आप यह नहीं जानते कि आप जीवन में क्या चाहते हैं तो आप कैसे जानेंगे कि आपको जीवन में क्या करना है? हर किसी का अनुसरण करने से बचें और उस ओर कदम बढ़ाएँ, जिसके आप योग्य हैं।

नियम 2. अपनी प्रतिभा को निखारें

हम सभी की अपनी अलग-अलग प्रतिभाएँ, उपहार और ताकतें हैं। लेकिन ये प्राकृतिक उपहार केवल उन्हें परिष्कृत और पोषित करके ही वास्तव में महान् बन पाते हैं। प्राकृतिक क्षमता आपको प्रेरित करती है; लेकिन महानता प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्धता और दृढ़ संकल्प ही वह कुंजी है, जो आपको वह स्थान देगी, जहाँ आप होना चाहते हैं।

नियम 3. कोई बहाना नहीं

जीवन में अपनी परिस्थितियों, वित्त या वर्तमान स्थिति का रोना रोकर बहाना न बनाएँ कि आप अपने लक्ष्यों की ओर क्यों नहीं बढ़ पा रहे हैं। आप अपने मालिक हैं। यदि आप अपनी मंजिल पर नहीं हैं तो आईने में देखें और खुद से ईमानदारी से पूछें—क्यों आप अपनी जिंदगी की उन्नति और अवनति की पूरी जिम्मेदारी लें?

नियम 4. अपने मूल्यों को उन्नत करें

आपके मूल्य आपके व्यवहार को निर्धारित करते हैं और आपका व्यवहार परिणाम लाता है। यदि आप एक अलग परिणाम चाहते हैं तो आपको अपना व्यवहार बदलने की आवश्यकता है।

नियम 5. आप जो बोते हैं, वही काटते हैं

जीवन में कुछ भी मुफ्त नहीं है। यह आप पर निर्भर है कि आप अपने जीवन को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं। यदि आप सफलता चाहते हैं तो वहाँ पहुँचने के लिए रोजाना वही करना होगा, जो आपको सफलता की राह

पर पहुँचा दे। एकमात्र सफल होने पर इतना ध्यान केंद्रित न करें। समस्याओं को सुलझाने, दूसरों की मदद करने तथा लोगों के जीवन में मूल्य जोड़ने पर ध्यान केंद्रित करें और सफलता स्वत: आएगी।

नियम 6. शिक्षा महान् प्रभावकारक है

यदि आप सबसे निचले पायदान पर हैं तो आपको सीखने की जरूरत है। यदि आप शीर्ष पर हैं तो आपको अभी भी सीखने की जरूरत है। कभी भी बढ़ना और शिक्षित होना बंद न करें।

नियम 7. सबसे महत्त्वपूर्ण बात

आप सुबह क्यों उठते हैं और जल्दबाजी मचाते हैं? यह सब आप क्यों करते हैं? क्योंकि आप सफल होना चाहते हैं, जो आपके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। जब आप जानते हैं कि यह सब आप क्यों कर रहे हैं तो आप उसे कभी भी नहीं छोड़ते हैं, यहाँ तक कि बुरे दिनों में भी नहीं।

नियम 8. सीमाएँ तय हों

यदि आप बड़ी सफलता चाहते हैं तो आपको अपने आप पर दृढ़ होना होगा कि आप अपनी ऊर्जा कैसे खर्च करते हैं। विचलन कई रूपों में आएगा—परिवार, दोस्त, टेलीविजन; लेकिन आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आपका समय बुद्धिमानी से व्यतीत हो रहा है।

नियम 9. दिल से बोलें

पारदर्शिता आकर्षक है। दुनिया के लिए खुलने से डरें नहीं और खुद को देखने दें। बिना विश्वास के कोई काम हो ही नहीं सकता। बिना उत्साह के कभी किसी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती और बिना उत्साह के कभी किसी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती।

नियम 10. सफलता को साँस जितना जरूरी बना लें

हर व्यक्ति सफल होना चाहता है; लेकिन हर कोई ऐसा काम करने के लिए तैयार नहीं है, जो सफल होने के लिए आवश्यक है। जब आप गहराई से और आँखें मूँदकर अनवरत केवल सफलता और सफलता के लिए काम में जुटे रहेंगे तो आपके पास सफल होने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होगा और आप सफल हो जाएँगे। एकमात्र सवाल, जो आपको खुद से पूछने की जरूरत है, वह यह है—क्या मैं तैयार हूँ?

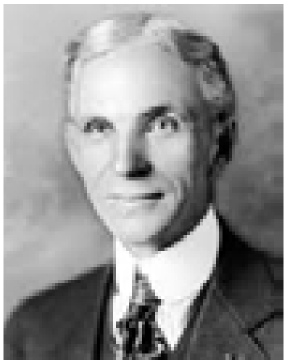

हेनरी फोर्ड

हेनरी फोर्ड अमेरिका के बड़े व्यवसायी, महान् आविष्कार, दानी और उपदेशक थे। उन्होंने फोर्ड मोटर कंपनी की स्थापना की और कार निर्माण के क्षेत्र में कई नए प्रयोग करके यातायात एवं अमेरिकी उद्योग में क्रांति ला दी। हेनरी फोर्ड का जन्म 30 जुलाई, 1863 को मिशिगन राज्य के डीयर बार्न नगर में हुआ। आरंभ से ही उन्हें यंत्रों के प्रति कौतूहल और आकर्षण रहा। 16 वर्ष की उम्र में वे घर छोड़कर डेटॉइट चले गए और वहाँ कल-कारखानों में काम करके यांत्रिक ज्ञान हासिल किया। कई छोटे-मोटे मशीनी निर्माण के बाद सन् 1903 में उन्होंने 'फोर्ड मोटर कंपनी' की स्थापना की। उनकी गणना संसार के प्रमुख धनपतियों में थी। अपने गृह नगर डीयर बार्न में उन्होंने एक औद्योगिक संग्रहालय तथा 'एडिसन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' की स्थापना की। 7 अप्रैल, 1947 को उनका निधन हो गया। 'फोर्ड' के रूप में वे आज भी अमर हैं।

हेनरी फोर्ड के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. दूसरों से सलाह लें

हेनरी फोर्ड द्वारा की गई सबसे बड़ी गलतियों में से एक अपने सबसे भरोसेमंद सलाहकारों की नहीं सुनना थी। उनके बेटे सहित कई सलाहकारों ने उन्हें अन्य कारों की बढ़ती लोकप्रियता के बारे में चेताया, फिर भी हेनरी फोर्ड ने अपनी कारों में तात्कालिक परिवर्तनों के प्रति बेरुखी बरती। उनके जीवन के अंत तक, हालाँकि वे एक अमीर व्यक्ति थे, फोर्ड मोटर कंपनी ऑटोमोबाइल उद्योग में तीसरे नंबर पर थी, पहले पर नहीं। उनकी कंपनी ने निश्चित रूप से अपने शुरुआती दिनों में प्रतिष्ठा नहीं खोई थी; लेकिन यदि फोर्ड नवाचारों को अपना लेते तो अपने उद्योग में वे एक नेतृत्वकर्ता का रूप ले सकते थे।

नियम 2. जो भी सीखना बंद कर देता है, वह बूढ़ा हो जाता है

हमें अपने विकास के वर्षों के दौरान सीखने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो हमें सोचने के लिए प्रेरित करता है। एक बार हमने सोचना सीख लिया तो हमें वह क्षमता कभी नहीं खोनी चाहिए। सफलता और हार दोनों से लगातार आजीवन सीखते रहने से न केवल सफलता के प्रति प्रोत्साहन बना रहता है, बल्कि यह हमें युवा बनाए रखती है। आज हम नाटकीय रूप से अपने ज्ञान के आधार को बढ़ा सकते हैं—अनगिनत दोस्तों और अनुयायियों से सीखकर, जो हमसे अपने अनुभव साझा करते हैं। यह बिना लागत की शिक्षा है, लेकिन मूल्य के साथ बढ़ती है।

नियम 3. सबके लिए बनाएँ

कई सफल व्यवसायियों ने अपने उत्पाद को खुद के समृद्ध होने के लिए बनाया, लेकिन हेनरी फोर्ड ने सबकी पसंद को ध्यान में रखकर उत्पाद बनाए। उन्होंने अपने कारखाने के कर्मचारियों का वेतन भी बढ़ा दिया, जहाँ वे वास्तव में उन कारों को खरीद सकते थे, जो वे बना रहे थे। इसने शुरुआती वर्षों में उनकी टर्नओवर की दर को कम कर दिया, जिसने फोर्ड मोटर कंपनी को नुकसान पहुँचाया।

नियम 4. जो दिल में है, वही वास्तविक

माना जाता है कि सभी सफलताएँ वास्तव में दिमाग में शुरू होती हैं। वास्तव में, यह आमतौर पर स्वीकार किया जाता है कि सफलता और असफलता दोनों ही हमारे दिमाग में सबसे पहले आती हैं; क्योंकि वे खुद को वास्तविकता में प्रस्तुत करती हैं। हेनरी फोर्ड इस सिद्धांत में दृढ़ता से विश्वास करते थे और अपने दैनिक व्यावसायिक जीवन के दौरान इसका पालन करते थे। अधिकांश लोगों को यकीन है कि आपके मन में जो कुछ भी होता है, वह वास्तविकता में स्वयं प्रकट हो जाता है। तो किसी भी सफल उद्यम में पहला उद्देश्य उस सफलता के लिए मानसिक रूप से प्रतिबद्ध होना है—अपने दिमाग में एक खाका तैयार करना, जो वास्तव में सकारात्मक अनुभवजन्य परिणामों की गारंटी देगा।

नियम 5. किसमें निवेश करें

हेनरी फोर्ड को कौन सी बात सफल बनाती है कि उन्होंने अपने व्यवसाय के बारे में विचार किया और उसे बड़ा बना दिया। अगर वे अपने मूल छोटे कारखाने के साथ ही बने रहते तो इतनी बड़ी कारोबारी हस्ती नहीं होते, जिसे हम जानते हैं। हर समय वे अपनी कंपनी में उत्तरोत्तर सुधार में लगे रहे और उसकी उत्पादन क्षमता बढ़ाते रहे। यहाँ तक कि उन्होंने विविधीकरण किया और ऑटोमोबाइल के अलावा अन्य सेवाओं की पेशकश शुरू कर दी। भले ही इन सभी परिवर्तनों में बड़ी लागत थी, हेनरी फोर्ड जोखिम लेने और उसमें निवेश करने के लिए तैयार थे।

नियम 6. असफलता बस फिर से शुरू करने का अवसर है—

इस बार अधिक समझदारी से

असफलता की सबसे अच्छी बात यह है कि यह निश्चित है। असफलता असंदिग्ध होती है। एक बार जब असफलता मिल जाती है तो हम एक नए दृष्टिकोण के साथ इस पर काम करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। हमारा सामाजिक दायरा जवाबदेह साझेदार की भूमिका निभाता है, जो असफलता मिलने पर हमें खुद की धूल झाड़ने और हमारे द्वारा सीखे गए सबक के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।

नियम 7. आप जो करते हैं, उसके लिए जुनून रखें

यदि आप में अपने काम के प्रति उत्साह नहीं है तो यह एक नया काम खोजने का समय है! यद्यपि आपके पास अच्छा दैनंदिन काम नहीं है तो भी उसके प्रति एक जुनून रखने से सबकुछ अधिक सार्थक हो जाएगा। इस जुनून को खोजने में हालाँकि कुछ समय लग सकता है, लेकिन हेनरी फोर्ड के जीवन के सबक हमें दिखाते हैं कि वे अनुकरणीय हैं।

नियम 8. कुछ भी संभव है

हेनरी फोर्ड ने दुनिया को दिखाया कि कुछ भी संभव है। उन्होंने शून्य से एक प्रतिष्ठित कंपनी बनाई, उसे खुद चलाया, निवेशकों को खरीदा और हर साल उसे बड़ा व बेहतर बनाया। उन्होंने अपना शोध किया, महान् व्यापारियों से सीखा, जो असेंबली लाइनों का उपयोग कर रहे थे और अपने उत्पाद को फिट करने के लिए इसे अनुकूलित किया। वे एक प्रवर्तक और व्यक्तिगत विकास के चैंपियन थे। उन्होंने अपने कर्मचारियों के साथ अच्छा व्यवहार किया और उनकी आय बढ़ाई। उन्होंने दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। किसी भी व्यक्ति की तरह वे पूर्ण नहीं थे; लेकिन उनकी कहानी जीवन के कुछ महान् सबक प्रदान करती है, जो अभी और आज भी उपयोग किए जा सकते हैं।

नियम 9. हमेशा उच्च गुणवत्तावाले उत्पाद बनाएँ

हेनरी फोर्ड ने एक बार कहा था, "गुणवत्ता का अर्थ है—जब कोई नहीं देख रहा हो तो सही बनाएँ।" और यह बिलकुल सच है। हम सभी को हर समय अपने सर्वश्रेष्ठ पर रहना चाहिए, न केवल तब, जब हमारा बॉस देख रहा हो या हमारे माता-पिता देख रहे हों। अच्छी आदतें बनाना और अच्छे लोगों के रूप में विकसित होना अनैतिक तरीकों से आगे बढ़ने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

नियम 10. दोष नहीं, उपाय खोजें

अपनी गलतियों के लिए दूसरों पर दोषारोपण करना या किसी और पर उंगली उठाना बड़ा आसान है। हालांकि अपने कार्यों के लिए स्वयं जिम्मेदारी लेकर आप जीवन के सबसे बेहतरीन कौशलों में से यह एक सीख सकते हैं और भी बेहतर हो कि इसे एक कदम आगे ले जाएँ और समस्या का समाधान खोजें। यह आपको जीवन में बड़ी सफलता की गारंटी देगा।

जॉर्डन बेलफोर्ट

जॉर्डन रॉस बेलफोर्ट एक अमेरिकी लेखक, प्रेरक वक्ता और पूर्व स्टॉक ब्रोकर हैं। उनका जन्म 9 जुलाई, 1962 को क्वपस, न्यूयॉर्क सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका में एक यहूदी परिवार में हुआ। बेलफोर्ट ने जीव-विज्ञान में डिग्री के साथ अमेरिकी विश्वविद्यालय से स्नातक किया। बेलफोर्ट ने दो प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं—'द वुल्फ ऑफ वॉल स्ट्रीट' एवं 'कैचिंग वुल्फ ऑफ वॉल स्ट्रीट', जिनका 40 देशों एवं 18 भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन हुआ, साथ ही फिल्म भी बनी। उन पर धोखाधड़ी के आरोप भी लगे और उन्हें लगभग दो साल जेल में बिताने पड़े। आज वे एक व्यस्त कारोबारी और अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता हैं।

जॉर्डन बेलफोर्ट के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. अवसर की पहचान

कॉलेज में दाखिला लेने से पहले स्थानीय समुद्र-तट पर जानेवालों और दर्शनार्थियों को इटैलियन बर्फ बेचकर जॉर्डन 20,000 डॉलर कमाने में कामयाब रहे। जरूरत के बारे में जानने और उसे पूरा करने के बारे में गंभीरता से सोचें। अवसर के लिए अपनी आँख व कान खुले रखकर चलने से आप नपे-तुले से अधिक प्राप्त कर सकते हैं।

नियम 2. बेचना सीखें

आपको यह सोचना चाहिए कि आप क्या बेच रहे हैं और उसे कैसे बेचना है? जॉर्डन का बिक्री और विपणन का अनुभव उनके स्टॉक ब्रोकर बनने से पहले ही व्यापक था। उन्होंने खोमचा लगाकर, घर-घर सामान बेचकर और रेहड़ी पर सामान बेचने से शुरुआत की। इटैलियन बर्फ से लेकर डोर-टू-डोर प्रोडक्ट की बिक्री, सी-फूड और मीट की बिक्री कर उन्होंने अपने विक्रय कौशल का अर्जन किया। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या काम कर रहे हैं, उसे पूरे कौशल से करना महत्त्वपूर्ण है। आपके द्वारा प्रदान की जा रही बिक्री या सेवा के प्रति रुचि और उत्साह कैसे उत्पन्न करें, इसके बारे में सोचें।

नियम 3. अनजाने में सक्षमता

कभी-कभी हम जो ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं या जो कौशल विकसित कर रहे हैं, उससे हम पूरी तरह से अनजान होते हैं। शायद ही कभी ऐसा क्षण आता है, जब हम अपने आप से कहते हैं कि 'हाँ, मैं सक्षम हूँ।' हालाँकि, हम हर दिन जो करते हैं, वह ज्ञान और लागू सिद्धांतों के एक सामूहिक डेटाबेस का निर्माण करता है।

नियम 4. उम्मीदें और लक्ष्य ऊँची रखें

ऊँचा लक्ष्य बनाने से डरें नहीं। ऊँची उम्मीदों के साथ हम बेहतर परिणाम सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत कर सकते हैं। जॉर्डन का पहला व्यवसाय कई कर्मचारियों के साथ शुरू हुआ। डोर-टू-डोर बिक्री के माध्यम से मछली और मांस बेचना शायद ही एक शानदार शुरुआत थी। हालांकि उन्होंने सफलता और असफलता के माध्यम से अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों को ध्यान में रखा। जब आप अपने जीवन को खराब मानकों से जीते हैं तो आप उन सभी को नुकसान पहुँचाते हैं, जो आपका अनुसरण करते हैं, विशेष रूप से वे, जिन्हें आप प्यार करते हैं।

नियम 5. व्यापक दृष्टिकोण

हालाँकि जॉर्डन का पहला व्यवसाय विफल हो गया और 25 साल की उम्र में वे दिवालिया हो गए, लेकिन उन्होंने अपना काम जारी रखा। असफलता जीवन का एक हिस्सा है। इसके बारे में आप क्या सोचते हैं, वही आपके दीर्घकालिक दृष्टिकोण को निर्धारित करता है।

नियम 6. स्वयं के प्रति ईमानदार रहें

एक पारिवारिक मित्र की मदद से जॉर्डन ने बीस साल की उम्र में एक प्रशिक्षु स्टॉक ब्रोकर के रूप में नौकरी प्राप्त की। सफलता के लिए हमेशा कोई अच्छा मॉडल नहीं होता है; लेकिन एक ईमानदार शुरुआत अकसर आपकी स्थिति को अच्छा बनाने में मददगार होती है। अपनी परिस्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश में मदद या इनपुट माँगने से नहीं डरें।

नियम 7. जल्दी अमीर बनें

जॉर्डन ने शुरू में स्ट्रैटन सिक्योरिटीज फ्रैंचाइज के रूप में 'स्ट्रैटन ओकमोंट' की स्थापना की। उनकी कंपनी में शुरू में वे मुट्ठी भर कर्मचारी शामिल थे, जिन्हें वे व्यक्तिगत रूप से जानते थे। हालाँकि उन्होंने जल्दी ही खुद को और अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षित कर लिया और अनेक ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करके कम समय में अविश्वसनीय सौदे किए। अगर आप अमीर बनना चाहते हैं तो कभी हार मत मानिए। लोग हार मान लेते हैं। यदि आप में दृढ़ता है तो आप ज्यादातर लोगों से आगे निकल आएँगे। इससे भी कुछ महत्त्वपूर्ण बात ही आप सीखेंगे। जब आप कुछ करते हैं तो आप असफल भी हो सकते हैं, लेकिन ऐसा इसलिए नहीं होता, क्योंकि आप असफल होते हैं; बल्कि ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि आपने पर्याप्त सीखा नहीं है। हर बार इसे अलग तरीके से करें। एक दिन आप इसे सही करेंगे। असफलता को अपना दोस्त बनाएँ।

नियम 8. कठिन लड़ाई की तैयारी

जॉर्डन बेलफोर्ट ने अपनी दो पुस्तकों 'द वुल्फ ऑफ वॉल स्ट्रीट' एवं 'कैचिंग वुल्फ ऑफ वॉल स्ट्रीट' में अपनी रणनीतियों, उतार-चढ़ावों, बदलावों और सफलताओं के बारे में बताया है। हालाँकि सफलता हासिल करने के लिए हमेशा एक कठिन लड़ाई होती है। अपनी पहचान और भूमिका को याद रखना हमेशा महत्त्वपूर्ण होता है। अपने कौशल को निपुण करें, अपनी प्रतिभा को निखारें और आगे देखें, पीछे न हटें।

नियम 9. अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें

अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास हर समय आगे रखें और सबसे कठिन प्रयास करें। बिक्री और विपणन की अत्यधिक प्रतिस्पर्धापूर्ण दुनिया में सफल होने में बहुत सारे मनोविज्ञान शामिल हैं। एक अनूठी रणनीति का होना हमेशा सफलता की कुंजी है। कड़ी मेहनत और निरंतर प्रयास से प्रतियोगिता से खुद को अलग करना एक लक्ष्य प्राप्त करने के एकमात्र निश्चित तरीकों में से एक है।

नियम 10. खुद अपनी नियति बनाएँ

भाग्य कुछ नहीं; जो आप अपने लिए करते हैं, वह भाग्य है। जॉर्डन अकसर सफल होने के लिए आवश्यक नैतिकता और रणनीतियों के बारे में बोलते हैं। यह उम्मीद न करें कि भाग्य आपको खोज लेगा। सक्रिय रूप से

अवसरों की तलाश करें और अपना भाग्य खुद बनाएं। आपके अतीत में आपके साथ क्या हुआ है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आप अपने अतीत नहीं हैं; आप संसाधन और क्षमताएँ हैं, जिनसे आप चमकते हैं और यही सभी बदलावों का आधार है।

लेस ब्राउन

लेस्ली केल्विन लेस ब्राउन एक अमेरिकी प्रेरक वक्ता, लेखक, रेडियो डीजे, पूर्व टेलीविजन होस्ट और पूर्व राजनीतिज्ञ हैं। एक राजनीतिज्ञ के रूप में वे ओहियो प्रतिनिधि सभा के पूर्व सदस्य हैं। एक प्रेरक वक्ता के रूप में वे कैची वाक्यांश का उपयोग करते हैं—'यह संभव है!' और लोगों को उनके सपनों को साकार करने के तरीके सिखाते हैं। वे 'द लेस ब्राउन शो' के मेजबान रहे। लेस ब्राउन का जन्म 17 फरवरी, 1945 को मियामी, फ्लोरिडा, संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। मियामी के एक गरीब इलाके में लेस ब्राउन और उनके जुड़वाँ भाई को उनकी कामवाली बाई ने गोद ले लिया था। बचपन से ही लेस को डिस्क जॉकी बनने की धुन सवार थी। घर की आर्थिक स्थिति बेहद दयनीय थी। इस हाल में भी लेस ट्रांजिस्टर पर डिस्क जॉकियों के कार्यक्रम सुनते थे। लेस ने अपने एक छोटे से कमरे को काल्पनिक रेडियो स्टेशन बना लिया। बाल बनाने का ब्रश माइक्रोफोन बन जाता था और वे काल्पनिक श्रोताओं के सामने अपनी प्रस्तुति देते थे। उनकी चाह ने उन्हें रेडियो स्टेशन तक पहुँचा दिया। वे वहाँ पर डिस्क जॉकियों के लिए कॉफी व लंच आदि पहुँचाने का काम करते थे। एक दिन एक डीजे की तबीयत खराब हो गई। लाइव कार्यक्रम चल रहा था। स्टेशन मास्टर बोले, "लेस, जल्दी से कहीं से एक डीजे तलाश कर लाओ।" एक पल में ही लेस ने जवाब दिया कि "सर, डीजे का काम तो मैं खुद भी कर सकता हूँ।" स्टेशन मास्टर यह सुनकर हैरान रह गए। उन्होंने पूछा, "आर यू श्योर?" लेस ने कहा, "जी सर।" इसके बाद लेस कंट्रोल पैनल की सामनेवाली सीट पर बैठे और माइक्रोफोन का स्विच ऑन करते हुए उन्होंने कुछ ऐसा बोलना शुरू किया, जिसे ट्रांजिस्टर सुननेवाले श्रोताओं ने आज तक नहीं सुना था। आवाज में गजब का उत्साह, चुस्ती-फुरती और स्टाइल से श्रोताओं को जोड़ने की तरकीब ने उन्हें पल भर में सुपरहिट बना दिया। इसके बाद लेस ब्राउन का कॅरियर जो शुरू हुआ तो वह उन्हें राजनीतिक और सार्वजनिक भाषणों, विश्व-प्रसिद्ध मोटिवेटर और टेलीविजन के क्षेत्र तक ले गया। लेस ब्राउन ने यह साबित कर दिया कि यदि चाह हो तो लगन और संघर्ष की बदौलत व्यक्ति कहीं से भी शुरुआत कर शिखर तक पहुँच सकता है।

लेस ब्राउन के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. नकारात्मकता से खुद को उबारें

यह कहा जाता है कि ज्यादातर लोग 25 वर्ष की उम्र में मर जाते हैं, परंतु उन्हें 65 वर्ष की उम्र में दफनाया जाता है। इसलिए अपनी जिंदगी को पूरी तरह से जीने का प्रयास करिए। इस दुनिया की नकारात्मकता से खुद को कमजोर बनाने की बजाय उसी ऊर्जा से खुद को मजबूत बनाएँ। आप अपने जीवन के बारे में सब तरह के फैसले कर सकते हैं। अगर आप अपने अतीत में हुई किसी चीज के बारे में लगातार सोच रहे हैं तो वे वर्तमान में रहने की आपकी क्षमता में बाधा डाल सकते हैं। आपको उनसे छुटकारा पाना होगा।

नियम 2. देनदारियों का भुगतान करने के लिए तैयार रहना

अपने दिल की आवाज सुनें, न कि दिमाग की; और यह आपको लक्ष्य की तरफ ले जाने में मदद करेगी। जब आप कुछ पाना चाहते हैं तो आपको अपनी देनदारियों का भुगतान करने के लिए तैयार रहना होगा। हमारे पास वह क्षमता है कि हम अपनी चेतना को जाग्रत् करके एक अर्थपूर्ण और उत्पादक जीवन जी सकते हैं। जिंदगी से निपटने का मतलब है कि प्रत्येक नई चुनौती का लाभ कुछ नया सीखने और उसे पूरा करने के अवसर में है।

नियम 3. सीखना, कमाना और इच्छा करना

अच्छे जीवन के तीन तत्त्व हैं—सीखना, कमाना और इच्छा करना। जीवन का कोई छोर नहीं होता, जब तक कि कोई छोर का निर्धारण न करे। सबसे बड़ा प्रतिशोध एक बड़ी सफलता है। ज्यादातर लोग जिंदगी में फेल हो जाते हैं, इस कारण से नहीं कि उनका लक्ष्य बहुत बड़ा होता है और जिसे वे हिट नहीं कर सकते हैं; बल्कि उनका लक्ष्य बहुत छोटा होता है, जिस पर हिट करना बहुत मुश्किल है।

नियम 4. जीवन में तात्कालिकता की भावना

उन लोगों के साथ रहें, जिनसे आप कुछ सीख सकते हैं; लोग, जो जिंदगी में कुछ बड़ा करना चाहते हैं; लोग, जो बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं और जिंदगी में बड़े कामों को खोज रहे हैं। दूसरों को उनकी ऊँचाइयों तक पहुँचाने में मदद करके अपनी जिंदगी की ऊँचाई पर पहुँच जाएँ। कोई भी पूर्ण नहीं होता। आप हमेशा बेहतर कर सकते हैं और हमेशा आगे बढ़ सकते हैं। आपको अब कारवाई करनी होगी, जो आपको अपने लक्ष्यों की ओर ले जाएगी। अपने जीवन में तात्कालिकता की भावना विकसित करें।

नियम 5. अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करें

'परफेक्शन' नाम की कोई चीज नहीं है। हर बार आप पहले से बेहतर कर सकते हैं और उन्नति कर सकते हैं। अपने दोषों व गलतियों को भुलाकर आगे बढ़ें। कोई भी इनसान छोटी उम्मीदों से बड़ा नहीं होता। जीवन की चुनौतियों को सँभालने का हमारा गुण मजबूत चरित्र की पहचान है। अखंडता के साथ अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करें। कोई आज छाया में बैठा है, क्योंकि किसी ने बहुत समय पहले एक पेड़ लगाया था।

नियम 6. एक अच्छी योजना और उस पर कार्य

अपने जीवन की जिम्मेदारी खुद लें और इस बात को जान लें कि वह आप ही हैं, जो आपको वहाँ ले जाएँगे, जहाँ आप जाना चाहेंगे, कोई दूसरा नहीं। सुनिश्चित कर लें कि जब आप जमीन पर अपनी पीठ की ओर से गिरते हैं, यदि आप ऊपर आसमान की ओर देखते हैं तो खड़े हो सकते हैं। एक लक्ष्य निर्धारित करने और उसे प्राप्त करने के बीच का अंतर एक अच्छी योजना और इस योजना पर कार्य करना है।

नियम 7. मजबूत मोटिवेशन

जीवन में आपको वह नहीं मिलता, जो आप चाहते हैं; बल्कि वह मिलता है, जिसके आप काबिल हैं। किसी चीज के बारे में सपना देखना ही पर्याप्त नहीं है, आपको अंदर से उसे साकार करने की भूख होनी चाहिए। रास्ते में आनेवाली सभी कठिन बाधाओं को हराने के लिए आपके अंदर एक मजबूत मोटिवेशन होना चाहिए। आपके बारे में किसी दूसरे का सुझाव आपकी सच्चाई नहीं बनना चाहिए।

नियम 8. जिंदगी की कोई सीमा नहीं

अगर आप खुद को ऐसी स्थिति में डालते हैं, जहाँ आपको अपने कंफर्ट जोन से बाहर जाना पड़े, तब आपकी चेतना का विस्तार खुद-ब-खुद होगा। आपके द्वारा बनाई गई सीमा के अलावा जिंदगी की कोई सीमा नहीं है। कोई भी आपकी अनुमति के बिना लगातार आपका अपमान या आपकी भावनाओं को चोट नहीं पहुँचा सकता। जब भी आप हार या निराशा का सामना करते हैं तो अपना सिर नीचे रखें और आगे बढ़ें।

नियम 9. अपनी सफलता का स्तर तय करें

अपने विचार कागज पर लिखें और उनका अध्ययन करें। उन्हें बरबाद न जाने दें। हममें से बहुत से लोग अपने सपनों को नहीं जी रहे हैं, क्योंकि हम डरकर जी रहे हैं। आप ही तय करते हैं कि आपकी सीमाएँ क्या हैं और

आप ही अपनी सफलता का स्तर तय करते हैं। आप इस धरती पर अपना समय खर्च करने के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं।

नियम 10. सकारात्मक दृष्टिकोण

सकारात्मक दृष्टिकोणवाला व्यक्ति खुद से कहता है—'मैं यहाँ इस स्थिति में हो सकता हूँ; लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे यहीं रहना है।' चुनौती का सामना करते समय क्या आप पूछते हैं—मैं क्यों? या आप चुनौती को अवसर मानकर स्वीकार करते हैं? अपने आप को उन लोगों के सान्निध्य में रखें, जो आपको प्रोत्साहित करते हैं, अपना दृष्टिकोण शेयर करते हैं और आपको प्रेरित करते हैं। आप नए लक्ष्यों को प्राप्त करने की उम्मीद तब तक नहीं कर सकते, जब तक आप अपनी वर्तमान परिस्थितियों से आगे बढ़ने की उम्मीद नहीं करते हैं।

□

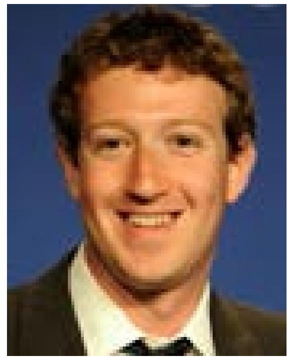

मार्क जुकरबर्ग

जुकरबर्ग एक अमेरिकी कंप्यूटर प्रोग्रामर, उद्यमी और सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक के सह-संस्थापक व अध्यक्ष है। मार्क जुकरबर्ग का पूरा नाम मार्क एलियट जुकरबर्ग है। उनका जन्म 14 मई, 1984 को न्यूयॉर्क के एक यहूदी परिवार में हुआ। मिडिल स्कूल से ही वे कंप्यूटर प्रोग्रामिंग करने लगे। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में अध्ययन के दौरान अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर उन्होंने 'फेसबुक' की स्थापना की और अपने हार्वर्ड छात्रावास के एक कक्ष से 4 फरवरी, 2004 को 'फेसबुक' का आरंभ किया। बाद में उनके समूह ने 'फेसबुक. को यूनिवर्सिटी के दूसरे लोगों तक पहुँचाया और कुछ वर्षों में यह दुनिया भर में लोकप्रिय हो गई। वर्ष 2010 से 'टाइम्स' पत्रिका ने मार्क जुकरबर्ग के नाम को दुनिया के सबसे अमीर एवं प्रतिभावान् 100 व्यक्तियों की सूची में शामिल किया। वे 'टाइम्स' पत्रिका के 'पर्सन ऑफ द ईयर' भी रह चुके हैं।

मार्क जुकरबर्ग के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. मिशन का निर्माण करना

अगर आप कोशिश करें और उसमें असफल हो जाएँ तो यह बेहतर है पर उससे कुछ जरूर सीखें, बजाय इसके कि आप कुछ करें ही नहीं। आप उस चीज को खोजिए, जिसे लेकर आप सुपर पैशनेट हों। एक मिशन का निर्माण करना और एक बिजनेस का निर्माण करना साथ-साथ चलता है। अगर सीधे व सरल शब्दों में कहें तो हम केवल पैसे बनाने के लिए सेवाओं का निर्माण नहीं करते, हम पैसे बनाते हैं, ताकि बेहतर सेवाओं का निर्माण कर सकें।

नियम 2. सबसे जरूरी काम

एक सवाल, जो मैं लगभग हर दिन अपने आप से पूछता हूँ—'क्या मैं वह सबसे जरूरी काम कर रहा हूँ, जो मैं कर सकता हूँ?' काम करने के मामले में, सीखने के मामले में और एक व्यक्ति के रूप में विकसित होने के मामले में आप सिर्फ तभी अधिक आगे बढ़ते हैं, जब आपको और अधिक लोगों से दृष्टिकोण मिलता है। मैं वास्तव में कोशिश करता हूँ और कंपनी का मिशन जिंदा रखता हूँ और बाकी सब मेरे जीवन में सरल है।

नियम 3. तेजी से बढ़ते रहें

कुछ लोग सफलता के केवल सपने देखते हैं, जबकि अन्य उसे प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं। जब आप सभी को एक आवाज और शक्ति दे देते हैं तो आमतौर पर सिस्टम बहुत अच्छा बन जाता है। इसलिए, हम अपनी जो भूमिका देखते हैं, वह है, लोगों को उस शक्ति को देना। तेजी से बढ़ते रहें और चीजों को तोड़ें। जब तक कि आप चीजों को नहीं तोड़ रहे, मतलब आप उतनी तेजी से नहीं बढ़ रहे हैं।

नियम 4. कुछ ऐसा करें, जैसा आप चाहते हों

दुनिया में सबसे बड़ा जोखिम कोई जोखिम न लेना है। यह दुनिया, जो सचमुच बहुत तेजी से बदल रही है, इसमें केवल एक रणनीति का फेल होना तय है और वह है—कोई जोखिम न लेना। बिजनेस का एक आसान-सा नियम है—अगर आप उन चीजों को पहले करते हैं, जो सरल हैं तो आप वास्तव में बहुत अधिक प्रगति कर सकते हैं और कंपनी वही चलती है, जो वास्तव में लोगों की चिंता करती है और जिनका विश्व के लिए एक सपना हो तो कुछ ऐसा करें, जैसा आप चाहते हों।

नियम 5. आप क्या बनाते हैं

मैं खुद से जो सवाल हर दिन पूछता हूँ—'क्या मैं वह सबसे जरूरी काम कर रहा हूँ, जो मैं कर सकता हूँ?' लोग इस चीज की परवाह नहीं करते कि आप क्या कहते हैं, बल्कि वे इसकी परवाह करते हैं कि आप क्या बनाते हैं। लोग सोचते हैं, इनोवेशन सिर्फ एक अच्छा आइडिया सोचने के बारे में है, लेकिन यह बहुत कुछ जल्दी आगे बढ़ने और कई चीजें ट्राई करने के बारे में है। मुझे लगता है, बतौर कंपनी, यदि आप ये दो चीजें सही कर लें—आप क्या करना चाहते हैं, इसका क्लियर डायरेक्शन दे सकें और इसे करने के लिए अच्छे-से-अच्छे लोगों को ला सकें—तब आप काफी अच्छा कर सकते हैं।

नियम 6. विश्वास की आवश्यकता

अपने जीवन में चीजों को करने के लिए एक विश्वास की आवश्यकता होती है, या विश्वास करने की क्षमता की आवश्यकता होती है, चाहे विपरीत परिस्थितियों के बावजूद कभी-कभी हमें उन उपकरणों को त्यागना पड़ता है, जिन पर हम लंबे समय से निर्भर थे। यह उन व्यवसायों में विशेष रूप से सत्य है, जहाँ प्रौद्योगिकी बदलती रहती है। श्रमिकों के पास इसके साथ बदलने की क्षमता होती है।

नियम 7. समस्या के बजाय समाधान

हममें से बहुतों को अपनी पूरी क्षमता का एहसास नहीं है, क्योंकि हमारे डर हमें अवरुद्ध करते हैं। अपने दोषों एवं गलतियों के लिए खुद को क्षमा करें और आगे बढ़ें। समस्या के बजाय समस्या के समाधान पर ध्यान केंद्रित करके मैं एक बड़े संकट को एक बड़े अवसर में बदल सकता हूँ। क्या आपने अपने जीवन को स्वीकार कर लिया है? क्या आप अपने शेष दिनों को निराशा से खत्म करने की इजाजत दे रहे हैं? समय आपका सबसे अनमोल उपहार है, न कि आलस्य या नकारात्मकता में घिरे रहना।

नियम 8. भूख और प्रेरणा का स्रोत ढूँढ़ना होगा

कोई भी आपसे ज्यादा आपके लक्ष्यों की परवाह नहीं कर सकता। कोई भी उनको आपसे ज्यादा समय नहीं दे सकता। आपको स्वयं अपनी भूख और प्रेरणा का स्रोत ढूँढ़ना होगा। असफल होने में कोई आनंद नहीं है; लेकिन आपको खुद को चुनना होगा और दौड़ में वापस आना होगा। आपकी जीत का एकमात्र तरीका है—अपने आप को वर्तमान परिस्थितियों से परे चुनौती देना।

नियम 9. अभ्यास, अभ्यास और अभ्यास!

सकारात्मक रूप से तैयार किए गए लोग जीवन को सकारात्मक प्रतिक्रिया देने का विकल्प चुनते हैं। जब कोई समस्या होती है तो वे दोष नहीं देते या किसी कारण की तलाश नहीं करते। वे समाधान की तलाश करते हैं। आपकी मुसकान आपको सकारात्मक चेहरा देगी, जो आपके आसपास के लोगों को आरामदायक महसूस करवाएगी। हमेशा महसूस करें कि आप बेहतर कर सकते हैं। आपने सबसे अच्छा काम अभी तक नहीं किया है—अभ्यास, अभ्यास और अभ्यास!

नियम 10. हमेशा आगे बढ़ने का लक्ष्य

एक बार जब आप किसी चीज के लिए प्रतिबद्ध हो जाते हैं और उसे हासिल कर लेते हैं तो आप आत्म-पूर्ति का अनुभव करते हैं—सफलता और सशक्तीकरण की भावना का। आप एक और लक्ष्य निर्धारित करने या एक नया सपना देखने के लिए कभी भी बूढ़े नहीं होते। जब आप हमेशा आगे बढ़ने और लक्ष्य की ओर काम करने की सोच रखते हैं तो जीवन अधिक अर्थपूर्ण होता है। लक्ष्य आपको अपनी ऊर्जा को क्रिया में बदलने में मदद करते हैं।

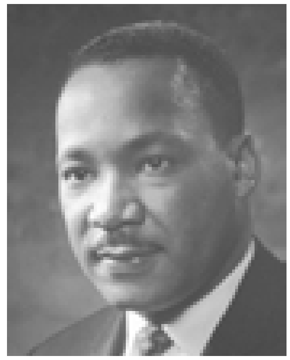

मार्टिन लूथर किंग जूनियर

मार्टिन लूथर अमेरिका के एक पादरी, ऐक्टिविस्ट और अफ्रीकी-अमेरिकी नागरिक अधिकारों के संघर्ष के प्रमुख नेता रहे। उनका जन्म 15 जनवरी, 1929 को अटलांटा, अमेरिका में हुआ। उनके प्रयत्नों से अमेरिका में रंगभेद और नागरिक अधिकारों के क्षेत्र में प्रगति हुई। इसलिए उन्हें आज मानव अधिकारों के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। सन् 1964 में विश्व शांति के लिए उन्हें 'नोबेल पुरस्कार' से नवाजा गया। कई अमेरिकी विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद उपाधियाँ दीं। अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं ने उन्हें मेडल प्रदान किए। 'टाइम' पत्रिका ने उन्हें वर्ष 1963 का 'मैन ऑफ द ईयर' चुना। वे गांधीजी के अहिंसक आंदोलन से बहुत प्रभावित थे। गांधीजी के आदर्शों पर चलकर ही मार्टिन लूथर किंग ने अमेरिका में इतना सफल आंदोलन चलाया, जिसे अधिकांश गोरों का भी समर्थन मिला। इसलिए उन्हें 'अमेरिका का गांधी' भी कहा जाता है। 'स्ट्राइड टुवर्ड फ्रीडम' एवं 'व्हाय वी कैन नॉट वेट' उनकी लिखी दो चर्चित पुस्तकें हैं। मार्टिन लूथर किंग की प्रिय उक्ति थी —"हम वह नहीं हैं, जो हमें होना चाहिए और हम वह नहीं हैं, जो होने वाले हैं; लेकिन ईश्वर की कृपा है कि हम वह भी नहीं हैं, जो हम थे।" 4 अप्रैल, 1968 को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई।

मार्टिन लूथर किंग जूनियर के अनुसार सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. व्यक्ति को जानने का पैमाना

अंधकार से अंधकार को दूर नहीं किया जा सकता है, केवल प्रकाश से ही ऐसा किया जा सकता है। नफरत से नफरत को नहीं हटाया जा सकता है, केवल प्यार से ही ऐसा किया जा सकता है। किसी भी व्यक्ति को जानने का पैमाना यह नहीं है कि वह आराम और सुविधा के क्षणों में कहाँ रहता है, बल्कि यह है कि वह चुनौती और विवादों के क्षणों में कहाँ पर है?

नियम 2. कानून व व्यवस्था न्याय की स्थापना के लिए

आँख के बदले आँख के प्राचीन सिद्धांत से तो एक दिन सभी अंधे हो जाएँगे। कहीं भी अन्याय का होना प्रत्येक स्थान पर न्याय के लिए खतरा है और एक अन्यायपूर्ण कानून को न मानना एक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। कानून व व्यवस्था न्याय की स्थापना के लिए होती है और जब वे इसमें नाकाम रहते हैं तो वे खतरनाक ढंग से बने बाँध की तरह हो जाते हैं, जो सामाजिक प्रगति के प्रवाह को थाम लेते हैं।

नियम 3. लक्ष्य के किए काम में जुट जाएँ

आपके ऊपर तब तक कोई सवार नहीं हो सकता, जब तक कि आपकी कमर झुकी नहीं हो। इसलिए अपनी कमर सीधी करें और लक्ष्य के लिए काम में जुट जाएँ। अच्छे काम करने के लिए हर समय सही होता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा लक्ष्य नहीं ढूँढ़ पाया, जिसके लिए वह मर सकता है तो वह जीवित रहने के लायक नहीं है।

नियम 4. नैतिकता से प्रतिष्ठा मिलती है

नैतिकता वह अस्त्र है, जो चरित्र को उज्ज्वल बनाते हुए प्रतिष्ठा ही प्रदान करती है। नैतिकता से प्रतिष्ठा मिलती है और प्रतिष्ठा से यश, कीर्ति, गौरव स्वयं चारों दिशाओं में फैल जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को यह फैसला कर लेना चाहिए कि वह रचनात्मक परोपकारिता के आलोक में चलेगा या विनाशकारी स्वार्थ के अँधेरे में?

नियम 5. प्रेम के प्रति वास्तविक अभिव्यक्ति

प्रेम एकमात्र ऐसी शक्ति है, जो शत्रु को मित्र में बदल सकती है। भगवान् के प्रति निरंतर और संपूर्ण समर्पण से ही प्रेम के प्रति वास्तविक अभिव्यक्ति उत्पन्न होती है। मनुष्य अपना अहंकार त्यागकर ही ऊपर उठ सकता है; क्योंकि अहंकार में सिर्फ सोच ऊँची रहती है, पर चरित्र का पतन होता जाता है।

नियम 6. सच्चा लीडर लोगों के विचारों के पीछे नहीं चलता

मानव की प्रगति कभी अपने आप नहीं होती। न्याय के लक्ष्य की ओर बढ़ाए गए हर कदम पर बलिदान, संघर्ष और तकलीफें होती हैं। लक्ष्य के लिए समर्पित व्यक्तियों का अथक परिश्रम और जुनून होता है और बिना चेष्टा के किसी भी कार्य में सफलता पाना अत्यंत कठिन होता है। आप लीडर बनें। एक सच्चा लीडर लोगों के विचारों के पीछे नहीं चलता, बल्कि वह लोगों के विचारों को बदल देता है। वास्तविक नेता सर्वसम्मति की तलाश नहीं करता, उसे निर्मित करता है।

नियम 7. प्यार के साथ जुड़ने का निर्णय

कोई भी व्यक्ति आपको इस पतन पर नहीं ले जा सकता कि आप उससे नफरत करें। मैंने प्यार के साथ जुड़ने का निर्णय लिया है। नफरत का भार बहुत ज्यादा होता है, जिसे उठाया नहीं जा सकता। मैंने प्रेम को ही अपनाने का निर्णय किया है। घृणा करना तो बेहद कष्टदायक और बोझिल काम है। जिंदगी का निरंतर महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आप दूसरों के लिए क्या कर रहे हैं?

नियम 8. रचनात्मकता

यदि बुरा व्यक्ति कोई आधार लाता है तो उस पर अच्छे व्यक्ति को योजना बनानी होगी। यदि बुरा व्यक्ति विध्वंस करता है तो अच्छे व्यक्ति को निर्माण करना होगा। यदि बुरा व्यक्ति बुरे शब्दों के साथ कोई बात कहता है तो अच्छे व्यक्ति को उसमें प्यार की चमक देनी होगी। दमनकर्ता और अत्याचारी कभी अपनी खुशी से स्वतंत्रता नहीं देंगे। अत्याचार व दमन भुगतनेवालों को इसकी माँग करनी होगी, तभी यह मिलेगी। किसी विवाद के समापन में हम अपने शत्रुओं के कहे शब्द याद नहीं रखते, बल्कि उस दौरान अपने मित्रों के मौन को याद रखते हैं।

नियम 9. मानवता की व्यापक चिंता

व्यक्ति जब तक व्यक्तिगत चिंताओं के दायरे से ऊपर उठकर पूरी मानवता की व्यापक चिंताओं के बारे में नहीं सोचता, तब तक उसने वास्तव में जिंदगी जीना ही शुरू नहीं किया है। दीर्घायु होना नहीं, बल्कि जीवन की उत्कृष्टता महत्त्वपूर्ण होती है। हमारा जीवन उस वक्त समापन की ओर चला जाता है, जब हम उन बातों पर खामोश रहते हैं, जो महत्त्व रखती हैं।

नियम 10. हर व्यक्ति महान् है

हर काम दूसरों के हिसाब से नहीं किया जा सकता, क्योंकि सबका सामर्थ्य अलग होता है। कोयले और सोने में बहुत अंतर होता है, पर दोनों का महत्त्व अपने स्थान पर कायम रहता है। अत: कोई निम्न नहीं, सबका उपयोग है। इसी प्रकार, हर व्यक्ति महान् है, क्योंकि हर व्यक्ति सेवा कर सकता है। आपको सेवा के लिए किसी महाविद्यालय की डिग्री की जरूरत नहीं है। सेवा करने के लिए बस, आपके हृदय में दया होनी चाहिए और आत्मा, जो प्रेम से उत्पन्न हो।

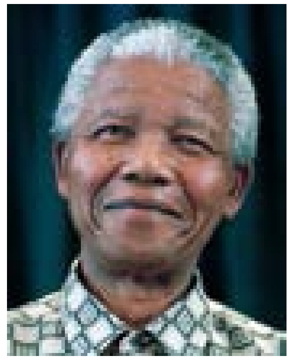

नेल्सन मंडेला

दक्षिण अफ्रीका के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला का जन्म 18 जुलाई, 1918 को म्वेजो, ईस्टर्न केप, दक्षिण अफ्रीका में हुआ। मंडेला के पिता हेनरी म्वेजो कस्बे के जनजातीय सरदार थे। स्थानीय भाषा में सरदार के बेटे को 'मंडेला' कहते थे, जिससे उन्हें अपना उपनाम मिला। जब मंडेला बड़े हुए तो उन्होंने पाया कि उनके देश में अश्वेत लोगों के साथ रंगभेद की नीति अपनाई जाती है। तब वे रंगभेद की विरोधी 'अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस' से जुड़ गए। रंगभेद के विरोध के कारण उन्हें 27 वर्ष रॉबेन द्वीप की जेल में बिताने पड़े। 12 जुलाई, 1964 को उन्हें उम्रकैद की सजा सुनाई गई। जीवन के 27 वर्ष जेल में बिताने के बाद अंततः 11 फरवरी, 1990 को उनकी रिहाई हुई। सन् 1990 में उन्होंने श्वेत सरकार से अलग राज्य के लिए समझौता किया और नए राष्ट्र दक्षिण अफ्रीका की नींव रखी। संयुक्त राष्ट्र-संघ उनके जन्म-दिवस (18 जुलाई) को प्रत्येक वर्ष 'नेल्सन मंडेला अंतरराष्ट्रीय दिवस' के रूप में मनाता है। दक्षिण अफ्रीका के लोग उन्हें 'राष्ट्रपिता' कहते हैं। 5 दिसंबर, 2013 को उनका निधन हो गया।

नेल्सन मंडेला के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. आजादी का आसान रास्ता नहीं

आजाद होना सिर्फ स्वयं को जंजीर से निकालना ही नहीं है, बल्कि इस तरह अपना जीवन व्यतीत करना है, जिससे दूसरों का गौरव और स्वतंत्रता भी बढ़े। आजाद होने के लिए पूरी दुनिया में कोई भी आसान रास्ता नहीं है। अगर हम कभी किसी बड़े पहाड़ पर चढ़ते हैं, उसके बाद ही हमें पता चलता है कि अभी तो ऐसे कई और पहाड़ चढ़ने को बाकी हैं।

नियम 2. कभी किसी ने सोचा है ...

क्या कभी किसी ने सोचा है कि वह जो चाहता था, वह उसे इसलिए नहीं मिला, क्योंकि उसके पास प्रतिभा नहीं थी, या शक्ति नहीं थी या धीरज नहीं था अथवा प्रतिबद्धता नहीं थी? जब तक काम कर न लिया जाए, तब तक वह काम असंभव लगता है। बुद्धिमानी इसी में होगी कि हम लोगों को वह काम करने के लिए मना लें और बाद में उनको यही लगने दें कि यह करने का विचार उन्हीं का था।

नियम 3. कम स्तर का जीवन जीना गलत

छोटा काम करना या छोटी सोचवालों के साथ रहने से कोई फायदा नहीं है। आप जिस तरह का जीवन व्यतीत कर सकते हैं, उससे कम स्तर का जीवन जीना गलत है। जीवन में कभी न गिरना उसकी सुंदरता नहीं; लेकिन गिरकर उठना और अपने सपनों को हासिल करना जीवन की खूबसूरती है। जीवन में कभी न भूलें कि दूसरों के

काम और जीवन में तभी दखल दें, जब वे लोग शांति पसंद करते हों। जब एक व्यक्ति निश्चय कर लेता है, तब वह किसी भी मुसीबत से उबर सकता है।

नियम 4. जीत का जश्न

जब कभी अच्छी बातें होती हैं, विशेष रूप से जब आप जीत का जश्न मनाते हैं, तब आपके लिए दूसरों को आगे रखकर पीछे से नेतृत्व करना बेहतर होगा। जब भी खतरा हो, आपको आगे की लाइन में आना चाहिए। तब लोग आपके नेतृत्व की सराहना करेंगे। एक अच्छा नेता स्पष्ट रूप से और अच्छी तरह से एक बहस में शामिल होता है, क्योंकि वह जानता है कि अंत में वह और दूसरा पक्ष करीब होंगे और इस तरह मजबूती से उभरता है। आपको ऐसा विचार नहीं आएगा, जब तक आप अभिमानी, सतही और बेखबर हैं।

नियम 5. डर पर विजय पाना साहस है

मैंने यह जाना है कि डर का न होना साहस नहीं है, बल्कि डर पर विजय पाना साहस है। बहादुर वह नहीं है, जो भयभीत नहीं होता; बल्कि वह है, जो इस भय को परास्त करता है। शत्रु के साथ अगर आपको शांति चाहिए तो आपको अपने शत्रु के साथ काम करना होगा। फिर वह आपका साथी बन जाएगा। मनुष्य की अच्छाई एक ज्वाला की तरह है, जो छिपी तो रह सकती है, लेकिन खत्म नहीं हो सकती।

नियम 6. समय सबकुछ सही करने में सक्षम

हमें समय का बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए और हमेशा यह एहसास होना चाहिए कि समय सबकुछ सही करने में सक्षम है। समय पर जब पानी उबलना शुरू हो जाए तो उस समय उसे और गरम होने से रोकना एक बहुत बड़ी मूर्खता है।

नियम 7. गिरकर हर बार उठना

भले ही आपको कोई बीमारी हो तो भी आप बैठकर मूर्ख की तरह उदास न हो जाएँ। जीवन का भरपूर आनंद लें और आपको जो बीमारी लगी है, उसे चुनौती दें। जीवन में सबसे बड़ा गौरव कभी न गिरने में निहित नहीं है, बल्कि गिरकर हर बार उठने में है।

नियम 8. सच्ची शिक्षा का लक्ष्य चरित्र के साथ बुद्धिमत्ता का विकास

शिक्षा ही सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे हम दुनिया को बदल सकते हैं। शिक्षा का कार्य किसी व्यक्ति को ऐसे शिक्षित करना है कि वह सूक्ष्म रूप से सोचे और अधिक सोचे। सच्ची शिक्षा का लक्ष्य चरित्र के साथ बुद्धिमत्ता का विकास करना है। पूरी एकाग्रता से विचार करने की क्षमता देना ही शिक्षा का कार्य है। कोई भी देश वास्तव में तब तक विकसित नहीं हो सकता, जब तक उसके सभी नागरिक शिक्षित नहीं हो जाते।

नियम 9. जिंदगी में प्रतिबद्धता

जिंदगी में प्रतिबद्ध होने की जरूरत है। जब आप इसे कर लेंगे, तब जिंदगी आपको जवाब देगी। परिवर्तन मुश्किल है, लेकिन अकसर अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अपने लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से देखें, विशेषकर जब आप उन्हें तय करते हैं। उन्हें अपने दिमाग में जकड़ लें, जब तक कि वे आपकी आदत न बन जाएँ। आपके जीवन में प्रत्येक दिन आपके द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर आपके पास अपने भाग्य को बदलने का अवसर होता है। यदि आप स्वयं योजना नहीं बनाते हैं तो जिंदगी आपकी योजना बनाती है। सबसे महत्त्वपूर्ण चीजों में से एक कार्य, जो आपको करना है, वह है—एक ऐसा लक्ष्य चुनना, जो आपके लिए महत्त्वपूर्ण है।

नियम 10. स्वतंत्रता से सफलता

समय बहुत तेज है। उसके साथ चलनेवाले ही यहाँ सफल होते हैं और विपरीत दिशा में जानेवाले अपने विनाश को ही आमंत्रित करते हैं। सौ सफल विचार बनाने से अच्छा एक सफल विचार को गति देना है। यह सफलता का मूल मंत्र है। अपने आपको सफलताओं से मत आँकिए, बल्कि जितनी बार गिरें और गिरकर उठें, उस बल पर आँकिए। पैसे से सफलता हासिल नहीं होगी, यह स्वतंत्रता से हासिल होगी।

जिग जिगलर

जिग जिगलर एक प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक, सेल्समैन और प्रेरक वक्ता रहे। उनका वास्तविक नाम हिलेरी हिंटन जिगलर था, लेकिन उन्हें उनके लोकप्रिय नाम 'जिग जिगलर' से जाना गया। जिग जिगलर का जन्म 6 नवंबर, 1926 को दक्षिण-पूर्व अलबामा के कॉफी काउंटी, संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। जिग जिगलर ने अपने कॅरियर की शुरुआत एक सेल्समैन के रूप में की और एक विक्रेता के रूप में सफलता के नए कीर्तिमान गढ़े। असाधारण रूप से अच्छे सेल्समैन होने के बाद वे एक प्रसिद्ध लेखक बने, जिसके बाद वे एक उत्कृष्ट प्रेरक वक्ता के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे लोगों को स्वयं-सहायता एवं सकारात्मकता तथा दिशा-निर्देश प्रदान करते थे और जल्दी ही वे दुनिया के सबसे लोकप्रिय एवं प्रेरक वक्ताओं में शामिल हो गए। 28 नवंबर, 2012 को टेक्सास के प्लानो के एक अस्पताल में निमोनिया से उनकी मृत्यु हो गई।

जिग जिगलर के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. मिशन को लेकर पक्की समझ

अगर आप इसका सपना देख सकते हैं तो आप इसे पा भी सकते हैं। आप जीवन में जो भी चाहते हैं, वह आपको मिलेगा, यदि आप बहुत से लोगों की—वे जो चाहते हैं, उसे पाने में मदद करते हैं। अपनी कमजोरी पर ध्यान दें और उसे अपनी ताकत में बदल दें, यही सफलता है। याद रखें, विशिष्ट लोगों में एक चीज समान होती है—मिशन को लेकर पक्की समझ।

नियम 2. विजेता की तरह देखना

अगर आप एक लक्ष्य तक पहुँचना चाहते हैं तो वास्तविकता में लक्ष्य तक पहुँचने से पहले अपने दिमाग में खुद को वहाँ पहुँचते हुए देखना होगा। अगर आप खुद को एक विजेता की तरह नहीं देखते तो आप एक विजेता की तरह परफॉर्म भी नहीं कर सकते। अपना लक्ष्य प्राप्त कर आप क्या हासिल करते हैं, यह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना यह कि अपना लक्ष्य प्राप्त कर आप क्या बनते हैं?

नियम 3. सफलता की कीमत का उपभोग

असफलता के कपड़े पहनकर आप सफलता की सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकते। असफलता और दु:ख का मुख्य कारण, जो आप सबसे अधिक चाहते हैं, उसके बदले आप जो अभी तुरंत चाहते हैं, को चुनना है। असफलता एक घटना है, व्यक्ति नहीं। असफलता मार्ग से भटकाव है, एक बंद गली नहीं। आप सफलता की कीमत नहीं चुकाते, आप सफलता की कीमत का उपभोग करते हैं।

नियम 4. जीतने की उम्मीद रखें

आप जीतने के लिए पैदा हुए थे; लेकिन विजेता बनने के लिए आपको जीतने के लिए प्लान करना होगा, तैयारी करनी होगी और जीतने की उम्मीद रखनी होगी। आप नहीं जानते कि कब एक क्षण और कुछ सच्चे शब्द आपके जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। आप लगभग हर उस चीज में सफल हो सकते हैं, जिसके लिए आपके अंदर असीम उत्साह है। आपका रवैया, न कि आपकी योग्यता, आपकी ऊँचाई का निर्धारण करेगी। आपके पास जो है, उसके लिए आप जितना आभारी होंगे, उतना ही अधिक आपके पास और होगा आभारी होने के लिए।

नियम 5. ईमानदारी भयहीन करती है

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा जीवन में सफलता-प्राप्ति के लिए परम आवश्यक हैं—जीवन के सभी क्षेत्रों में। वास्तव में, अच्छी बात यह है कि कोई भी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा विकसित कर सकता है। ईमानदारी के साथ आपको किसी चीज का भय नहीं होता, क्योंकि आपके पास छिपाने के लिए कुछ नहीं होता। ईमानदारी के साथ आप सही चीज करेंगे। इससे आपको कोई ग्लानि नहीं रहेगी। ईमानदारी, उत्पादकता और एक चारित्रिक आधार, जिससे आप काम करते हैं, से लाभप्रदता आती है।

नियम 6. प्रतिबद्धता और बदलाव

जितना आगे दिखाई दे, उतना आगे जाइए और फिर आपको और आगे दिखाई देगा, क्योंकि जब अवरोध आते हैं, आप अपने लक्ष्य तक पहुँचने की दिशा बदल देते हैं; आप वहाँ पहुँचने का निर्णय नहीं बदलते। जब आप खुद पर दृढ़ रहेंगे तो जिंदगी आपके लिए कहीं आसान हो जाएगी और जब आप दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं, इस प्रक्रिया में आप स्वयं प्रोत्साहित होते हैं, क्योंकि आप उस व्यक्ति के जीवन में एक प्रतिबद्धता और बदलाव ला रहे हैं। प्रोत्साहन वास्तव में बदलाव लाता है।

नियम 7. अच्छी से बेहतर जिंदगी

प्रेरणा आपको आगे बढ़ाती है और आदत आपको वहाँ पहुँचाती है। मात्र यह कहने से कि आप अच्छे से बेहतर हैं, ऐसा नहीं बना देता। लेकिन जब आप समझ जाते हैं कि अच्छी से बेहतर जिंदगी कैसे बनती है और आप उसे स्वयं पर लागू करते हैं तो आपकी जिंदगी वास्तव में अच्छी से बेहतर बन जाती है। यदि आप किसी चीज पर निशाना नहीं लगाते तो आप हर बार उसे हिट कर देंगे।

नियम 8. विजेता में परिणत

योग्यता आपको शीर्ष पर ले जा सकती है, लेकिन वहाँ बने रहने के लिए आपको चरित्र की आवश्यकता होती है। यह मायने नहीं रखता कि आप कितनी दूर गिर जाते हैं, बल्कि यह मायने रखता है कि आप कितना ऊँचा बाउंस करते हैं। यदि आप स्वयं को एक विजेता के रूप में नहीं देखते तो आप एक विजेता में परिणत नहीं हो सकते। यदि आप सीखने के लिए तैयार नहीं हैं तो कोई आपकी मदद नहीं कर सकता है। यदि आप सीखने के लिए दृढ़ हैं तो कोई आपको रोक नहीं सकता है। यह हमारा चरित्र है, जो हमें जगाता है; प्रतिबद्धता है, जो काम पर लगाती है और अनुशासन है, जो हमें वह पूरा करने की शक्ति देता है।

नियम 9. आप सक्षम हैं

सर्वोत्तम की आशा करें। बदतर के लिए तैयार रहें। जो आता है, उसका लाभ उठाएँ। सारे बहाने एक तरफ रख दें और यह याद रखें कि आप सक्षम हैं। यदि आप हार से सीखते हैं तो वास्तव में आप हारे नहीं। ये वो नहीं है, जो आपके पास है; ये वो है, जिसका आप इस्तेमाल करते हैं, जो अंतर डालता है। कभी-कभी सफल होने के लिए जिस चीज का आपको सामना करने की जरूरत होती है, वह है—विपत्ति। लक्ष्य आपको अपने तथा दूसरों के लिए और भी अधिक करने में सक्षम बनाता है।

नियम 10. क्षमता का अधिकतम उपयोग

सफलता अपनी क्षमता का अधिकतम उपयोग है। सफलता कभी इससे नहीं मापी जानी चाहिए कि आपके पास कितना धन है। हमेशा याद रखें कि आपकी वर्तमान परिस्थिति आपकी अंतिम मंजिल नहीं है। सर्वश्रेष्ठ आना बाकी है। संतुलित सफलता के लिए ईमानदारी, चरित्र, सत्यनिष्ठा, विश्वास, प्रेम और वफादारी मील के पत्थर हैं।

मलाला यूसुफजई

मलाला युसुफजई को बच्चों के अधिकारों की कार्यकर्ता के रूप में जाना जाता है। उनका जन्म 12 जुलाई, 1997 को पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वाह प्रांत के स्वात जिले में हुआ। तालिबान ने वर्ष 2007 से मई 2009 तक स्वात घाटी पर कब्जा कर रखा था। इसी बीच तालिबान के भय से लड़कियों ने स्कूल जाना बंद कर दिया था। मलाला तब आठवीं की छात्रा थीं और उनका संघर्ष यहीं से शुरू होता है। 13 साल की उम्र में ही वे तहरीक-ए तालिबान शासन के अत्याचारों के बारे में एक छद्म नाम 'गुल मकई' (बी.बी.सी. के लिए ब्लॉगिंग) द्वारा स्वात के लोगों में नायिका बन गईं। अक्तूबर 2012 में केवल 14 वर्ष की उम्र में अपने उदारवादी प्रयासों के कारण वे आतंकवादियों के हमले का शिकार बनीं, जिससे वे बुरी तरह घायल हो गईं और अंतरराष्ट्रीय मीडिया की सुर्खियों में आ गईं। मलाला पर यह हमला 9 अक्तूबर, 2012 को खैबर पख्तूनख्वाह प्रांत की स्वात घाटी में किया था। गंभीर रूप से घायल मलाला को इलाज के लिए ब्रिटेन ले जाया गया। वहाँ उन्हें क्वीन एलिजाबेथ अस्पताल में भरती कराया गया। देश-विदेश में मलाला के स्वस्थ होने के लिए प्रार्थनाएँ की गईं और आखिरकार मलाला वहाँ से स्वस्थ होकर लौटीं। महिलाओं के लिए अनिवार्य शिक्षा की माँग करते हुए तालिबानी गोली का शिकार हुईं। पाकिस्तान की 22 वर्षीया सामाजिक कार्यकर्ता मलाला यूसुफजई को वर्ष 2014 का 'नोबेल शांति पुरस्कार' दिया गया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा उनके 16वें जन्मदिन पर 12 जुलाई को 'मलाला दिवस' घोषित किया गया।

मलाला यूसुफजई के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. शांति, बातचीत और शिक्षा

अगर आप किसी व्यक्ति को मारते हैं तो यह दिखता है कि आप उससे डरे हुए हैं। आपको औरों के साथ क्रूरता और उतनी कठोरता से व्यवहार नहीं करना चाहिए। आप औरों से जरूर लड़िए, लेकिन शांति, बातचीत और शिक्षा के माध्यम से।

नियम 2. पुस्तक, कलम, बच्चा और शिक्षक

अगर आप फ्यूचर जेनरेशन पर फोकस नहीं करते, इसका मतलब आप अपने देश को बरबाद कर रहे हैं। एक पुस्तक, एक कलम, एक बच्चा और एक शिक्षक दुनिया बदल सकते हैं।

नियम 3. कदम उठाऊँ और आगे बढ़ जाऊँ

कुछ लोग और लोगों से कुछ करने के लिए कहते हैं। मेरा मानना है कि मैं किसी और का इंतजार क्यों करूँ? क्यों न मैं एक कदम उठाऊँ और आगे बढ़ जाऊँ?

नियम 4. कोई डरा हुआ न हो

एक डॉक्टर केवल मरीजों का इलाज कर सकता है। एक डॉक्टर केवल उनकी मदद कर सकता है, जिन्हें गोली लगी है या जो घायल हैं; लेकिन एक राजनीतिज्ञ लोगों को घायल होने से रोक सकता है। एक राजनीतिज्ञ एक ऐसा कदम उठा सकता है कि कल कोई डरा हुआ न हो।

नियम 5. कृतज्ञता सबसे गुणकारी

सभी मानवीय भावनाओं में कृतज्ञता सबसे गुणकारी है। आपके पास जो है, उसके लिए आप जितनी अधिक कृतज्ञता प्रकट करेंगे, उससे अधिक आपके पास कृतज्ञता प्रकट करने के लिए होने की संभावना होगी।

नियम 6. समस्याओं का समाधान—शिक्षा

चलिए, अब अपना भविष्य बनाएँ; चलिए, अपने सपनों को कल की हकीकत बनाएँ। बहुत सारी समस्याएँ हैं, लेकिन मुझे लगता है, इन सभी समस्याओं का समाधान है; वो बस, एक है और वह शिक्षा है। मेरा मानना है कि बंदूक में कोई शक्ति नहीं है। हम रोशनी का महत्त्व तब समझते हैं, जब हम अंधकार देखते हैं।

नियम 7. एक आवाज भी ताकतवर

जब पूरी दुनिया खामोश हो, तब एक आवाज भी ताकतवर बन जाती है। अगर आप खड़े होकर बोलेंगे नहीं तो आतंकवाद खत्म नहीं होगा, बल्कि और फैलेगा। आतंकवादियों ने सोचा कि वे मेरा लक्ष्य बदल देंगे और मेरी महत्त्वाकांक्षाओं को दबा देंगे; लेकिन मेरी जिंदगी में इसके बजाय बदला, कमजोरी, डर और निराशा की मौत हो गई; शक्ति, सामर्थ्य और साहस का जन्म हो गया।

नियम 8. डर से शक्तिशाली

मैं कहती हूँ कि मैं डर से शक्तिशाली हूँ। मैं चरमपंथियों के बेटे-बेटियों के लिए शिक्षा चाहती हूँ, खासतौर से तालिबानियों के लिए मैं पहले ही मौत देख चुकी हूँ और जानती हूँ कि मौत मुझे मेरे शिक्षा के मकसद में मदद कर रही है। मौत मुझे मारना नहीं चाहती। मैं बस, एक चीज चाहती हूँ—शिक्षा और मैं किसी से नहीं डरती। मैं शांति में यकीन करती हूँ। मैं दया में यकीन करती हूँ। मैं शिक्षा प्राप्त करूँगी, चाहे घर में, स्कूल में या कहीं और।

नियम 9. स्त्री शक्तिशाली है

जब भगवान् ने स्त्री और पुरुष बनाए, वे सोच रहे थे, 'मैं अगले मनुष्य को पैदा करने की ताकत किसे दूँ?' और भगवान् ने स्त्री का चुनाव किया और यह एक बहुत बड़ा प्रमाण है कि स्त्री शक्तिशाली है। अपनी बेटियों का सम्मान करिए। वे सम्माननीय हैं। मेरा मानना है कि यह एक स्त्री का अधिकार है कि वह फैसला करे कि उसे क्या पहनना है और अगर एक स्त्री बीच पर बिना कुछ पहने जा सकती है तो वह सबकुछ क्यों नहीं पहन सकती?

नियम 10. बोल, मुसकान और कृतज्ञ हृदय

मैं उस लड़की के रूप में याद किया जाना नहीं चाहती, जिसे गोली मार दी गई थी; बल्कि मैं उस साहसी लड़की के रूप में याद किया जाना चाहती हूँ, जिसने खड़े होकर सामना किया। अगर आप दोस्तों की खोज करते रहे तो आप पाएँगे कि वे बहुत ही कम हैं। यदि आप खुद एक दोस्त बनते हैं तो आप पाएँगे कि वे हर जगह हैं। उन चीजों में, जो आप देकर भी रख सकते हैं, जिसमें हैं आपके बोल, एक मुसकान और एक कृतज्ञ हृदय।

मार्क क्यूबन

मार्क क्यूबन एक अनुभवी अमेरिकी व्यवसायी, निवेशक, लेखक, टेलीविजन हस्ती और परोपकारी व्यक्ति हैं। क्यूबन का जन्म 31 जुलाई, 1958 को पिट्सबर्ग, पेंसिल्वेनिया में हुआ। अपने जीवन की छोटी सी शुरुआत करके आज वे एक सफल अमेरिकी व्यापारी और निवेशक हैं। व्यवसाय की दुनिया में क्यूबन का पहला कदम 12 साल की उम्र में पड़ा, जब उन्होंने महँगे बास्केटबॉल के जूते की एक जोड़ी खरीदने के लिए कचरा बैग बेचे। बाद में वे सॉफ्टवेयर, फिल्म वितरण, सामाजिक स्टार्टअप कंपनियों में निवेश और एन.बी.ए. बास्केटबॉल टीम जैसे विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसाय स्थापित करते हुए आगे बढ़े। उन्होंने अधिकांश व्यवसाय ऐसे समय में शुरू किए, जब दुनिया में इंटरनेट की तेजी देखी जा रही थी और इससे उन्हें अधिकतम लाभ प्राप्त करने में मदद मिली। वे नेशनल बास्केटबॉल एसोसिएशन के डलास मावेरिक्स के मालिक, 2929 एंटरटेनमेंट के भागीदार और एएक्सएस टी.वी. के अध्यक्ष हैं। वे ए.बी.सी. रियलिटी टेलीविजन श्रृंखला 'शार्क टैंक' के मुख्य 'शार्क' निवेशकों में से एक हैं। वर्ष 2011 में क्यूबन ने एक इ-बुक 'हाउ टू विन एट द स्पोर्ट ऑफ बिजनेस' लिखी, जिसमें उन्होंने व्यापार और खेल में अपने अनुभवों का वर्णन किया है।

मार्क क्यूबन के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. दुनिया का सबसे सर्वश्रेष्ठ इनसान बनना

अवसरों को बनाना मतलब उस तरफ ध्यान देना, जहाँ दूसरे लोग नहीं देख रहे होते। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितनी बार असफल हुए हैं। आपको तो सिर्फ एक बार ही सही साबित होना है। एक बार आपने उसे ढूँढ़ लिया, जिसे आप करना पसंद करते हैं, तब आपके लिए केवल एक काम बचता है—उस काम में दुनिया का सबसे सर्वश्रेष्ठ इनसान बनना। जीवन में लोगों को सफलता अपने काम में जुनून और प्रतिबद्धता लाने से मिलती है।

नियम 2. ऐसा ढूँढ़ें, जो आपको करना अच्छा लगता है

इस समय आप जो कुछ भी अध्ययन कर रहे हों, यदि आप अपने बिज़नेस की बारीकियों, बिजनेस नेटवर्क आदि में तेजी नहीं लाते तो आपका बिजनेस फेल हो जाएगा। ऐसे काम करें कि जैसे बाहर कोई आपसे सबकुछ छीनने के लिए चौबीस घंटे काम कर रहा हो। कुछ ऐसा ढूँढ़ें, जो आपको करना अच्छा लगता है। अगर उससे पैसे नहीं बना पाते हैं तो कम-से-कम आपको उस काम को करने में आनंद तो आएगा।

नियम 3. मार्केट का एक्सपर्ट

कोई भी, जो आपसे यह कहता हो कि वह मार्केट का एक्सपर्ट है तो वह आपसे झूठ बोल रहा है, क्योंकि ऐसी किसी भी चीज का अस्तित्व नहीं है। ध्यान रखें, छोटे बिजनेस पैसों की कमी के कारण असफल नहीं होते हैं,

बल्कि वे आपके विचारों में अभाव के कारण फेल होते हैं, वे आपके प्रयासों में कमी के कारण फेल होते हैं। मार्केट में जमने के लिए अपने ग्राहकों के साथ ऐसे पेश आएँ, जैसे कि वे आपके अपने हों, क्योंकि ग्राहक ऐसा ही हमारे साथ करते हैं।

नियम 4. डर रास्ते का रोड़ा

डर को अपने रास्ते का रोड़ा न बनने दें। जब आपके पास 10,000 लोग ऐसे हैं, जो एक ही चीज पर कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं तो आपको 10,001 बनने की क्या जरूरत है? बल्कि दुनिया का सबसे बढ़िया बिजनेस बनाने पर ध्यान दीजिए। अगर आप इतने काबिल होंगे तो लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे और अवसर दिखने शुरू हो जाएँगे।

नियम 5. अमीर होना अच्छी बात

मुझे उद्यमिता बहुत अच्छी लगती है, क्योंकि यह वो चीज है, जो देश की उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मैं नए-नए रोजगार दे रहा हूँ, मैं भविष्य की आनेवाली पीढ़ियों के लिए एक आधार खड़ा कर रहा हूँ, जो हमें यह संदेश देता है कि 'अमेरिकन ड्रीम्स' जिंदा और अच्छा है। दूसरे क्या कहते हैं, इस बात से कोई मुझे फर्क नहीं पड़ता। अमीर होना अच्छी बात है।

नियम 6. बिजनेस सर्वश्रेष्ठ खेल

प्राय: हर किसी में एक से अधिक कार्यों को लेकर जुनून होता है। हम सभी इसके साथ जन्म लेते हैं। सारा खेल केवल सोचने में नहीं, बल्कि करने में है। मुझे प्रतिस्पर्धा करना पसंद है। मेरे हिसाब से बिजनेस सर्वश्रेष्ठ खेल है, क्योंकि यह हमेशा चलता रहता है और हमेशा कोई-न-कोई मुझे हराने का प्रयास कर रहा होता है।

नियम 7. आप भी ऐसा कर सकते हैं

मैं बड़े-बड़े घरों के चक्कर लगाते देखा करता था और आश्चर्य में पड़ जाता था कि उन्होंने इसे कैसे हासिल किया! मुझे सफल बिजनेसमैनों की जीवनी पढ़ना बहुत अच्छा लगता था और मैं आश्चर्य में पड़ जाता था कि उन्होंने कैसे इतने ऊँचे मुकाम पा लिये! और तब आपको धीरे-धीरे एहसास होने लगता है कि अगर वे ऐसा कर सकते हैं तो आप भी ऐसा कर सकते हैं।

नियम 8. लक्ष्य का परम ज्ञान

हर असफलता मुझे सफलता के और करीब ले जाती है। सकारात्मक सोच आपको नकारात्मक सोच की तुलना में हर चीज बेहतर ढंग से करने देगी। कामयाबी तब मिलती है, जब अवसर का तैयारी से मेल हो जाता है। उत्कृष्ट लोगों में एक बात एक समान होती है—लक्ष्य का परम ज्ञान।

नियम 9. तुम्हें आगे बढ़ना ही होगा

यदि तुम उड़ नहीं सकते तो दौड़ो, यदि तुम दौड़ नहीं सकते तो चलो, यदि तुम चल नहीं सकते तो रेंगो; लेकिन तुम जैसे भी करो, तुम्हें आगे बढ़ना ही होगा। सच्ची अज्ञानता और ज्ञान-बूझकर दिखाई गई अज्ञानता से ज्यादा खतरनाक इस विश्व में कुछ भी नहीं है। आपके बारे में अन्य लोगों की राय को आपकी वास्तविकता न बनने दें। दिशा की कमी, न कि समय की कमी समस्या है। हम सभी का चौबीस घंटे का दिन होता है।

नियम 10. असीमित आशा को कभी नहीं भूलना

हम सभी को अपने जीवन में लगातार आगे बढ़ते रहने की जरूरत है। यहाँ पर विजेता हैं, हारनेवाले लोग हैं और ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अभी तक जीतना नहीं सीखा है। अपनी उपलब्धियों को हासिल करना और अपनी जीत का आनंद लेना ठीक है, लेकिन लंबे समय तक अपनी ख्यातियों का गुणगान करना ठीक नहीं। हमें सीमित निराशा को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन असीमित आशा को कभी नहीं भूलना चाहिए।

निक वुजिसिक

निकोलस जेम्स वुजिसिक एक ऑस्ट्रेलियन प्रेरक वक्ता हैं। 4 दिसंबर, 1982 को ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में जनमे निक वुजिसिक अन्य बच्चों की तरह स्वस्थ थे, लेकिन एक दुर्लभ बीमारी के साथ पैदा होने के कारण उनके दोनों हाथ-पैर नहीं थे। उनके माता-पिता को यह चिंता सताने लगी कि उनका जीवन कैसा होगा? उनके बिना हाथ-पैरवाले बच्चे का भविष्य कैसा होगा? बचपन के शुरुआती दिन बहुत मुश्किल थे। निक वुजिसिक को जीवन और स्कूल में कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ा। वे हमेशा ईश्वर से प्रार्थना करते कि काश, उनको हाथ-पाँव मिल जाएँ! अपनी विकलांगता से वे इतने निराश थे कि 10 वर्ष की उम्र में उन्होंने आत्महत्या करने की कोशिश की, लेकिन फिर एक लेख ने जीवन के प्रति उनका नजरिया पूरी तरह से बदल दिया। उस दिन उन्हें समझ में आ गया कि वे अकेले व्यक्ति नहीं हैं, जो संघर्ष कर रहे हैं। वे चाहें तो अपनी जिंदगी को सामान्य तरीके से जी सकते हैं। धीरे-धीरे पैर की जगह पर निकली हुई उँगलियों और कुछ उपकरणों की मदद से निक ने लिखना और कंप्यूटर पर टाइप करना सीख लिया। 17 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपने प्रार्थना समूह में व्याख्यान देना शुरू कर दिया। 21 वर्ष की उम्र में निक ने एकाउंटिंग व फाइनेंस में ग्रेजुएशन कर लिया और एक प्रेरक वक्ता के रूप में अपना कॅरियर शुरू किया। धीरे-धीरे वे दुनिया में एक ऐसे प्रेरक वक्ता के रूप में पहचाने जाने लगे, जिनका खुद का जीवन अपने आप में एक चमत्कार है। 36 वर्षीय निक वुजिसिक आज न सिर्फ एक सफल प्रेरक वक्ता हैं, बल्कि वे वह सब करते हैं, जो एक सामान्य व्यक्ति करता है। जन्म से ही हाथ-पैर न होने के बावजूद वे गोल्फ व फुटबॉल खेलते हैं, तैरते हैं, स्काइड्राइविंग व सर्फिंग भी करते हैं।

निक वुजिसिक के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जीवन की संभावनाओं पर विश्वास

अंगों के बिना जीवन? या सीमा के बिना जीवन? अगर बिना हाथ-पाँव का आदमी बड़े सपने देख रहा है तो हम क्यों नहीं, हम सभी क्यों नहीं? अपने जीवन की संभावनाओं पर विश्वास के बिना आप कहाँ होंगे? हम में से कोई कहाँ होगा? भविष्य के लिए हमारी आशा हमें गति प्रदान करती है। अपनी जिंदगी को थामें नहीं, ताकि आप पहले हुई ज्यादतियों के बारे में सोचते रह जाएँ।

नियम 2. आगे बढ़ते रहें

अपने जुनून का पीछा करने से कई पुरस्कार मिलेंगे; लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आपका जीवन चुनौतियों या संघर्षों से मुक्त होगा। आगे बढ़ते रहें, क्योंकि क्रिया से संवेग पैदा होता है, जो बदले में अप्रत्याशित अवसर पैदा करता है। ध्यान दें, आप गिरने के जोखिम के बिना खड़े नहीं हो सकते हैं। आपकी जिंदगी खुशहाल है या नहीं, यह आपका अपना चुनाव है।

नियम 3. खुद एक चमत्कार बन जाइए

आप जैसे हैं, वैसे ही बहुत अच्छे हैं। आज की विकलांगता कल का फायदा हो सकता है। आप अपनी हर विकलांगता के लिए, अपनी हर चुनौती को दूर करने के लिए पर्याप्त क्षमताओं से संपन्न होते हैं। आपको अपनी कमी के अनुसार कभी नहीं जीना चाहिए। अगर आपके साथ चमत्कार नहीं हो सकता तो खुद एक चमत्कार बन जाइए। अगर मैं असफल रहता हूँ तो मैं बार-बार कोशिश करता हूँ।

नियम 4. आशा का दामन न छोड़ें

इनसान का साहस जितना हम सोचते हैं, उससे कहीं अधिक बुरी स्थिति को वह हैंडल कर सकता है। कभी-कभी आपको लग सकता है कि बस, आप अपना लक्ष्य पाने ही वाले हैं, लेकिन आप चूक जाते हैं। यह हार मानने का कोई कारण नहीं है। हारता केवल वह है, जो दोबारा प्रयास करने से इनकार कर देता है। कभी भी उसके अनुसार न जिएँ, जो आपके पास नहीं है। जीवन भले ही अभी आपके लिए अच्छा नहीं चल रहा हो, लेकिन जब तक आप यहाँ हैं, जब तक आप आगे बढ़ते हैं, कुछ भी संभव है। आशा का दामन न छोड़ें।

नियम 5. गिरने का जोखिम उठाए बिना

क्या आपने खुद को कभी परिस्थितियों में घिरा पाया है और फिर यह पाया है कि एकमात्र घेरा आपकी अनदेखी थी, आपके साहस की कमी थी या यह न देख पाना था कि आपके पास बेहतर विकल्प थे? खुद को ऐसे सोचें, जैसे कि आप सीढ़ियाँ चढ़ रहे हों। अगले पायदान पर जाने के लिए आपको अपनी पकड़ छोड़नी होगी और आगे की तरफ बढ़ना होगा। चाहे जितनी मुश्किल हो, बढ़ते रहें। गिरने का जोखिम उठाए बिना आप खड़े भी नहीं हो सकते।

नियम 6. जीवन : एक साहसी रोमांच

मैं आपको इस बात को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ कि हो सकता है, अभी जीवन में आपको कोई रास्ता दिखाई न पड़े; लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि यह वहाँ है ही नहीं। जीवन एक साहसी रोमांच है या कुछ भी नहीं है। जीवन में आपके पास एक विकल्प है—कड़वा या बेहतर? बेहतर चुनें, कड़वा भूल जाएँ। जीवन में दो प्रकार के जोखिम हैं—कोशिश करने का खतरा और कोशिश करने का खतरा नहीं।

नियम 7. जितना बड़ा संघर्ष होगा, जीत उतनी ही शानदार होगी

जोखिम, इसका मतलब सिर्फ जिंदगी का हिस्सा नहीं है। यही जिंदगी है। आपके कंफर्ट जोन और सपने के बीच की जगह ही वह स्थान है, जहाँ जीवन घटित होता है। यह एक बड़े तनाव वाली जगह है; लेकिन यही वह जगह है, जहाँ आप खोज पाते हैं कि आप क्या हैं? दर्द—दर्द है। टूटा हुआ—टूटा हुआ है। भय सभी की सबसे बड़ी विकलांगता है और आपको एक व्हीलचेयर में होने से ज्यादा विकलांग करेगा। डर को अकसर झूठे साक्ष्य के रूप में वर्णित किया जाता है। न हम कष्टों की तुलना कर सकते हैं और न ही हमें यह करना चाहिए।

नियम 8. तुरंत एक्शन लेने का निर्णय

आस्था, विश्वास और धारणा होना बहुत अच्छी बात है; लेकिन इनके आधार पर आप जो काम करते हैं, उससे आपकी जिंदगी मापी जाती है। केवल तभी धन्यवाद, जब आप पूरी तरह से संलग्न हों—अपनी सारी ताकत के साथ, अपनी सभी प्रतिभाओं और जुनून के साथ। बदलाव के लिए इच्छा करने से कुछ नहीं बदलेगा, तुरंत एक्शन लेने का निर्णय लेने से सबकुछ बदल जाएगा।

नियम 9. नकारात्मक विचार, सकारात्मक परिणाम

जब आप केवल चीजों में खुशियाँ ढूँढ़ते हैं तो वह कभी भी काफी नहीं होता। अपने आसपास देखिए, अपने अंदर झाँकिए। जब आपका आपकी भावनाओं पर नियंत्रण होता है तो नकारात्मक विचार भी सकारात्मक परिणाम उत्पन्न कर सकते हैं। जैसे कि कोई रत्न तराशता और पॉलिश करता है, वैसे ही हम खुद पर काम करना जारी रख सकते हैं और बड़े सपनों के साथ अपनी सीमाओं को तोड़ सकते हैं। बहादुर व्यक्ति वह नहीं है, जो डर महसूस करता है, बल्कि वह है, जो उसे जीतता है।

नियम 10. अपनी मान्यताओं और विश्वास को क्रिया में रखना

यह जिंदगी महान् अनुभवों से भरी हुई है, बस, अगर हम इसे एक मौका दें। लेकिन एक चीज है, जो स्वर्ग जाने से अच्छी है और वह है—कम-से-कम एक और व्यक्ति को अपने साथ जाने के लिए प्रोत्साहित करना। यदि आप इस दुनिया में प्रभाव डालना चाहते हैं तो आपको अपनी मान्यताओं एवं विश्वास को क्रिया में रखना होगा। यदि आपके पास कुछ करने की इच्छा व जुनून है और यह भगवान् की इच्छा के भीतर है तो आप इसे प्राप्त करेंगे। यहाँ तक कि त्रासदी को जीत में बदल सकते हैं।

रॉबर्ट कियोसाकी

रॉबर्ट कियोसाकी एक अमेरिकी लेखक और सफल बिजनेसमैन हैं। वे 'कैश फ्लो बोर्ड' के संस्थापक भी हैं, जो लोगों की व्यक्तिगत पूँजी को संगठित करने के लिए एक मैनेजमेंट टूल है। रॉबर्ट पूरी दुनिया में पैसे कमाने को लेकर अपनी सोच के लिए जाने जाते हैं। रॉबर्ट टोरू कियोसाकी का जन्म 8 अप्रैल, 1947 को हिलो, हवाई, अमेरिका में हुआ। सन् 1965 में स्नातक के बाद रॉबर्ट कियोसाकी ने न्यूयॉर्क में 'यूनाइटेड स्टेट्स मर्चेंट मरीन एकेडमी' जॉइन की और वहाँ से डेक ऑफिसर बनकर निकले। इसके बाद रॉबर्ट के जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव आए। इसके चलते ही रॉबर्ट एक अच्छे प्रेरक वक्ता, सफल निवेशक, महान् लेखक और फाइनेंशियल नॉलेज रखनेवाले व्यक्ति बने। रॉबर्ट ने कई प्रसिद्ध पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'रिच डैड पुअर डैड' सबसे ज्यादा बिकने और पढ़ी जानेवाली पुस्तक है। रॉबर्ट ने दुनिया को फाइनेंसियल फ्रीडम को लेकर एक नई सोच दी है। उनका कहना है कि दुनिया में 90 प्रतिशत लोगों की जिंदगी चूहा-दौड़ में फँसकर रह गई है। यह एक ऐसा जाल है, जिसमें लोग जितना कमाते हैं, उतना खर्च भी कर देते हैं और दुनिया का हर व्यक्ति कमाने व खर्च करनेवाले जाल में ही फँसा हुआ है। वह चाहते हुए भी इस जाल से बाहर नहीं आ पाता है। चूहा-दौड़ के इस जाल से निकलकर एक अलग दुनिया के बारे में रॉबर्ट कियोसाकी ने ही लोगों को बताया है, जहाँ किसी को पैसे कमाने के लिए कोई काम नहीं करना पड़ता है। रॉबर्ट की इसी सोच की वजह से लोगों की दुनिया में बदलाव आया है। उनका सबसे अच्छा विचार है कि मध्य वर्ग और गरीब व्यक्ति अपनी पूरी जिंदगी पैसा कमाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं; लेकिन अमीर व्यक्ति अपने पास पैसा रखता है और यही पैसा उसके लिए कड़ी मेहनत करके और अधिक पैसा कमाता है।

रॉबर्ट कियोसाकी के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. संपत्ति आपको अमीर बनाती है

अकसर हम जितना अधिक पैसा कमाते हैं, उतना ही अधिक खर्च कर देते हैं। इसलिए अधिक पैसा आपको अमीर नहीं बनाता, संपत्ति आपको अमीर बनाती है। अगर आप अमीर बनना चाहते हैं तो आपको अपना विजन डेवलप करना होगा। आपको समय के कगार पर खड़े होकर भविष्य में झाँकना होगा। आप अमीर बनना चाहते हैं तो अनुभवसिद्ध नियम है कि आप औरों से सीखें कि अमीर कैसे बना जाता है?

नियम 2. आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना

यदि आप आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहते हैं तो आप आज जो हैं, आपको उससे अलग व्यक्ति बनना होगा और उन चीजों को जाने देना होगा, जो पहले आपको रोकती रही हैं। अगर आप कहीं जाना चाहते हैं तो सबसे

अच्छा है कि आप किसी ऐसे को खोज लें, जो पहले ही वहाँ पहुँच चुका हो। अपनी मौजूदा परिस्थिति के बारे में शिकायत करना बेकार है। इससे अच्छा है कि मजबूत बनें और इसके बारे में कुछ करें।

नियम 3. खुद को बदलना ज्यादा आसान है

अपने खर्चे कम करने से ज्यादा जरूरी है—अपनी आमदनी बढ़ाना। अपने सपनों को कम करने से ज्यादा जरूरी है—अपने साहस को बढ़ाना। अगर आपको यह एहसास हो कि आप ही समस्या हैं, तब आप खुद को बदल सकते हैं, कुछ सीख सकते हैं और बुद्धिमान् बन सकते हैं। अपनी समस्या के लिए दूसरों को दोष मत दीजिए। अधिकतर लोग दुनिया में बाकी सभी लोगों को बदलना चाहते हैं। मैं आपको बता दूँ, बाकी लोगों की तुलना में खुद को बदलना ज्यादा आसान है।

नियम 4. डर और संदेह का सामना करें

अगर आप अभी भी वही कर रहे हैं, जो आपके माता-पिता ने करने को कहा है—स्कूल जाओ, नौकरी पाओ और पैसे बचाओ—तो आप बहुत कुछ लूज कर रहे हैं। अपनी भावनाओं के प्रति सच्चे रहिए और अपने दिमाग एवं भावनाओं को अपने पक्ष में इस्तेमाल करिए, अपने विरोध में नहीं। अपने डर और संदेह का सामना करिए और आपके सामने एक नई दुनिया खुल जाएगी।

नियम 5. सही माइंडसेट, सही शब्द और सही प्लान

अमीर और गरीब की सोच ऐसी होती है—अमीर पहले अपना पैसा निवेश करते हैं और जो बचता है, उसे खर्च करते हैं। गरीब अपने पैसे को पहले खर्च करते हैं, फिर जो बचता है, उसे निवेश करते हैं। अमीर विलासिता वाली चीजें अंत में खरीदते हैं, जबकि गरीब और मध्य वर्ग पहले विलासितापूर्ण चीजें खरीदना चाहता है। दरअसल, अमीर बनना सही माइंडसेट, सही शब्दों और सही प्लान के साथ शुरू होता है।

नियम 6. गलतियाँ करना और सीखना

असफल लोग असफल होने पर मैदान छोड़ देते हैं। सफल लोग तब तक असफल होते रहते हैं, जब तक वे सफलता हासिल नहीं कर लेते। आपकी सफलता का आकार आपकी इच्छा की शक्ति, आपके सपनों के आकार और मार्ग में आनेवाली हताशा से आप कैसे निपटते हैं, से मापा जाता है। वास्तविक दुनिया में होशियार लोग वे होते हैं, जो गलतियाँ करते हैं और सीखते हैं। स्कूल में होशियार लोग गलतियाँ नहीं करते।

नियम 7. आत्म-संदेह और सुस्ती को चुनौती देना

आज की तेजी से बदलती दुनिया में जो लोग रिस्क नहीं ले रहे हैं, वे ही रिस्क टेकर्स हैं। आपके विकल्प आपके भाग्य का फैसला करते हैं। सही विकल्प के चुनाव में समय लीजिए। यदि आप गलती भी करते हैं तो कोई बात नहीं, उस गलती से सीखिए और उसे दोबारा मत दोहराइए। आपके सामने जो सबसे बड़ी चुनौती है, वह है—अपने आत्म-संदेह और सुस्ती को चुनौती देना। वे आपके आत्म-संदेह और सुस्ती ही हैं, जो आपको परिभाषित व सीमित करते हैं कि आप कौन हैं।

नियम 8. अपने रास्ते से हट जाइए

आप तभी गरीब हैं, जब आप हार मान लेते हैं। सबसे जरूरी चीज है कि आपने कुछ किया। ज्यादातर लोग केवल अमीर बनने की बात करते हैं और सपने देखते हैं। आपने कुछ किया है? आपका भविष्य इससे बनता है कि आपने आज क्या किया, कल नहीं। आप अकसर पाएँगे कि यह आपके माता-पिता, पति या पत्नी या बच्चे नहीं हैं, जो आपको रोक रहे हैं। ये आप खुद हैं। अपने रास्ते से हट जाइए।

नियम 9. कभी जीत, कभी सीख

कभी यह मत कहिए कि आप कोई चीज अफोर्ड नहीं कर सकते। यह गरीब आदमी का नजरिया है। यह पूछो कि इसे कैसे अफोर्ड किया जा सकता है? ऐसे खेल ढूँढ़िए, जिनमें आप जीत सकते हैं और फिर अपना जीवन उसी खेल में लगा दीजिए तथा उसे जीतने के लिए खेलिए। कभी-कभी आप जीतते हैं, कभी-कभी आप सीखते हैं।

नियम 10. 'नहीं कर सकते' की शक्ति

'नहीं कर सकते'—ऐसा सोचना मजबूत लोगों को कमजोर बनाता है, उन्हें अंधा कर देता है, खुश लोगों को दुखी कर देता है, बहादुर लोगों को डरपोक बना देता है, प्रतिभाशाली व्यक्ति से उसकी प्रतिभा छीन लेता है, अमीर लोगों की बेकार सोच का कारण बन जाता है और हमारे अंदर मौजूद उस महान् व्यक्ति की उपलब्धियाँ सीमित कर देता है। अरे, आपको एक जिंदगी मिली है, इसे इस तरह जिएँ कि यह किसी को प्रेरित कर सके।

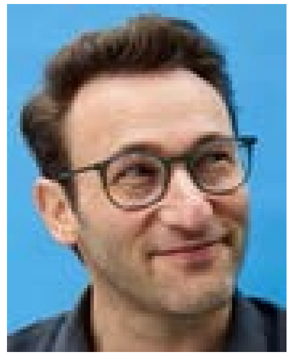

साइमन सिनक

साइमन ओलिवर सिनक ब्रिटिश मूल के एक अमेरिकी प्रेरक वक्ता एवं संगठनात्मक लेखक हैं। साइमन का जन्म विंबल्डन, लंदन, यूनाइटेड किंगडम में 9 अक्तूबर, 1973 को हुआ और संयुक्त राज्य अमेरिका में बसने से पहले उनका समय जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका), लंदन और हांगकांग में बीता। साइमन ओलिवर सिनक एक नेतृत्व गुरु, कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्रोफेसर, 'सिनक पार्टनर्स' (कॉरपोरेट रीफोकसिंग) के संस्थापक और लेखक हैं। उन्होंने कई प्रेरक किताबें लिखी हैं। उन्हें 'गोल्डन सर्कल' और 'स्टार्ट विद व्हाई' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने के लिए जाना जाता है। साइमन सिनक 'रैंड कॉरपोरेशन. के सहायक स्टाफ सदस्य भी हैं। वे दुनिया भर में बड़े सम्मेलनों और कॉरपोरेट समारोहों में शामिल होनेवाले एक सक्रिय वक्ता हैं। इसके अतिरिक्त वे 'द न्यूयॉर्क टाइम्स', 'वॉल स्ट्रीट जर्नल', 'द वाशिंगटन पोस्ट', 'ह्यूस्टन क्रॉनिकल', 'फास्टकॉम', 'सीएमओ मैगजीन', 'एनपीआर' और 'ब्लूमबर्ग बिजनेस वीक' सहित स्थानीय और राष्ट्रीय प्रेस के लिए स्तंभ भी लिखते हैं।

साइमन सिनक के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. कठिन और ताकतवर प्रतियोगिता

अगर आपका काम दूसरे को और अधिक देखने के लिए तथा और अधिक सीखने के लिए, ढेर सारे कामों को करने और बड़े होने के लिए प्रेरित करता है तो आप एक लीडर हैं। एक बात हमेशा मानकर चलना चाहिए कि आपकी प्रतियोगिता उससे कहीं ज्यादा कठिन और ताकतवर है, जितना कि आप अपने आप को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं।

नियम 2. काम के प्रति दृष्टिकोण के लिए काम

आप जो कुछ बनाते हैं, वह स्पष्ट तौर पर यह सिद्ध करता है कि यह आप मानते हैं कि लोग इसे खरीदेंगे, लेकिन आप जो बनाते हैं, लोग उसे नहीं खरीदते; लोग इस बात से खरीदते हैं कि आप उसे क्यों बनाते हैं? आपको हुनर के लिए काम नहीं मिलता, आपको अपने काम के प्रति दृष्टिकोण के लिए काम मिलता है।

नियम 3. कड़ी मेहनत

ऐसी चीज के लिए कड़ी मेहनत करना, जिसे हम करना नहीं चाहते, उसे 'तनाव' या 'चिंता' कहा जाता है। किसी ऐसी चीज के लिए कड़ी मेहनत करना, जिसे हम करना पसंद करते हैं, उसे 'जुनून' कहा जाता है। कभी-कभी किसी ऐसे व्यक्ति के साथ समय बिताना, जिसे लोग सफल कहते हैं, आपको कम सफल महसूस करवा सकता है।

नियम 4. लीडर और लीडरशिप

जो लीडर्स अपने कर्मचारियों से ज्यादा बेहतर परिणाम निकलवाते हैं, वे वही लीडर्स हैं, जो अपने कर्मचारियों का खयाल रखते हैं। लीडर्स नहीं चाहते कि लोग उन्हें पहचानें, बल्कि दूसरों के गुणों को पहचानने के कारण वे बतौर लीडर जाने जाते हैं। लीडरशिप सोचने का एक तरीका है, काम करने का एक तरीका है और उससे भी ज्यादा जरूरी आपसी तालमेल बैठाने का एक तरीका है। लीडरशिप का मतलब आनेवाला चुनाव नहीं है, इसका मतलब आनेवाली पीढ़ियाँ हैं। किसी बेवकूफ लीडर के नेतृत्व में काम करने पर हमें ऐसा लगता है कि हम कंपनी के लिए काम करते हैं। वहीं किसी अच्छे लीडर के नेतृत्व में काम करने पर हमें ऐसा लगता है कि हम एक-दूसरे की मदद के लिए काम करते हैं।

नियम 5. दोस्ती का बंधन संतुलित समीकरण

दोस्ती का मजबूत बंधन हमेशा संतुलित समीकरण की तरह नहीं है। दोस्ती का मतलब यह नहीं है कि हमेशा बराबर की साझेदारी हो। दोस्ती उन विश्वासों पर टिकी होती है, जिनमें आपको साफ-साफ पता होता है कि आपके साथ कौन-कौन होगा—जब जरूरत पड़ेगी, चाहे कुछ भी हो जाए या फिर कोई भी हालात हों।

नियम 6. जीतनेवाले हार से नहीं डरते

जिंदगी में सबसे सफल लोग वे होते हैं, जो सवाल पूछते हैं। वे हमेशा सीखते हैं। वे हमेशा बढ़ते हैं। वे हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। जीतनेवाले हार से नहीं डरते, लेकिन हारनेवाले डरते हैं। असफलता सफलता की प्रक्रिया का हिस्सा है। जो लोग असफलता से बचते हैं, वे सफलता से भी बचे रहते हैं।

नियम 7. दूसरों के लिए कुछ करें

एक व्यक्ति के चरित्र से आप बड़ी आसानी से इस बात को जान सकते हैं कि वह उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है, जो उनके लिए कुछ नहीं कर सकते। यदि आप खुश होना चाहते हैं तो अपने लिए कुछ करें। यदि आप खुद को पूरी तरह से संतुष्टि देना चाहते हैं तो दूसरों के लिए कुछ करें।

नियम 8. जीत या हार के प्रति भावनात्मक रूप से तटस्थ होना

उम्मीद करना आपकी ऊर्जा को बहा देता है। एक्शन लेना एनर्जी पैदा कर देता है। एक उद्यमी होने का मतलब है—बस, एक गलती से दूसरी गलती पर जाना। आपके पास जारी रहने के लिए धैर्य होना चाहिए। विजय प्राप्त करने की रणनीति बनाते समय पराजय को भी उसमें शामिल करना चाहिए। एक सफल व्यवसायी और निवेशक होने के लिए आपको जीत या हार के प्रति भावनात्मक रूप से तटस्थ होना होगा। जीतना और हारना बस, खेल का हिस्सा है।

नियम 9. फोन को मीटिंग्स और भोजन के दौरान दूर रखें

किसी की बात को सुनना और अपनी बात को कहने की कुछ प्रतीक्षा करने में फर्क है। जब हम किसी व्यक्ति के चेहरे से नजर हटाकर अपने फोन को चेक करते हैं तो हम उस व्यक्ति के प्रति अपने भरोसे को कम करते हैं। आइए, अपने फोन को अपनी मीटिंग्स और भोजन के दौरान दूर रखें।

नियम 10. खेल में आएँ

'कल' केवल सपने देखनेवालों और पराजितों के दिमाग में विद्यमान रहता है। लक्ष्य यह नहीं है कि अंत में सबकुछ परफेक्ट हो, बल्कि लक्ष्य यह है कि कल से बेहतर हो। जब समय खराब होता है, तभी असली उद्यमी उभरते हैं। किनारे खड़े होकर आलोचना करना और यह बताना कि आपको कोई चीज क्यों नहीं करनी चाहिए, आसान है। किनारे भीड़ होती है। खेल में आएँ। कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो चीजों को करते हैं; कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो चीजों को होते हुए देखते हैं और कुछ ऐसे लोग होते हैं, जो कहते हैं कि क्या हुआ?

रिचर्ड ब्रैनसन

रिचर्ड चार्ल्स निकोलस ब्रैनसन एक अंग्रेज व्यवसायी, निवेशक, लेखक और परोपकारी व्यक्ति हैं। किशोरावस्था में ही जोखिम लेकर कारोबार शुरू करनेवाले रिचर्ड ब्रैनसन की गिनती आज दुनिया के शीर्ष अमीरों, निवेशकों और चोटी के दानदाताओं में होती है। उन्होंने 'वर्जिन ग्रुप' की स्थापना की, जो 400 से अधिक कंपनियाँ चलाता है।

ब्रैनसन का जन्म 18 जुलाई, 1950 को ब्लैकहार्ट, लंदन में हुआ। बचपन में डिसलेक्सिया की बीमारी से पीड़ित ब्रैनसन पढ़ाई-लिखाई में काफी कमजोर थे। 16 साल की उम्र में उन्होंने स्कूल की पढ़ाई छोड़ दी। स्कूल से विदा होते वक्त ब्रैनसन के हेड मास्टर ने उनसे कहा, "या तो तुम जेल जाओगे या फिर करोड़पति बनोगे।" स्कूल छोड़ने के बाद ब्रैनसन म्यूजिक रिकॉर्ड बेचने के काम में लग गए। इस दौरान वह 'स्टूडेंट' नाम की मैगजीन के लिए भी प्रसिद्ध लोगों का इंटरव्यू करने लगे। एक बार मैगजीन में उन्होंने हिट गानों का विज्ञापन निकाला। वह बेहद हिट हुआ। इसके बाद तो ब्रैनसन ने 'वर्जिन' नाम से रिकॉर्ड बेचने शुरू कर दिए। यहीं से ब्रैनसन और उनकी 'वर्जिन' कंपनी का कारोबारी सफर शुरू हुआ। आज 'वर्जिन ग्रुप' का बिजनेस 30 देशों में फैला है। ग्रुप में 400 कंपनियाँ हैं। इसका कारोबारी साम्राज्य जमीन से लेकर आकाश तक फैला हुआ है और ब्रैनसन की गिनती दुनिया के प्रभावशाली कारोबारियों में होती है। 'फोर्ब्स' मैगजीन के अनुसार, उनकी नेटवर्थ 4.2 अरब डॉलर है।

रिचर्ड ब्रैनसन के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सूझ-बूझ और जज्बात हमेशा मददगार

उद्यमी का मतलब जिंदगी को रोमांचित करनेवाली चीजों से पैसा कमाना है, क्योंकि आप उस काम को बेहतर ढंग से कर सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं। अगर आपको नुकसान हुआ है तो उसे भुलाकर फिर से खड़े हों। ऐसे समय में अगर आपने सबसे ज्यादा मेहनत की है तो आप निश्चित तौर पर आगे बढ़ेंगे। अपने जज्बातों को काम में लगाएँ। आपकी सूझ-बूझ और जज्बात हमेशा आपकी मदद करेंगे।

नियम 2. कारोबार के अवसर बसों की तरह

एक कारोबार महज और लोगों की जिंदगी बेहतर बनाने का एक आइडिया है। आप चाहे जिस कारोबार में हों, हरेक कंपनी अपने तरीके से एक महान् लक्ष्य के लिए प्रयास कर सकती है। कारोबार के अवसर बसों की तरह होते हैं। बसों की तरह वे हमेशा एक के बाद एक आते रहते हैं। सूट पहनकर बात करना या कई कंपनियों का मालिक होना ही कारोबार नहीं है। कारोबार, यानी अपने आइडिया को लेकर सच्चा और जरूरी बातों पर केंद्रित होना है। आप एक बुरे व्यक्ति के साथ अच्छा कारोबार नहीं कर सकते। साथ काम करने के लिए सही व्यक्ति को खोजें तो आप गलत नहीं हो सकते हैं।

नियम 3. गजब का तरीका क्या है?

सुनें, लेकिन काम की बातों को। बाकी चीजें भूल जाएँ। किसी आइडिया को सोचते वक्त उलझन में न पड़ें। आसान और स्पष्ट तरीके से सोचना काफी कठिन होता है। मौका पहले से तैयार दिमाग को मिलता है। आप

जितनी प्रैक्टिस करेंगे, उतने ही खुशनसीब होते जाएँगे। कभी यह न सोचें कि कुछ करने का सबसे सस्ता और तेज तरीका क्या है? यह सोचें कि सबसे गजब का तरीका क्या है? आप अपने जीवन और काम के साथ अपने जुनून के पीछे जाने से महान् कुछ भी नहीं कर सकते, इस तरह से कि वह दुनिया और आपकी सेवा करे।

नियम 4. पूरा जोर लगाइए

किसी भी चीज के बारे में सीखने का सबसे अच्छा तरीका करके सीखना है। अगर आप पहली बार में सफल नहीं होते तो खुद को उठाइए और बार-बार प्रयास करिए। अपनी असफलताओं से शर्मिंदा मत होइए, उनसे सीखिए और फिर से शुरुआत करिए। आप नियम का पालन करके चलना नहीं सीखते। आप चलकर और गिरकर चलना सीखते हैं। चांस लीजिए। यह खुद को टेस्ट करने का सबसे अच्छा तरीका है। आनंद कीजिए और पूरा जोर लगाइए।

नियम 5. लोगों के जीवन को बेहतर बनाना

कारोबार सामान्य आइडिया है, जो लोगों के जीवन को बेहतर बनाता है। कारोबार खड़ा करना कोई रॉकेट साइंस नहीं है, यह एक महान् विचार का होना और उस पर ईमानदारी के साथ अंत तक लगे रहना है। कारोबार में एक चीज पक्की है, आप और आपके आसपास के सभी लोग गलतियाँ करेंगे। कारोबार लॉन्च करने का अर्थ सफलतापूर्वक समस्याओं को हल करना है। समस्याओं को हल करना, मतलब सुनना है।

नियम 6. खुद को चुनौतीपूर्ण रखें

मेरा सबसे बड़ा मोटिवेशन—खुद को चुनौतीपूर्ण रखें। जीवन के प्रति मेरा सामान्य नजरिया—हर दिन के हर मिनट को इंजॉय करना। मैं ऐसे ही किसी भी चीज को 'हे भगवान्, मुझे आज से करना पड़ेगा', इस तरह की सोच से कभी नहीं करता। बचपन से ही मेरी माँ ने मुझे ऐसी शिक्षा दी। मेरी माँ हमें स्वतंत्र बनाने के लिए दृढ़ संकल्प थीं। जब मैं चार साल का था तो वे हमारे घर से कुछ मील दूर ही कार रोक देती थीं और मुझे मैदानों के बीच अपने घर का रास्ता खुद खोजने को छोड़ देती थीं।

नियम 7. सिर्फ पैसा बनाने के लिए कारोबार नहीं

जीवन में मेरी दिलचस्पी अपने लिए बड़ी असंभव-सी लगनेवाली चुनौतियों को स्थापित करने और उनसे ऊपर उठने की कोशिश करने से आती है। मेरे हिसाब से सफलता की परिभाषा, जितना ज्यादा आप सक्रिय व व्यावहारिक रूप से किसी कार्य में शामिल रहेंगे, उतना ही ज्यादा आप सफल हो जाएँगे। जब आप पहली बार किसी आइडिया को लेकर सोच रहे हैं तो जरूरी है कि आप उसकी जटिलताओं में न फँसें। मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मैं कभी भी सिर्फ पैसा बनाने के लिए किसी कारोबार में नहीं गया। अगर यही आपका एकमात्र उद्देश्य है तो मेरा मानना है कि आप बिना कुछ किए ही ठीक हैं।

नियम 8. दुनिया में उड़ने का प्रयास करना

कृपया विनम्र रहिए। जीवन में कुछ भी—लोगों को धन्यवाद देने और प्रशंसा करने की आपकी आदत को—न बदलने पाए। गुब्बारों का एक ही जीवन होता है और यह जानने का एकमात्र तरीका कि वे काम कर रहे हैं या नहीं, दुनिया में उड़ने का प्रयास करना है। अगर आपको सफल होना है तो आपको जोखिम उठाना होगा। अगर आपको एक अवसर मिले और आप उसे लेकर बहुत उत्साहित हों तो आपके पास जो कुछ भी हो, उसके साथ खुद को उसमें झोंक दीजिए।

नियम 9. जरूरत की चीजों पर फोकस करना

भौतिक चीजें मजेदार हैं, परंतु महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। मेरा मानना है कि सफलता और असफलता को बाँटनेवाली एक बड़ी बारीक रेखा है। यह खुद के प्रति ईमानदार होना, अपने आइडिया और जरूरत की चीजों पर फोकस करना है। याद रखिए—आप जैसे हैं, वैसे होना ओ.के. है।

नियम 10. सुनो, बेस्ट लो, बाकी छोड़ो

जिंदगी कहीं ज्यादा मजेदार होगी, अगर आप 'नहीं' की जगह 'हाँ' कहें। जिंदगी में गलतियाँ नहीं होतीं, बस, सीखने के अवसर होते हैं। हर चीज से बढ़कर आप कुछ ऐसा क्रिएट करना चाहते हैं, जिस पर आपको गर्व हो। यह हमेशा मेरे बिजनेस की फिलॉसफी रही है। हर दिन मैं कुछ नया सीख रहा हूँ। सबसे अच्छी सलाह, जो मैं

किसी को दे सकता हूं, वह है—अपना समय उस चीज़ पर काम करते हुए लगाना, जिस किसी चीज को भी लेकर आप जिंदगी में जुनूनी हैं। सुनो, बेस्ट लो, बाकी छोड़ो।

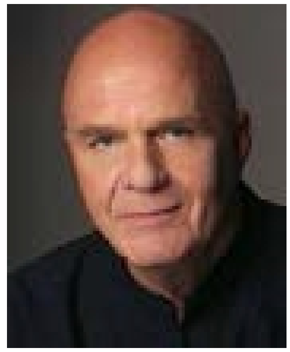

वेन डायर

वेन वाल्टर डायर अमेरिकी स्व-सहायता लेखक और एक प्रेरक वक्ता थे। उनकी पहली पुस्तक 'योर एररोनैस जोन' अब तक की सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तकों में से एक है, जिसकी अब तक लगभग 3.5 करोड़ प्रतियाँ बिक चुकी है। डायर का जन्म डेट्रॉएट, मिशिगन में 10 मई, 1940 को हुआ। वेन डायर को 'आधुनिक स्व-सहायता आंदोलन का जनक' या 'प्रेरणा का पिता' माना जाता था। उनका अधिकांश बचपन अनाथालयों एवं पालना घरों में बीता और यही वह प्रेरणा शक्ति भी थी, जिसने उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। बाद में काउंसलिंग में डिग्री के बाद उन्होंने अपने कॅरियर की शुरुआत काउंसलर गाइड के रूप में की। उनके प्रेरक भाषणों ने बड़ी संख्या में छात्रों को उनकी ओर आकर्षित किया। इसी दौरान उनकी पहली पुस्तक 'योर एररोनैस जोन' प्रकाशित हुई। उन्होंने अपने प्रेरक भाषणों के ऑडियो टेप जारी किए और टॉक शो में टेलीविजन प्रस्तुतियाँ दीं। उन्होंने अपराध-बोध में रहने की निंदा की और आत्म-साक्षात्कार एवं आत्मनिर्भरता पर जोर दिया। 29 अगस्त, 2015 को हृदयाघात से माउ काउंटी, हवाई, अमेरिका में उनका निधन हो गया।

वेन डायर के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. आपके पास वह नहीं है, जो आपके पास नहीं है

दूसरों से प्यार करने के लिए सबसे पहले आपको खुद से प्यार करना चाहिए। यह दर्शन जीवन में सभी चीजों पर लागू होता है। यदि आप पहले खुद की देखभाल नहीं कर रहे हैं तो आप सचमुच दूसरों को वह सब प्रदान करने के लिए सुसज्जित नहीं हैं और दूसरों को प्रदान करना, समस्याओं को हल करना और एक मजबूत चरित्र का होना—सफल जीवन के आधार हैं।

नियम 2. आप जो भी हासिल करते हैं, उसे अपनी पहचान न बनाएँ

आप अपनी उपलब्धियों भर से नहीं हैं। आप इससे बहुत अधिक हैं। आपने जो भी किया है या जो भी कमाया है, उस पर अपनी सफलता का आधार नहीं बना सकते। सच्ची सफलता उससे मिलती है, जो आप हैं, जिस तरह से आप प्यार करते हैं और जो आप देते हैं।

नियम 3. जैसा आप सोचते हैं, वैसे ही आप होते हैं

जैसा सोचेंगे, जिंदगी वैसी हो जाएगी। जब आप इस अवधारणा को अपनाते हैं और अपने मन के प्रति सचेत हो जाते हैं तो आप चुन सकते हैं कि कौन से विचार आपके योग्य हैं और बाकी को अस्वीकार कर देते हैं। जब आप एक सफल जीवन बनाने की दिशा में काम करते हैं तो यह मानसिक युक्ति सबसे महत्त्वपूर्ण है।

नियम 4. खुले विचारोंवाले बनें

अपने विचारों में लचीले रहें। सबकुछ कोई नहीं जानता। एक बार जब आप एक विश्वास पर दृढ़ होते हैं तो आप कठोर हो सकते हैं और इस प्रकार आप अपने जीवन के अनुभव को सीमित कर लेते हैं। खुले रहें, नाराज होने के कारण न तलाशें। सफल लोग हमेशा निर्णय या आलोचना के बिना दूसरों के दृष्टिकोण को देखना पसंद करते हैं।

नियम 5. चीजों को देखने का तरीका बदलें

आपका नजरिया भीतर से आता है। क्या आप दुनिया को शत्रुतापूर्ण स्थान पर रखकर देखना चाहते हैं? या आप एक ऐसी दुनिया देखना चाहते हैं, जो अवसर और प्रेम से भरी हो, आपको जो पसंद हो? आपके द्वारा किया गया चुनाव जीवन में आपकी सफलता को निर्धारित करने में मदद करेगा।

नियम 6. क्या करना है, यह कोई नहीं बताएगा

आत्म-संतुष्ट न बनें। अगर आप दुनिया में प्रभावशाली बनना चाहते हैं और वास्तव में प्रभाव डालना चाहते हैं तो कुछ ऐसा कहें, जो लोगों पर प्रभाव डाले। इसी तरह आप नेतृत्व करते हैं, उपदेश से नहीं।

नियम 7. नाराजगी को ना

अतीत को जकड़े रहने का कोई कारण नहीं है। सफल लोगों के मन में गुस्सा, नाराजगी या नफरत का कोई स्थान नहीं होता। ये भावनाएँ विषाक्त हैं और आपके किसी काम की नहीं हैं। इन्हें छोड़ दें।

नियम 8. बहाने ढूँढ़ना बंद करें

यदि हम मानते हैं कि अतीत में जो चीजें हुई हैं, उनका हमारे भविष्य पर नियंत्रण होता है तो हम असफल होते हैं। आप अपने पिछले हालात पर निर्भर नहीं हैं। आप वे हैं, जो आप बनना चाहते हैं।

नियम 9. दूसरे रास्ते से चलें

एक ही चीज को बार-बार दोहराना और एक अलग परिणाम की उम्मीद करना गलत है। अगर आपके जीवन में कुछ काम नहीं कर रहा है तो एक अलग विकल्प चुनें।

नियम 10. उच्चतम मूल्यों पर डटे रहें

अपने ही ढोल की थाप पर मार्च करने से न डरें। हम सभी के जीवन का एक अनूठा उद्देश्य है। बहादुर बनें, दुनिया को देखने दें। जीवन में आपको जो सबसे अधिक सफलता मिल सकती है, वह आपके दिल की बात का अनुसरण करने और अपने उच्चतम मूल्यों पर डटे रहने से आती है।

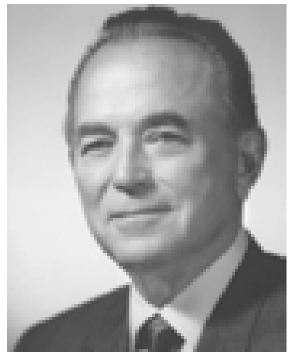

रे क्रोक

रेमंड अल्बर्ट रे क्रोक का जन्म 5 अक्तूबर, 1902 को ओक पार्क, इलिनोइस, संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। वे एक बहुत गरीब परिवार में पैदा हुए और जीवकोपार्जन के लिए बचपन से ही कभी ड्राइवर, सेल्स ब्वॉय, पियानो-वादक, मिल्क शेक बनाने की मशीन बेचने का काम इत्यादि करते हुए बड़े हुए। उनके जीवन में टर्निंग प्वॉइंट तब आया, जब 15 अप्रैल, 1955 को उन्होंने मैकडॉनल्ड्स की फ्रैंचाइजी लेकर डेस्क नामक शहर में अपनी पहली दुकान खोली। हालाँकि मैकडॉनल्ड्स की शुरुआत रिचर्ड और मोरिस मैकडॉनल्ड्स नाम के दो भाइयों ने सन् 1940 में की थी, लेकिन इसे देश-विदेश में फैलाने का श्रेय रे क्रोक को जाता है। बाद में सन् 1961 में रे क्रोक ने पूरा मैकडॉनल्ड्स खरीद लिया और इसे कारोबारी बुलंदी पर पहुँचा दिया। आज मैकडॉनल्ड्स के आउटलेट्स पूरे विश्व में 119 से भी ज्यादा देशों में फैले हुए हैं। यह कंपनी हर दिन करीब 1 करोड़ बर्गर्स देती है और 70,00,000 लोग इसमें डेली विजिट करते हैं। कंपनी का लाभ आज खरबों रुपए में है। 14 जनवरी, 1984 को सैन डिएगो, कैलिफोर्निया में इस महान् कारोबारी की मृत्यु हो गई।

रे क्रोक के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. व्यापक दृष्टि होना

मैकडॉनल्ड्स भाइयों ने केवल एक छोटा सा रेस्त्राँ व्यवसाय का ख्वाब देखा, लेकिन रे क्रोक के दिमाग में बहुत बड़ी योजनाएँ थीं। मैकडॉनल्ड्स क्या बन सकता है, इसके लिए उनके पास एक महान् दृष्टिकोण था। उस दृष्टि के साथ उन्होंने कंपनी के शेयर खरीदने के लिए मैकडॉनल्ड्स भाइयों से बात की। पहले उन्होंने 8 बर्गर रेस्त्राँ खोले, ताकि नकदी का सतत स्रोत बना रहे। आज मैकडॉनल्ड्स दुनिया में सबसे अधिक मान्यता प्राप्त कारोबारों में से एक है। अपनी व्यापक दृष्टि की बदौलत क्रोक दुनिया के सबसे अग्रणी व्यापारिक नेताओं में से एक बन गए। जब अन्य लोग सीमाएँ देखते हैं, एक नेता अवसर और संभावना देखता है।

नियम 2. व्यापार 'काम' पर जा रहे हैं

जब रे क्रोक ने मैकडॉनल्ड्स के लिए फ्रैंचाइजी अधिकार प्राप्त किया तो उन्होंने मैकडॉनल्ड्स के रेस्त्राँ में काम नहीं किया। उन्होंने मैकडॉनल्ड्स के व्यवसाय पर काम किया। क्रोक के लिए पहले मैकडॉनल्ड्स रेस्त्राँ सिर्फ एक मॉडल या प्रोटोटाइप था, जिसे पूरे देश में शहरों और कस्बों में बार-बार पुन: पेश किया जा सकता था। उन्होंने मूल मैकडॉनल्ड्स की खरीद से लेकर खाना पकाने और सफाई तक के प्रत्येक परिचालन कार्य का विश्लेषण स्वयं किया। अवधारणा के सार को बदले बिना उन्होंने शोधन किया और मानकों व प्रक्रियाओं का एक व्यापक सेट विकसित करने के लिए आगे बढ़े, जो 'मैकडॉनल्ड्स का अपना स्वयं का रास्ता' बना।

नियम 3. अवसर पैदा करें

क्रोक जानते थे कि कैसे अपने लिए अवसर पैदा करने हैं। क्रोक ने मैकडॉनल्ड्स भाइयों को अपना व्यवसाय बढ़ाने के लिए प्रेरित करने की कोशिश नहीं की। उन्होंने स्वयं उस अवसर का लाभ उठाया। जैसा कि उन्होंने बाद में एक जीवनी लेखक को बताया—"मुझे मैकडॉनल्ड्स को सबसे बड़ा और सबसे अच्छा बनाने के विचार ने प्रभावित किया गया था।" जो कुछ उनके पास था, उसमें वे संतुष्ट थे। वे जोखिम नहीं लेना चाहते थे। क्रोक ने किसी अन्य की तुलना में बेहतरी से अपने व्यवसाय की देखभाल करके सफलता प्राप्त की।

नियम 4. आप जो करते हैं, उससे प्यार करें

अगर आप सिर्फ पैसे के लिए काम करते हैं तो आप कभी नहीं कमाएँगे; लेकिन अगर आप अपने काम से प्यार करते हैं और हमेशा ग्राहक को सबसे पहले रखते हैं तो सफलता आपकी ही होगी। व्यवसाय इस बारे में होना चाहिए कि आप अपने ग्राहकों को क्या प्रदान कर सकते हैं और आप इसके बारे में कितने भावुक हैं? यदि आप में अपने व्यवसाय और ग्राहकों के लिए जुनून नहीं है तो आपका व्यवसाय मर जाएगा।

नियम 5. जोखिम लेनेवाले बनें

क्रोक के अनुसार, यदि आप जोखिम लेनेवाले नहीं हैं तो आपको व्यवसाय से बाहर निकल जाना चाहिए। क्रोक ने एक छोटा व्यवसाय मॉडल लिया और एक लंबी विस्तार योजना शुरू की, जिसमें परिणाम क्या होगा, इसके बारे में कोई विचार नहीं किया। फास्ट फूड उद्योग तब बहुत शुरुआती दौर में था। क्रोक ने दृढ़ता से अपनी कारोबार यात्रा शुरू की और जोखिम से खेलते हुए वे शीर्ष पर सफल उद्यमी के रूप में उभरे।

नियम 6. अपने व्यवसाय को जानें

अपनी व्यावसायिक योजना में रे क्रोक को पता था कि प्राथमिक व्यवसाय का फोकस हैमबर्गर फ्रैंचाइजी को बेचना था, लेकिन साथ ही वह किस स्थान के लिए बेची जाए, इसका भी ध्यान रखना था। वे जानते थे कि कारोबारी सफलता में स्थान भी महत्त्वपूर्ण कारक होता है। मैकडॉनल्ड्स आज कैथोलिक चर्च की तुलना में अधिक संपत्ति का मालिक है।

नियम 7. अथक काम की आदत

क्रोक को तुरंत सफलता की जल्दी नहीं थी। मैकडॉनल्ड्स को बनाने में उनके धैर्य और प्रयास का एक बड़ा हिस्सा है। क्रोक ने अथक कार्य किया। क्रोक ने अपने प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ने के लिए अपने उत्पाद और सेवाओं की गुणवत्ता में लगातार सुधार करने के लिए काम किया। उन्होंने एक बार कहा था कि कारोबारी दुनिया में कुत्ता ही कुत्ते को खा जाता है। "यदि मेरा कोई प्रतियोगी पानी में डूब रहा होता है तो मैं और पानी चला देता हूँ।"

नियम 8. पूर्णता की छलाँग

इस दुनिया में कुछ भी सही नहीं है, लेकिन रे क्रोक ने यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनके ग्राहकों को हर बार गुणवत्तापूर्ण सेवा प्राप्त हो—चाहे मैकडॉनल्ड्स रेस्त्राँ किसी भी स्थान पर क्यों न हो—सबकुछ किया। जैसे-जैसे मैकडॉनल्ड्स बढ़ते गए, क्रोक को एक ऐसी प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता थी, जो यह सुनिश्चित करे कि हर एक ग्राहक को समान गुणवत्ता वाला भोजन और सेवा प्राप्त हो। इस समस्या को हल करने के लिए क्रोक मैकडॉनल्ड्स असेंबली लाइन पर काम करने लगे। उन्होंने भोजन पकाने, सेवा कार्य, मैकडॉनल्ड्स पैकेजिंग और आइकन कैसे दिखाई देंगे, इनके लिए मानक बनाए।

नियम 9. टीम वर्क सफलता की कुंजी

रे क्रोक समझ गए थे कि टीमवर्क एक सफल व्यवसाय चलाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्वों में से एक है। इससे अकेले रहकर भी एक सफल अंतरराष्ट्रीय समूह चलाया जा सकता है। "हममें से कोई भी सभी रूपों में अच्छा नहीं है।" उन्होंने एक बार कहा था और उनके लिए संयुक्त राज्य अमेरिका एवं फिर विदेशों में अपने छोटे से एक-इकाई रेस्त्राँ का विस्तार करने के लिए कार्यनिष्ठ और समर्पित कर्मचारियों की मदद की आवश्यकता थी। क्रोक ने मैकडॉनल्ड्स के कर्मचारियों को हर स्थान पर सम्मानपूर्वक व्यवहार करने, सभी कर्मचारियों के लिए उचित उपचार और सम्मान स्थापित करने के लिए नियमों का पालन करने को कहा। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि उनके कर्मचारियों को काम करने के लिए एक आरामदायक और उचित वातावरण मिले।

नियम 10. हमेशा जमीन पर रहें

"जब आपके पास धन हो तो सिद्धांतों का होना आसान है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जब आप गरीब होते हैं तो सिद्धांतों का होना आवश्यक है।" रे क्रोक कहते हैं। उनका मानना था कि आपकी अखंडता अटूट होनी चाहिए और यह कि आपके सिद्धांत आपकी परिस्थितियों की परवाह किए बिना बने रहें।

मिशेल ओबामा

मिशेल लावोन रॉबिन्सन ओबामा एक अमेरिकी लेखक, वकील, विश्वविद्यालय प्रशासक और अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा की पत्नी हैं। मिशेल ने सन् 1992 में बराक से शादी की और उनकी दो बेटियाँ हैं। मिशेल का जन्म 17 जनवरी, 1964 को शिकागो में हुआ। उन्होंने प्रिंस्टन विश्वविद्यालय और हार्वर्ड लॉ स्कूल से ग्रेजुएशन किया है। मिशेल फायर ब्रांड लेडी होने के साथ-साथ स्टाइल आइकॉन भी हैं। वे अपने अध्ययन काल में छात्र राजनीति में काफी सक्रिय रहीं और खासतौर पर नस्लभेद को लेकर उनके विचार काफी क्रांतिकारी रहे हैं। अपने बोलने के आक्रामक अंदाज के कारण वे कई बार मुश्किल में फँस चुकी हैं। ओबामा की चुनावी सभा में एक बार उनके मुँह से निकल गया था, “आज जिंदगी में पहली बार मुझे अपने देश पर गर्व हो रहा है।” इस पर आलोचकों ने तुरंत उनकी देशभक्ति पर सवाल उठाने शुरू कर दिए। प्रथम महिला के रूप में मिशेल ओबामा ने महिलाओं के लिए एक रोल मॉडल के रूप में काम किया और गरीबी, शिक्षा, पोषण, शारीरिक व्यायाम एवं पौष्टिक भोजन के प्रति उन्हें जागरूक किया।

मिशेल ओबामा के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. दूसरों से सबक लेने से कभी न चूकें

मिशेल ओबामा के जीवन में विभिन्न पृष्ठभूमियों के कई अद्भुत लोग आए, जिनसे उन्होंने काफी अनुभव अर्जित किए। जब आपके जीवन में बारबरा जॉर्डन और ओपरा विन्फ्रे जैसे रोल मॉडल होते हैं तो आप भविष्य पर अच्छी तरह से ध्यान देते हैं। हालाँकि, भले ही आप किसी भी शानदार सितारे और सेलेब्स को न जानते हों, लेकिन आप इस बात का ध्यान रख सकते हैं कि वे अपने जीवन का संचालन कैसे करते हैं और सफलता को सँभालते हैं। उनके उदाहरण से सबक सीखें और आपको कठिन रास्ता नहीं खोजना होगा।

नियम 2. एक खुशनुमा चेहरा अद्भुत काम करता है

प्रथम महिला एक सकारात्मक विचारक हैं, जो नकारात्मक परिस्थितियों को बहुत अधिक समय तक प्रभावित नहीं होने देने का प्रयास करती हैं। तनाव के क्षणों में भी मुसकराते रहना—उनका सकारात्मक रवैया और संयम—उनके जीवन में जो कुछ भी है, उसके लिए उनकी प्रशंसा और धन्यवाद के चलते उपजा है। मिशेल ओबामा जिस तरह से कृतज्ञता ज्ञापित करती हैं, उसका अनुसरण करके आप हर दिन की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं।

नियम 3. आपकी सफलता आपके अपने आत्मविश्वास एवं कर्म से निर्धारित होती है

मिशेल ओबामा को जीवन में कोई भी चीज मुफ्त में नहीं मिली। उन्हें अपनी शिक्षा प्राप्त करने, विवाह और आत्मविश्वास से भरे बच्चों की परवरिश करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। वे एक मज़बूत परिवार से आईं,

लेकिन उनकी शुरुआत छोटे से हुई। फिर भी, उन्होंने कभी भौतिक चीजों की कमी नहीं होने दी और जीत का रवैया विकसित करना सीख लिया।

नियम 4. आंतरिक घेरा मजबूत रखें

मिशेल ओबामा अपने आंतरिक चक्र के प्रति सावधान हैं। उनके दोस्त जिस गर्मजोशी के साथ उनसे मिलते हैं, मिशेल उसी गर्मजोशी से प्रत्युत्तर देती हैं, जिससे सभी को लाभ होता है। दरअसल, आप जिन लोगों के साथ रहते हैं, वे आमतौर पर आपके स्वयं के मूल्यों को दरशाते हैं। इसलिए उन्हें बुद्धिमानी से चुनें।

नियम 5. योजना आवश्यक है

मिशेल ओबामा के अनुसार, जीवन की बड़ी त्रासदी यह नहीं है कि आप अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाए, बल्कि यह है कि आपके पास पहुँचने के लिए कोई लक्ष्य ही नहीं था। वे लोग, जिनके लक्ष्य स्पष्ट और लिखित होते हैं, वे कम समय—दूसरे लोग जितना सोच भी नहीं सकते, उनसे कहीं ज्यादा सफलता प्राप्त करते हैं। जैसे अपना घर बनाने के लिए हमें एक योजना की जरूरत होती है। वहीं जिंदगी बनाने के लिए तो यह और भी जरूरी हो जाता है कि हमारे पास एक योजना और लक्ष्य हो।

नियम 6. प्रश्नों से भरा होना ठीक है

मिशेल ओबामा बाहरी रूप से आश्वस्त हैं और जब वे अपनी रुचियों एवं महत्त्वाकांक्षाओं के प्रश्नों की बात करती हैं तो वे आश्चर्य से भरी होती हैं। प्रश्न और प्रश्न पूछने की कला शायद सबसे शक्तिशाली तकनीक है। सही प्रश्न पूछना मेधावी बनने का मार्ग है। मूर्खतापूर्ण प्रश्न कोई भी नहीं होते और कोई भी तभी मूर्ख बनता है, जब वह प्रश्न पूछना बंद कर दे। जो प्रश्न पूछता है, वह मिनट भर के लिए मूर्ख बनता है; लेकिन जो नहीं पूछता, वह जीवन भर मूर्ख बना रहता है।

नियम 7. शैक्षिक और पेशेवर साख

अर्जित करने के लिए कड़ी मेहनत

मैंने क्लास कभी मिस नहीं की। मुझे स्मार्ट बनना पसंद था। मुझे समय पर आना पसंद था। मैंने सोचा कि स्मार्ट होना दुनिया की किसी भी चीज से ज्यादा कूल है। आप एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में उत्कृष्टता प्राप्त करने जाते हैं और मिशेल ने अपनी शैक्षिक व पेशेवर साख अर्जित करने के लिए कड़ी मेहनत की। उन्होंने हमेशा अपनी शिक्षा को प्राथमिकता दी, समाजीकरण किया और अपनी बेटियों को भी वे इसी ओर प्रेरित करती हैं। जब आप कड़ी मेहनत करते हैं, चाहे वह स्कूल में हो, काम पर हो या किसी शौक में, वह भविष्य में अच्छा भुगतान करता है।

नियम 8. अपनी प्रवृत्ति से चलें

बुद्धिमानी से स्थितियों को परखने में सक्षम और सक्रिय होना आपको कई परेशानियों से बचा सकता है और यह एक ऐसी चीज है, जिसने मिशेल ओबामा को अपेक्षाकृत जीवन का सहज आनंद लेने में सक्षम बनाया। वे हमेशा वही करने के लिए कृत-संकल्प हो गईं, जो न केवल वे चाहती, बल्कि महसूस करती थीं कि वह सही था। जब वे एक कॉर्पोरेट अटॉर्नी के रूप में काम करती थीं तो वे जानती थीं कि उन्हें उस क्षेत्र में पूर्णता नहीं मिलेगी, इसलिए उन्होंने इस्तीफा दे दिया और सार्वजनिक सेवा में काम करने लगीं। उनकी वृत्ति सही थी और वे कॅरियर एवं जीवन को शानदार तरीके से संतुष्ट करने के लिए आगे बढ़ीं।

नियम 9. पढ़ने की आदत अच्छी

कहा जाता है कि किसी कार्य को 45 दिनों लगातार कर दिया जाए तो वह आदत में बदल जाता है। पढ़ने की आदत एक बहुत अच्छी आदत है। इसे अपनी आदत बनानी चाहिए। मिशेल ओबामा ने हमेशा अच्छी आदतों का अनुसरण किया, जो इनसान को सफल बनाती हैं और बुरी आदतें असफल बनाने में मदद करती हैं। किसी व्यक्ति में एक बुरी आदत पड़ती है तो फिर वह बीज के रूप में बुरी आदतों के वृक्ष को पनपा देती है। आदत के कारण लोग जितने काम करते हैं, उतने विवेक के कारण नहीं करते। समय का सदुपयोग करना एक अच्छी आदत है। यही आदत व्यक्ति को सफल बनाती है।

नियम 10. सोशल मीडिया के प्रति सचेत रहें

सोशल मीडिया की त्रुटियों से बचने की कुंजी है—सोशल मीडिया साइट्स पर कम समय बिताना। यहां मिशेल ओबामा करती हैं। वे सोशल मीडिया साइट्स पर न तो ज्यादा समय बिताती हैं और न ही ओवर-शेयरिंग करती हैं। इससे न केवल उनकी गोपनीयता बनी रहती है, बल्कि छवि को बनाए रखने के लिए भी यह महत्त्वपूर्ण है। चाहे आप एक प्रमुख व्यक्ति हैं या नहीं, सावधानी से इंटरनेट का उपयोग करना एक स्मार्ट कदम है।

अर्ल नाइटिंगेल

अर्ल नाइटिंगेल एक अमेरिकी रेडियो पर्सनैलिटी, लेखक, सम्मानित वक्ता और लेखक थे। उन्हें 'व्यक्तिगत विकास के डीन' के रूप में नामित किया गया। उन्होंने कई रेडियो शो होस्ट किए। अर्ल नाइटिंगेल का जन्म 12 मार्च, 1921 को लॉस एंजेलेस, कैलिफोर्निया में हुआ। 17 साल की उम्र में नाइटिंगेल यूनाइटेड स्टेट्स मरीन कोर में शामिल हुए। वे कैंप लेजेयून, उत्तरी कैरोलिना में एक सैन्य प्रशिक्षक थे और दूसरे विश्व-युद्ध में पर्ल हार्बर पर हमले के दौरान 7 दिसंबर, 1941 की सुबह संयुक्त राज्य अमेरिका के नौसैनिक अड्डे पर्ल हार्बर पर यू.एस.एस. एरिजोना युद्धपोत में सवार थे और उस दिन जीवित रहनेवाले पंद्रह जीवित लोगों में से एक थे। युद्ध के बाद नाइटिंगेल ने रेडियो उद्योग में काम करना शुरू किया, जिसके परिणामस्वरूप अंतत: वे एक प्रेरक वक्ता के रूप में उभरे। अपने जीवनकाल के दौरान उन्होंने 7,000 से अधिक रेडियो कार्यक्रम लिखे और रिकॉर्ड किए। 25 मार्च, 1989 को स्कॉट्सडेल, एरिजोना में दिल की सर्जरी के बाद जटिलताओं के कारण नाइटिंगेल की मृत्यु हो गई।

अर्ल नाइटिंगेल के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. अध्ययन में नियमन

अपने चुने हुए क्षेत्र में अध्ययन के लिए प्रतिदिन एक घंटा पर्याप्त होता है। प्रतिदिन एक घंटा अध्ययन आपको तीन साल के भीतर अपने क्षेत्र के शीर्ष पर ला खड़ा करेगा। पाँच साल के भीतर आप एक राष्ट्रीय हस्ती होंगे। सात वर्षों में आप दुनिया के सबसे अच्छे लोगों में से एक हो सकते हैं, जो आप कर सकते हैं।

नियम 2. कर्म के अनुसार फल मिलता है

चाहने से हमें कुछ प्राप्त नहीं होगा, बल्कि हम जो कुछ भी करते हैं, उसी के अनुसार हमें फल मिलता है। हमारे पुरस्कार हमेशा हमारी सेवा के सटीक अनुपात में होंगे। जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण हमारे प्रति जीवन के दृष्टिकोण को निर्धारित करता है। इसलिए एक स्वस्थ हँसी के साथ अपने दिन की शुरुआत करें। मन हमारे वर्तमान प्रमुख विचारों की दिशा में ही आगे बढ़ता है।

नियम 3. ऊर्जा को अनलॉक करनेवाली कुंजी

ऊर्जा को अनलॉक करनेवाली कुंजी 'इच्छा' है। यह एक लंबे और दिलचस्प जीवन की भी कुंजी है। अगर हम अपने भीतर कोई आंदोलन, कोई असली ताकत बनाने की उम्मीद करते हैं तो हमें उत्साहित होना पड़ेगा। आपकी दुनिया इस बात की एक जीवंत अभिव्यक्ति है कि आप अपने दिमाग का इस्तेमाल कैसे करते हैं?

नियम 4. बुरा रवैया सपाट टायर की तरह

अपने जीवन के हर मिनट का आनंद लेना सीखें। खुश रहें। स्वयं को खुश करने के लिए बाहर की किसी चीज का इंतजार न करें। सोचें कि आपके पास खर्च करने के लिए कितना कीमती समय है, चाहे वह काम के लिए हो या आपके परिवार के लिए। हर मिनट का आनंद और स्वाद लेना चाहिए। एक बुरा रवैया एक सपाट टायर की तरह है। इसे बदले बिना आप कहीं नहीं जा सकते।

नियम 5. मानसिक दृष्टिकोण का निर्माण

हमें सफलता का प्रतीक होना चाहिए। इससे पहले कि वह हमारे पास आए, हमें सफलता हासिल करनी चाहिए। हमें पहले मानसिक रूप से एक दृष्टिकोण बनाना चाहिए कि हम क्या बनना चाहते हैं? अपने मन पर वह तसवीर बना लें कि आपने पहले से ही उस लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, जो आपने तय किया है और जब आप अपने लक्ष्य तक पहुँच जाएँगे तो अपने आप को ऐसा करते हुए देखें।

नियम 6. लक्ष्य वाले लोग सफल

सबकुछ एक विचार के साथ शुरू होता है और सबसे बड़ी गलती जो आप कर सकते हैं, वह यह मानना है कि आप किसी और के लिए काम कर रहे हैं। हम सभी स्व-निर्मित हैं, लेकिन केवल सफल लोग इसे स्वीकार करेंगे। आपको केवल यह जानना है कि आप कहाँ जा रहे हैं? लक्ष्य3वाले लोग सफल होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि वे कहाँ जा रहे हैं। जवाब आपको अपने हिसाब से मिलेंगे।

नियम 7. गंतव्य की ओर कूच करने की हिम्मत

हम वह बन जाते हैं, जो हम ज्यादातर समय सोचते हैं और यह सबसे अजीब रहस्य है। हमारा पर्यावरण, जिस दुनिया में हम रहते हैं और काम करते हैं, वह हमारे दृष्टिकोण और उम्मीदों का दर्पण है। आप सभी की जरूरत है—योजना, रोडमैप और अपने गंतव्य की ओर कूच करने की हिम्मत। रचनात्मकता हमारे उत्साह की अभिव्यक्ति है।

नियम 8. सुंदर व सुगंधित गुलदस्ता

एक महान् रवैया हमारी दुनिया में रोशनी को चालू करने से कहीं अधिक है। यह जादुई रूप से हमें सभी प्रकार के गंभीर अवसरों से जोड़ता है, जो परिवर्तन से पहले किसी तरह अनुपस्थित थे। हमेशा यही सुखद दृष्टिकोण बनाए रखें, मानो आप एक सुंदर व सुगंधित गुलदस्ता धारण कर रहे हैं। हममें से प्रत्येक अपने दृष्टिकोण से बड़े पैमाने पर अपना जीवन बनाता है।

नियम 9. बेशकीमती चीजें मुफ्त

जीवन में जो कुछ भी वास्तव में सार्थक है, वह हमारे लिए मुफ्त में उपलब्ध है—हमारे मन, हमारी आत्माएँ, हमारे शरीर, हमारी आशाएँ, हमारे सपने, हमारी बुद्धिमत्ता, हमारे परिवार और दोस्त तथा देश का प्यार। ये सभी बेशकीमती चीजें मुफ्त हैं। इनकी कद्र करें।

नियम 10. लक्ष्य की ओर यात्रा का आनंद

हम अपने सबसे अच्छे रूप में हैं और हम सबसे खुश हैं। जब हम पूरी तरह से काम में लगे हुए हैं, हम उस लक्ष्य की ओर यात्रा का आनंद लेते हैं, जो हमने अपने लिए स्थापित किया है। यह हमारे समय को अर्थपूर्ण बनाता है और हमारी नींद में हमें आराम देता है। यह जीवन में सबकुछ इतना अद्भुत, इतना सार्थक बनाता है। परवाह मत करो। चलो, इसे करते हैं। मैं हर चीज को एक बार कोशिश करने के लिए तैयार हूँ।

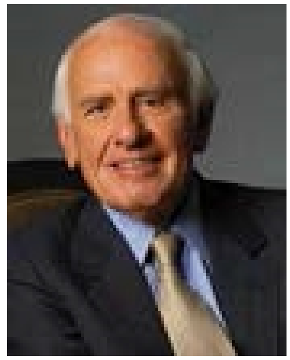

जिम रॉन

एमानुएल जेम्स जिम रॉन एक प्रसिद्ध अमेरिकी उद्यमी, लेखक और प्रेरक वक्ता थे। उनके सफलता के सिद्धांतों को दुनिया में आज भी उच्चतम होने का दर्जा प्राप्त है। उनका दर्शन और शिक्षा आज भी व्यक्तिगत विकास एवं व्यावसायिक दुनिया को बहुत प्रभावित करते हैं। एमानुएल जेम्स जिम रॉन का जन्म 17 सितंबर, 1930 को याकिमा, वाशिंगटन में हुआ। कॉलेज की शुरुआती पढ़ाई के बाद जेम्स ने एक डिपार्टमेंटल स्टोर में नौकरी करके अपने पेशेवर जीवन की शुरुआत की। सन् 1963 में बेवलब हिल्स होटल में जेम्स ने अपना पहला सार्वजनिक व्याख्यान दिया। फिर वे पूरे देश में सेमिनार प्रस्तुत करने लगे और व्यक्तिगत विकास के प्रेरक वक्ता के रूप में उभरे। उन्होंने 40 से अधिक वर्षों तक दुनिया भर में सेमिनार प्रस्तुत किए। 5 दिसंबर, 2009 को कैलिफोर्निया में उनका निधन हो गया।

जिम रॉन के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. साथ चलें

सहयोग प्रमुख है। समुदाय और संख्या में बहुत बड़ी ताकत है। अकेले एक पुरुष या महिला बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं; लेकिन जब समान विचारधारा वाले लोगों का एक छोटा समूह एक साथ आता है तो वे अजेय होते हैं। प्रत्येक अनुभव से शक्ति, साहस और आत्मविश्वास मिलता है, जिससे आपके चेहरे पर डर का आना बंद हो जाता है।

नियम 2. रोमांच लेने में न चूकें

जोखिम लें। यदि आप डर में जीना चुनते हैं तो आप कभी भी उपहारों और अवसरों की पूरी श्रृंखला का अनुभव नहीं करेंगे, जो इस जीवन ने आपको प्रदान किए हैं। अपने दिमाग की उस आवाज को अनदेखा करें, जो कहती है कि यह बहुत जोखिम भरा है। होशियार रहें, गणना करें, लेकिन सतर्क रहें।

नियम 3. खुद पर काम करें

अपनी नौकरी या अपने व्यवसाय सहित किसी भी अन्य चीज की तुलना में आप स्वयं पर अधिक मेहनत करें। आपका व्यक्तिगत भाग्य आपकी क्षमता में निहित है। आप स्वयं जागरूक हों और अपने उन पहलुओं का समायोजन व सुधार करें, जो अभी आपके नियंत्रण में नहीं हैं।

नियम 4. उद्देश्य लेकर चलें

अपना जीवन ऐसे न जिएँ, मानो यह कोई दुर्घटना हो। जिंदा रहने के लिए भावुक बनें! हर दिन जब आप जागते हैं तो यह एक उपहार की तरह है और इस दिन को शानदार बनाना पूरी तरह आप पर निर्भर है। जब आपके पास एक स्पष्ट उद्देश्य होता है तो आप अपनी चुनौतियों में फँस जाते हैं, क्योंकि उद्देश्य आपको खींच लेगा।

नियम 5. खूब सपने देखें

सपने, कल्पना और लक्ष्य वे गुण हैं, जो हमें आगे बढ़ाते हैं। सपने देखना कभी बंद न करें। सपने तभी पूरे होते हैं, जब सपनों को पूरा करने के लिए दिन-रात मेहनत की जाए, वरना सपने देखते-देखते ही जिंदगी गुजर जाती है और कोई भी सपना पूरा नहीं होता है।

नियम 6. कभी हार न मानें

खुद से वादा करें कि आप कभी हार नहीं मानेंगे। कोई अंत नहीं है, केवल छोड़ देने या जारी रखने का विकल्प है। सफलता केवल उन्हीं को मिलती है, जो पीछा नहीं छोड़ते।

नियम 7. खुद पर भरोसा करें

आत्मनिर्भर होने का मतलब यह नहीं है कि आप दूसरों पर बिलकुल भी भरोसा न करें। इसका सीधा सा मतलब है कि आप किसी भी परिस्थिति को सँभालने के लिए खुद की व्यक्तिगत क्षमता पर विश्वास करते हैं, जो कि जीवन आपके सामने प्रस्तुत करता है। अपने जीवन की जिम्मेदारी लें।

नियम 8. लोगों से सीखें

आप सबकुछ नहीं जानते। आपके आसपास के हरेक व्यक्ति के पास कुछ-न-कुछ कौशल या ज्ञान मौजूद है, जो वर्तमान में आपके पास मौजूद नहीं है। दुनिया और इसमें मौजूद लोग जानकारी के एक विशाल भंडार हैं। उनसे सीखें।

नियम 9. कहें, अब बहुत हो चुका है

अंततः जिस दिन आप यह तय करते हैं कि बहुत हो चुका औसत जीवन, अब और नहीं, वही आपके जीवन का सबसे बड़ा दिन हो सकता है। आप जिस दिन यह तय कर लेते हैं कि अब आप अपने सपने से कम का जीवन नहीं जीने वाले, वह निर्णय आपको बहुत शक्तिशाली बना देता है।

नियम 10. स्वयं को अमीर समझें

खराब सोचवाली आदतें आपको गरीब बनाए रखेंगी। आप जितना चाहें, उतना कठिन काम कर सकते हैं; लेकिन यदि आप अभी भी नकारात्मक सोचते हैं तो वही नकारात्मकता आपको वापस मिलेगी। अच्छाई पर ध्यान दें, सकारात्मक रहें! सभी तरीकों से जीवन को खूबसूरत देखने का प्रयास करें, फलतः जीवन आपको अधिक प्रदान करेगा।

□

गैरी वायनेरचुक

गैरी वायनेरचुक एक बेलारूसी अमेरिकी उद्यमी, लेखक और प्रेरक वक्ता हैं। वायनेरचुक का जन्म 14 नवंबर, 1975 को सोवियत संघ (बेलारूस का हिस्सा) में हुआ। वे तीन वर्ष की उम्र में संयुक्त राज्य अमेरिका आ गए। नींबू-पानी की बिक्री से लेकर अरबपति बनने तक की उनकी जीवन-यात्रा औपन्यासिक रहस्य-रोमांच से भरपूर है। उनके प्रखर व प्रेरक विचार लाखों लोगों के प्रेरणा-स्रोत रहे हैं।

गैरी वायनेरचुक के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. अपनी तलवार से वार

वायनेरचुक का कहना है कि किसी और की बजाय खुद अपनी तलवार से मरना बेहतर है। इसे स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि हममें से अधिकतर लोग नौकरी पर 'यस मैन' बन जाते हैं। हम अपने खुद के विचार और रणनीतियों की बजाय वही सब करते चले जाते हैं, जैसा हमारा मालिक हमसे करने को कहता है। गुलामी की इस जंजीर को तोड़ें और काम को उस तरीके से करें, जैसे कि आपको लगता है कि उसे किया जाना चाहिए।

नियम 2. सकारात्मकता ही चुनें

चाहे आप जीत रहे हों या हार रहे हों, आपको नकारात्मकता के मुकाबले सकारात्मकता का चयन करना चाहिए। बहुत से लोग चीजों को काले या सफेद के रूप में देखते हैं और उन्हें यह कतई एहसास नहीं होता कि एक चीज, जिसे वे नियंत्रित कर सकते हैं, वह यह है कि क्या वे चीजों को सकारात्मक देखते हैं या इसके विपरीत? यह एक मानसिकता और एक व्यक्तिगत पसंद है, जिसका चयन हर कोई सहजता से कर सकता है। वायनेरचुक दोहराते हुए कहते हैं कि हमें नकारात्मकता को कम करना चाहिए और सकारात्मकता को बढ़ाना चाहिए।

नियम 3. उन चीजों को बनाएँ, जिन पर आप विश्वास करते हैं

आप जो चीजें बेच रहे हैं, अगर उन पर आपको भरोसा है तो उन्हें बेचना ठीक है। चाहे आप उत्पाद बेच रहे हों या विचारों को बढ़ावा दे रहे हों, आपको वास्तव में विश्वास होना चाहिए कि आप जो भी कर रहे हैं या बेच रहे हैं, वह ठीक है। अगर आप किसी चीज पर विश्वास करते हैं तो आप उसे आसानी से बेच सकते हैं। अगर आपको कुछ करने के लिए अपने आप पर दबाव डालना पड़ता है तो ऐसा कुछ बनाइए और बेचिए, जिसे आप पसंद करते हैं।

नियम 4. फीडबैक प्राप्त करें

उपभोक्ताओं से फीडबैक प्राप्त करने का एक बड़ा फायदा है कि वे आपको अच्छी जानकारी देते हैं कि आपकी सेवाओं से उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है। यह भी पढ़ें कि आपके बारे में और आपके द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं या उत्पादों के बारे में लोगों का क्या कहना है, ताकि आप उनकी धारणाओं को समझ सकें।

नियम 5. आनंदित रहना

आप जो कुछ भी कर रहे हैं, उसमें आपको आनंदित रहना चाहिए। दूसरे शब्दों में, वह आपको अच्छा लगना चाहिए। काम में आनंद लेने से काम की गति में बढ़ोतरी हो जाती है और हँसी-खुशी में काम पूरा हो जाता है।

नियम 6. सौ प्रतिशत उत्तरदायी बनें

जब कोई समस्या पेश आए तो उसके प्रति आपको सौ प्रतिशत उत्तरदायी होने की आवश्यकता है। जब आप यह जानते हों कि कुछ बुरा या गलत हुआ है तो इसके लिए किसी और की ओर उँगली न उठाएँ। अगर उसके लिए आपकी जिम्मेदारी बनती है तो उसे सहर्ष वहन करने के लिए तैयार रहें। जीवन में सफल होने के लिए ऐसा करना बहुत जरूरी है। अपने काम के प्रति दृढ़ रहें और उसके लिए उत्तरदायित्व एवं जिम्मेदारी स्वीकार करें।

नियम 7. अपने सुविधा-क्षेत्र में आराम न करें

अपने उत्पादों या सेवाओं की बिक्री बढ़ाने के लिए इंटरनेट का भरपूर उपयोग करें, वरना आप दौड़ में पिछड़ सकते हैं। यदि आप अपने सुविधा-क्षेत्र में आराम करते रहते हैं और आधुनिक व्यापारिक विक्रय रणनीति के भागीदार नहीं बनते हैं तो कोई और ऐसा करके फायदा उठा लेगा और आप प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जाएँगे।

नियम 8. अपने ग्राहकों को जानें

सबसे महत्त्वपूर्ण बातों में से एक उल्लेखनीय बात यह है कि आप अपने ग्राहकों की बातों को पूरी गंभीरता से सुनें कि आपके उत्पादों या सेवाओं को लेकर वे क्या टिप्पणी करते हैं, उनकी क्या अपेक्षाएँ हैं? इसे ईमानदारी से जानें और उन्हें पूरा करने के लिए आप जो भी कर सकते हैं, अवश्य करें। यदि आप अपने ग्राहकों को नहीं जानेंगे तो अपना भारी नुकसान कर बैठेंगे। विक्रय प्रबंधकों को अपने ग्राहकों के बारे में सच्चे तौर पर फिक्रमंद होना चाहिए और कुछ भी थोपने की कोशिश करने की बजाय उनकी जरूरत के अनुसार चीजें उपलब्ध कराने की ओर ध्यान देना चाहिए।

नियम 9. विजेता की मानसिकता विकसित करें

यदि आप एक विजेता की तरह सोचेंगे तो आप दस में से आठ बार गारंटी से सफल होंगे। आपके आसपास की चीजें चाहे अच्छी तरह से चल रही हों या अच्छी तरह से न चल रही हों, आपको अपना काम सकारात्मक मानसिकता से करते हुए आगे बढ़ना है, चाहे प्राकृतिक आपदा ही आप पर हमला क्यों न कर दे! आप अपने काम में लगे रहें, इससे बेखबर रहकर कि बाहर क्या हो रहा है।

नियम 10. गति बढ़ाएँ

चाहे आप किसी ब्लॉग पर या प्रभावशाली व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हों या एक नया पॉडकास्ट विकसित कर रहे हों, आपको अपनी गति बढ़ाने की आवश्यकता है। व्यावसायिक दौड़ जारी है और यह जो आपा-धापी है, वह एक नवप्रवर्तनकर्ता (इनोवेटर) को लाभ देती है। आपको नियंत्रित अराजकता में सहज रहना सीखना चाहिए। अहंकार और विषय-विकारों को अपने से दूर ही रोक दें और अराजकता की स्थिति में भी नियंत्रित रहकर आगे बढ़ने की योजना बनाएँ; क्योंकि यह वह समय है, जब आप वास्तविक सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

क्रिस गार्डनर

क्रिस्टोफर पॉल गार्डनर एक करोड़पति, सफल उद्यमी, प्रेरक वक्ता और परोपकारी हैं। किसी समय वे बेघर और भुखमरी के शिकार भी रहे हैं। गार्डनर का जन्म मिल्वाउकी, विस्कॉन्सिन, संयुक्त राज्य अमेरिका में 9 फरवरी, 1954 को हुआ। गार्डनर ने जीवन के शीर्ष पर पहुँचने के लिए कड़ी मेहनत की। वे 'गार्डनर रिच एंड कंपनी' के संस्थापक और सी.ई.ओ. हैं।

क्रिस गार्डनर के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. योजना 'ए' के लिए प्रतिबद्धता

हम सभी के पास सपने और लक्ष्य हैं, लेकिन आपकी अपनी योजना क्या है? आपकी योजना जो भी हो, उसे स्पष्ट, संक्षिप्त, आकर्षक और सुसंगत होना चाहिए; साथ ही उसके प्रति सच्ची प्रतिबद्धता भी। जब आप पूरे जुनून के साथ अपनी इस योजना 'ए' के साथ काम करते हैं तो योजना 'बी' की जरूरत ही नहीं रह जाती।

नियम 2. परिवार को पहले रखें

क्रिस गार्डनर का कहना है कि सब कामों में परिवार को पहले स्थान पर रखें। वे कहते हैं कि बैठकों और फोन कॉल्स को पुनर्निर्धारित किया जा सकता है, लेकिन आपके बेटे/बेटी का पहला बेसबॉल गेम हो तो उसमें जरूर शामिल हों, क्योंकि उसे पुनर्निर्धारित नहीं किया जा सकता है। वह जीवन का अभूतपूर्व क्षण होता है। दोनों में से एक को चुनना हो तो मैं परिवार को चुनूँगा।

नियम 3. विश्व स्तरीय होने का फैसला करें

आप जो भी कर रहे हैं, उसमें सर्वोत्तम बनने का प्रयास करें और लगातार सर्वोत्तम बने रहें।

नियम 4. आत्म-सम्मान मूल्यवान् है

अपनी कुल आय के साथ अपने आत्म-सम्मान के मूल्य को लेकर कभी भ्रमित न हों। आपकी कुल आय ऊपर-नीचे हो सकती है, उसमें उतार-चढ़ाव आ सकता है; लेकिन आपका आत्म-सम्मान अस्थिर नहीं होना चाहिए। आपका आत्म-सम्मान अनमोल है। इस पर कभी मोल-भाव या समझौता नहीं किया जाना चाहिए।

नियम 5. अपनी टीम को प्रेरित रखें

आप प्रमुख कर्मचारियों को कैसे प्रेरित करते हैं? आपको उनका सम्मान करना होगा। उन्हें स्वत: आगे बढ़ने दें और उन पर भरोसा करें। उन्हें स्वतंत्र रूप से काम करने दें। आपको उन्हें इस बात के लिए प्रेरित करना होगा कि वे अपने जीवन में कभी भी अधिक पैसा कमा सकते हैं। उनके जुनून और दृढ़ संकल्प को उजागर करके, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करके आप सफलता के लिए अग्रणी व्यक्तिगत विकास की अविश्वसनीय राशि तक पहुँचने में उनकी सहायता कर सकते हैं।

नियम 6. परिवर्तन आवश्यक है

परिवर्तन डरावना होता है। अपनी वर्तमान स्थिति में आप जानते हैं कि आपको क्या मिला है। परिवर्तन की स्थिति में आप नहीं जानते कि आप कहाँ जाकर ठहरेंगे? हालाँकि, परिवर्तन के बारे में दो सच्ची चीजें हैं—व्यक्तिगत विकास के लिए यह बिलकुल जरूरी है और ऐसा होने जा रहा है। या तो आप स्वयं अपने जीवन में परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए समय चुनते हैं या समय और परिवर्तन आपको चुन लेगा।

नियम 7. कदमों की गिनती

जब तक आप आगे बढ़ते रहें, अपना हरेक कदम गिनते रहें। सतत आगे बढ़ते रहें और एक दिन उन कदमों का जोड़ आपको आश्चर्यचकित कर सकता है।

नियम 8. अपने जुनून पर कायम रहें

जिंदगी छोटी है। आप अपने बाकी के जीवन में क्या करने जा रहे हैं? यदि आप ऐसा कुछ कर रहे हैं, जिसके प्रति आप पूरी तरह प्रतिबद्ध नहीं हैं; यदि आप ऐसा कुछ कर रहे हैं, जिसको लेकर आपके मन में जरा भी जुनून नहीं है तो आप हर दिन अपने आप से समझौता कर रहे हैं।

नियम 9. जो लक्ष्य तय करें, वही करें

यदि आपने कोई लक्ष्य बनाया है, यदि आपका कोई सपना है तो इनको सच करने के पीछे लग जाएँ। अपने रास्ते की सारी अड़चनों को दूर कर दें। आप थक सकते हैं, निराश हो सकते हैं, हतोत्साहित हो सकते हैं; लेकिन अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए आप जो कुछ कर सकते हैं, वह करें।

नियम 10. जहाँ हैं, वहीं से आरंभ करें

ऐसे अवसर तलाशें, जहाँ आपके कौशल और प्रतिभा का इस्तेमाल हो सके। ऐसा कुछ ढूँढ़ें, जिसके प्रति आपका जुनून सुनामी भर रहा हो; जिसके लिए आप सुबह होने तक का इंतजार नहीं कर सकते हों। आपको कहाँ से शुरू करना है? ठीक वहाँ से, जहाँ इस समय आप हैं—और अपने जुनून को साकार करने के लिए सभी मददगार आवश्यक कदम उठाएँ।

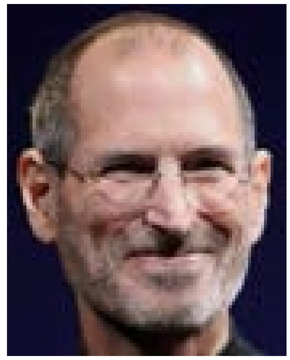

स्टीव जॉब्स

स्टीव जॉब्स का जन्म कैलिफोर्निया के सैन फ्रांसिस्को में 24 फरवरी, 1955 को हुआ। जॉब्स का शुरुआती जीवन बहुत संघर्षमय रहा। वे पढ़ाई के लिए अपने एक दोस्त के यहाँ रहते और वहीं जमीन पर सोते थे। अपने व्यवसाय की शुरुआत उन्होंने अपने पिता के गैरेज से की, जिसे हम सब आज 'ऐप्पल' के नाम से जानते हैं। स्टीव की कड़ी मेहनत और लगन से उनकी कंपनी 2 अरब डॉलर के फायदे के साथ 4,000 कर्मचारियों की एक कंपनी बन गई और इस तरह 'ऐप्पल' के पर्सनल कंप्यूटर बाजार में आए। वर्ष 2007 में ऐप्पल कंपनी ने 'आईफोन' नाम के मोबाइल फोन का निर्माण किया, जो लोगों को बहुत पसंद आया और सफल भी रहा। आज की दुनिया में भी 'आईफोन' एक बहुत बड़ा ब्रांड है। सन् 2003 में उनको पैंनक्रियाटिक कैंसर की बीमारी हो गई और 5 अक्तूबर, 2011 को उनकी मृत्यु हो गई।

स्टीव जॉब्स के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. जुनून ही सबकुछ है

स्टीव जॉब्स कहते हैं, "आप वह करें, जो करना चाहते हैं और उसे प्यार करें। उस काम में लगन और जुनून का होना बहुत जरूरी है। जिन लोगों में जुनून होता है, वे इस दुनिया को बेहतर तरीके से बदल पाते हैं। सलाह देते हुए वे कहते हैं, "अगर मुझे मेरे काम में जुनून नहीं होता तो या तो मैं बस, ब्वॉय के रूप में काम कर रहा होता या कोई छोटी-मोटी नौकरी। मैं आज जो कुछ भी हूँ, अपने जुनून की वजह से हूँ। आपकी सफलता में जुनून ही मायने रखता है। जुनून ही सबकुछ है।"

नियम 2. बड़ी और स्पष्ट दृष्टि

स्टीव जॉब्स कहते हैं, "आपकी दृष्टि ही इस सृष्टि को बदल सकती है।" वह दृष्टि की शक्ति में विश्वास करते थे। एक बार उन्होंने पेप्सी के तत्कालीन अध्यक्ष जॉन स्कूली से पूछा था, "क्या आप अपना जीवन चीनी मिला पानी बेचने में बिताना चाहते हैं या आप दुनिया को बदलना चाहते हैं?" सफलता पाने के लिए आपका विज़न स्पष्ट और बड़ा होना जरूरी है। आपकी बड़ी व स्पष्ट दृष्टि योजना बनाने, लक्ष्यों को प्राप्त करने, निर्णय लेने और मूल्यांकन करने के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका है। छोटी और अस्पष्ट दृष्टिवाले लोग बड़ी सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। आप जो भी करना चाहते हैं, बड़ा सोचें और आगे तक सोचें।

नियम 3. अपने लिए डिजाइन करें

स्टीव जॉब्स कहते हैं, "काम में परफेक्शन होना बहुत जरूरी है। जिस प्रोडक्ट में काम कर रहे हों, दूसरों की राय के शोर को अपनी आंतरिक आवाज से बाहर न जाने दें। आज भी 'ऐप्पल' का हर प्रोडक्ट अपनी क्वालिटी के लिए जाना जाता है। 'ऐप्पल. के प्रोडक्ट में यदि अंदर एक छोटा सा पेंच भी होगा, उसकी क्वालिटी पर भी ध्यान दिया जाता है।" स्टीव जॉब्स कहते हैं, "हो सकता है, वह पेंच यूजर को न दिखाई दे, पर मैं तो उसे देख सकता हूँ।"

नियम 4. बकवास मत बेचो

स्टीव जॉब्स कहते हैं, "गुणवत्ता का मापदंड बनिए। कुछ लोग ऐसे वातावरण के आदी नहीं होते, जहाँ उत्कृष्टता की उम्मीद की जाती है। केवल उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों को बेचें। आप वह प्रोडक्ट बनाएँ या वह सर्विस दें, जिस पर आप गर्व कर सकें। सुनिश्चित करें कि आपका उत्पाद उच्च गुणवत्ता वाला है और यह कुछ ऐसा है, जिसका लोग उपयोग करना पसंद करेंगे।"

नियम 5. मजबूत टीम बनाएँ

जिन लोगों के साथ आप काम करते हैं, वही आपके लक्ष्य को प्राप्त करने में और आपके भविष्य को आकार देने में सहायक होते हैं। यदि आपके साथ काम करनेवाले लोग सकारात्मक और ऊर्जावान् होंगे, जो आपके विजन समझें तो आपका भविष्य उज्ज्वल होगा।

नियम 6. केवल पैसे के लिए ही काम न करें

स्टीव जॉब्स कहते हैं, "आप वह करें, जिसे आप करना पसंद करते हैं और उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ दें। केवल पैसे के लिए काम न करें।"

नियम 7. ग्राहकों को समझें

आपके ग्राहक क्या चाहते हैं, इसको जानने के लिए उत्साहित रहें। ग्राहक ऐसे व्यापारियों पर भरोसा करते हैं, जो उनके बारे में गंभीर और अपने काम की गहरी समझ रखते हैं। अपने ग्राहकों कि वे क्या चाहते हैं और उन्हें क्या परेशानी है, के बारे में अधिक जानने के लिए हर दिन समय निकालें। आपको ग्राहकों का भरोसा जीतना होगा। आपके पास एक ऐसा उत्पाद होना चाहिए, जो ग्राहक चाहते हैं और उसकी आवश्यकता है। ग्राहकों को मालूम है, आप उनकी समस्याओं को हल कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। यदि आप ऐसे नहीं करते तो वे शायद किसी और से खरीदेंगे, जिस पर वे भरोसा करते हैं, भले ही वह पेशकश उतनी अच्छी न हो।

नियम 8. हमेशा लीक से हटकर चलें

स्टीव जॉब्स ने कहा है कि जब कोई सबके साथ नहीं चलता, हमारे मन की बात नहीं करता तो हम तुरंत कह देते हैं, 'यह तो पागल है। छोड़ो इसे, अपना काम करो।' लेकिन जॉब्स इसे साधारण नहीं मानते। जिसे लोग पागल कहते हैं, विद्रोही कहते हैं, संकट पैदा करनेवाला मानते हैं, उसमें वास्तव में कुछ असाधारण है, तभी तो वह आपसे अलग ढंग से बोल रहा है, सोच रहा है या कह रहा है। उसकी बात ध्यान से सुनो। कुछ-न-कुछ तो है। वह आपके लिए मूल्यवान् हो सकता है, क्योंकि ऐसे लोग नियमों की परवाह नहीं करते। उन्हें अपने सम्मान या अहंकार की भी परवाह नहीं होती, क्योंकि वे चीजों को बदलने की क्षमता रखते हैं। वे दौड़ को आगे बढ़ाते हैं। आज वे अकेले हैं, इसलिए पागल कहे जाते हैं। जब दुनिया उनके पीछे होगी, तब वे बुद्धिमान कहे जाएँगे।

नियम 9. अलग तरह से सोचें

यह स्टीव जॉब्स का मूल मंत्र था। इसी मंत्र के भरोसे उन्होंने उद्योगों को बदला, बिजनेस मॉडल को नई परिभाषा दी और टेक्नोलॉजी को आर्ट से जोड़ा। आज लोग उनकी तुलना थॉमस अल्वा एडिसन, वॉल्ट डिज्नी, लियानार्डो द विंची से कर रहे हैं। इस सबके पीछे क्या था? एक अलग तरह की सोच, 'एकला चलो' की नीति और दूसरों के ढेर सारे निर्णयों को बदलते हुए अपनी आत्मा की आवाज के नक्शे-कदम पर चलना।

नियम 10. इंतजार बंद कीजिए, अकेले चलिए

स्टीव कहते थे कि यदि जीतना है, सफल होना है तो अकेले ही चलना होगा। आज तक दुनिया में जितने भी सितारे चमके हैं, सब अकेले ही चले हैं। वे लोगों को प्रोत्साहित करते थे और कहते थे कि किसका इंतजार कर रहे हो? आपको जिताने के लिए कोई नहीं आएगा। आपको खुद जीतना होगा। जिंदगी केवल समय काटने के लिए नहीं है, बल्कि जिंदादिली के साथ जीने के लिए है। जिंदगी घिसटने के लिए नहीं है, बल्कि उड़ान भरने के लिए है। जिंदगी को बोझ मत समझिए, बल्कि मुसकराकर जिएँ। इंतजार मत कीजिए। लग जाइए, अकेले चलिए और इतिहास रच दीजिए। इस अटल सत्य को ऐसे समझना चाहिए कि आपके पास खोने के लिए कुछ नहीं है। सबसे अच्छा तरीका यह याद करना है कि आप मरने जा रहे हैं।

□

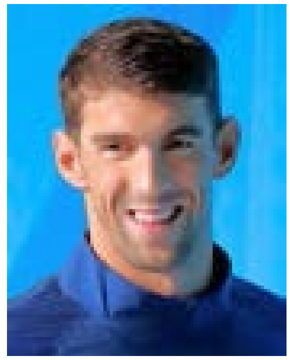

माइकल फेल्प्स

प्रख्यात अमेरिकी तैराक माइकल फेल्प्स का जन्म 30 जून, 1985 को बाल्टिमोर, मेरीलैंड में हुआ। उन्होंने किसी भी ओलंपिक खिलाड़ी की तुलना में सबसे ज्यादा 23 ओलंपिक स्वर्ण पदक सहित कुल 28 पदक (23 स्वर्ण, 3 रजत, 2 कांस्य) जीते हैं। वैसे, अपने कॅरियर में फेल्प्स ने अभी तक कुल 48 पदक जीते हैं—40 स्वर्ण, 6 रजत और 2 कांस्य। इसमें वे सभी प्रतियोगिताएँ शामिल हैं, जिनमें उन्होंने भाग लिया—ओलंपिक, विश्व चैंपियनशिप और अखिल प्रशांत चैंपियनशिप। वर्तमान में उनके नाम तैराकी के सात विश्व कीर्तिमान दर्ज हैं। सबसे ज्यादा लोकप्रियता फेल्प्स को तब मिली, जब उन्होंने बीजिंग में 8 स्वर्ण पदक जीतकर मार्क स्पिट्ज का 36 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा।

गौरतलब है कि एक एथलीट 15 सेकंड की परफॉर्मेंस के लिए 15 साल तक तैयारी करता है। माइकल फेल्प्स कहते हैं कि आज सभी लोग सफल तो होना चाहते हैं, लेकिन कोई भी सफलता की कीमत अदा करना नहीं चाहता। कोई आपको रोक नहीं सकता, लेकिन सफलता अपनी कीमत वसूल करती है। अगर आप वह कीमत चुकाने को तैयार हैं तो एक सुनहरा भविष्य आपका इंतजार कर रहा है और अगर कीमत चुकाने को तैयार नहीं हैं तो कल भी आप वैसे ही होंगे, जैसे आज हैं।

माइकल फेल्प्स के अनुसार, सफलता के दस नियम इस प्रकार हैं—

नियम 1. सबकुछ देकर पूरा प्रयास

मुझे पता था कि मैं किसी भी तरह से असफल नहीं हो सकता और इसलिए सफलता मेरे करीब आ गई। यदि कभी आप असफल होते हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; तब, जबकि आप जी-जान से अपने लक्ष्य का पीछा करते हैं। असफल होने में कोई शर्म नहीं है, जब आप अपना सबकुछ देकर पूरा प्रयास करते हैं। अपने आप से न्याय करें और फिर से काम में लग जाएँ।

नियम 2. सिर्फ लक्ष्य की सोच

जब मैं थका हुआ महसूस करता हूँ तो मैं सिर्फ यह सोचता हूँ कि एक बार अपने लक्ष्य तक पहुँचकर मुझे कितना बेहतरीन महसूस होगा! प्रेरणा अस्थायी है। अनुशासन वह है, जो असाधारण को साधारण से अलग करता है।

नियम 3. रुकावटों के प्रति सकारात्मक सोच

रास्ते में आनेवाली रुकावटें हमेशा बनी रहती हैं, आप बस, सकारात्मक बने रहें। क्या आप जुनूनी हैं? अपने लक्ष्यों को अपना जुनून बनने दें, अगर आप चैंपियन बनना चाहते हैं। अपने जुनून का पता लगाएँ। यदि आप कुछ ऐसा पा सकते हैं, जिससे आप प्यार करते हैं तो आपके लिए काम बहुत आसान हो जाएगा।

नियम 4. कुछ भी असंभव नहीं है

आप जितना बड़ा सपना देख सकते हैं, सपना देखें और कुछ भी संभव है। यदि आप इसे देख सकते हैं तो आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। कुछ भी असंभव नहीं है। मैंने कुछ ऐसा पाया, जो मुझे पसंद है··· और कभी हार नहीं मानी!

नियम 5. सुख-सुविधाओं का त्याग करना

लोग मुझसे कहते हैं, “आप बहुत भाग्यशाली हैं। आपको दुनिया देखने को मिलती है।” लेकिन मैं होटल से पूल के अलावा कहीं नहीं जाता, बस। सफल लोगों को हमेशा भाग्यशाली के रूप में देखा जाता है; लेकिन केवल उन लोगों द्वारा, जो यह नहीं जानते हैं कि यह कर्म के प्रति समर्पित होना है। यदि आप कुछ अच्छा पाना चाहते हैं तो आपको इसे प्राप्त करने के लिए बहुत सारी सुख-सुविधाओं का त्याग करना होगा।

नियम 6. इसी पल में इतनी परिपूर्णता से करें

एक बात, जो सभी सफल लोगों के लिए सामान्य है, वे ऐसे काम करने की आदत डालते हैं, जो असफल लोग करना पसंद नहीं करते। मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं जो कुछ भी कर सकता था, उसे पूरी सक्षमता से किया और मैं सफल रहा। मैं पीछे मुड़कर नहीं देखना और कहना चाहता कि मुझे ऐसा करना चाहिए था या नहीं। इसी पल में इतनी परिपूर्णता से करें कि आपको यह कहना ही न पड़े कि मैं ऐसा कर सकता था या वैसा कर सकता था।

नियम 7. लक्ष्य कभी आसान नहीं होने चाहिए

मुझे लगता है कि लक्ष्य कभी आसान नहीं होने चाहिए। वे इतने कठोर होने चाहिए कि वे आपको सतत काम में लगाए रहें, भले ही वे उस समय कितने ही थकाऊ क्यों न लगें।

नियम 8. सबसे अधिक माँग होने पर विकास

सबसे अधिक विकास सबसे अधिक माँग होने पर होता है। अपने से अधिक और अधिक की माँग करने पर। अपनी तय सीमाओं से परे जाने के लिए अपने आप को धक्का दें और फिर निश्चित ही आप विकास का आसमान छू लेंगे।

नियम 9. प्रशिक्षण, अनुकूलन और अभ्यास

यदि आप प्रशिक्षण, अनुकूलन और अभ्यास के बारे में गंभीर नहीं हैं तो आप अपने सर्वश्रेष्ठ होने के बारे में गंभीर नहीं हैं। मुझे वह आखिरी दिन याद नहीं है, जब मैंने ट्रेनिंग नहीं की हो। यदि आपका तकिया कलाम इसके विपरीत है तो आपके पास करने के लिए और भी बहुत काम हो सकते हैं।

नियम 10. गलतियों से सीख

काम स्वत: ही सही नहीं हो जाते हैं। ऐसा तब होता है, जब आप काम के अनुकूल ढल जाते हैं और गलतियों से सीखते हैं। जीवन पूर्ण नहीं है। हमेशा ऐसी चीजें होती हैं, जो गलत हो जाती हैं। गलतियाँ सीखने का सबसे अच्छा तरीका हैं। आप गलतियों पर ध्यान केंद्रित करने की बजाय इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि उन गलतियों से आप क्या सीख सकते हैं। आप फिर से वही गलती नहीं करेंगे।

□□□